@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

June 2017

Vol.34, Issue 12 Annual Subscription Rs.420

Rotary

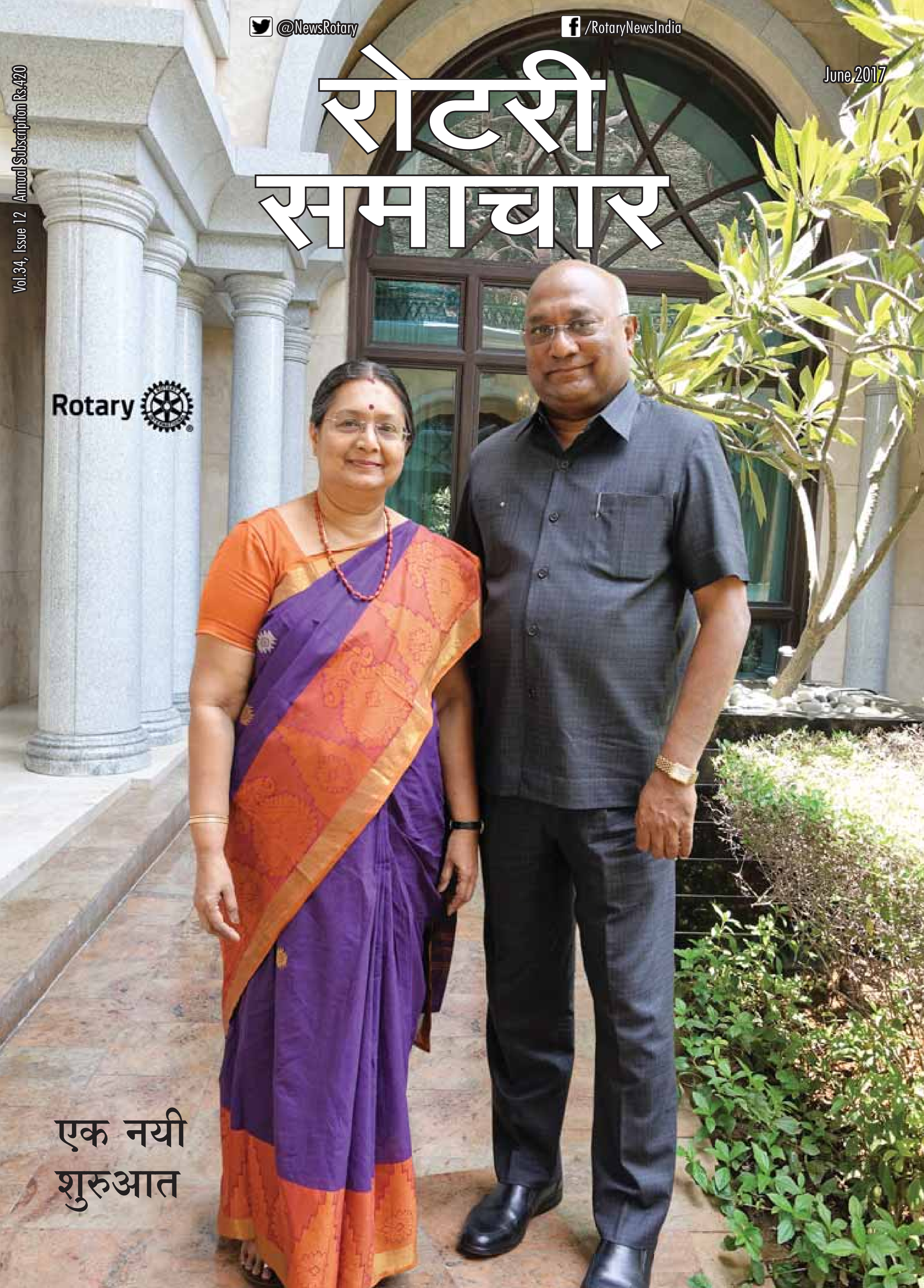

एक नयी शुरुआत

AKS लीग

TRF ने रो ई के हेडक्वार्टर्स, इवान्स्टन, में इस अप्रैल ज़ोन 4, 5 और 6A के AKS सदस्यों की उदारता का उत्सव मनाया। उनके चित्र अब प्रसिद्ध आर्च क्लुम्फ सोसाइटी गैलरी में सजाये गए हैं।

तीनो ज़ोन्स से 13 AKS सदस्य इस वर्ष प्रतिष्ठापित किये गए है, जिससे ज़ोन्स की पूर्ण सदस्य संख्या 58 हो गयी है। दुनिया भर में 728 AKS दाता है।

बाएं से: डीजी नारायण नायक और सुनंदा (मंडल 3262), पुनम और पीडीजी पराग शेठ (मंडल 3060), अमिता और नवदीप चावला (मंडल 3011), डीजी जया शाह (मंडल 3292), पीडीजी सुरेश जैन (मंडल 3011), पीडीजी राजलक्ष्मी और रवि वडलामणी (मंडल 3150), बबीता और डीजीई सुभाष जैन (मंडल 3012), विक्रम कादिरी और विजयंती रेड्डी (मंडल 3150)।

विषयसूची

22 भारतीय रोटेरियनों की गुणवत्तो, कार्यशीलता, सहभागिता को बेहतर बनाना है

टीआरएफ अनुदानों का निरीक्षण करते रहना बेहद ज़रुरी है। और रोटरी की परियोजनाओं को स्थानीय समुदाय की ज़रूरतों पर संकेंद्रण करना होगा, रो इं के आगंता निदेशक सी भास्कर ने कहा।

14 हाज़िर जवाब और ज़िंदादिल

अधिक मानवता कार्य करने के तथा दुनिया में परिवर्तन ले आने, अदभुत सामुदायिक परियोजनायें कार्यांवित करने के बढ़िया अवसरों के रहते हुये रोटरी के लिये एक "बेहद उजले भविष्य" के बारे में रो इं के निर्वाचित अध्यक्ष काफी उम्मीद लिये हैं।

58 आइये, दुनिया को अपने काम की कीमत बतायें

रो ई प्रेसीडेंट इलेक्ट इयान राय्सली ने जयपुर के MDPETS में आने वाले वर्ष के डिस्ट्रिक्ट गवर्नस को सूचनाओं की गणना दो हिस्से में करने का आग्रह किया है।

30 पोलियोप्लस में "प्लस" क्या है?

पोलियोप्लसफ में 'प्लस' उन बीमारियों से भी बचाता है जिनका बचाव टीकाकरण से होता है जैसे डिप्थीरिया, खसरा, काली खाँसी आदि पोलियोप्लस में प्लस के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़िए यह आलेख।

34 पानी को पवर्त पर ले जाना

रोटरी क्लब वाई, वैश्विक अनुदान की मदद से, सह्याद्री पर्वतमाला में एक गांव तक पानी पहुंचा रहा है।

38 बाधायें चूर-चूर हुई

अर्द्धसैनिक बल की भारत की प्रथम महिला प्रमुख अर्चना रामासुन्दरम ने अपने बिंदास साक्षात्कार में पुलिस का मतलब केवल शारीरिक ताकत जैसे कई मिथकों पर किया प्रहार...

50 कारपोरेशन स्कूल के विद्यार्थी जर्मनी की यात्रा पर

रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट की 'विंग्स तो फ्लाई' प्रतियोगिता सरकारी स्कूल के छात्रों को जर्मनी जाने का अवसर दे रही है ।

76 सुपर एजर्स का उदय

आयुर्वृद्धि की खूबसूरत कला।

64 बाँधानी – सुंदर बिंदुओं का जादू

गुजरात के लुभावनी, सुंदर, दस्तकारी वस्त्रों का एक खाता।

कवर पर : निर्वाचित रो ई निदेशक सी भास्कर और पत्नी माला।

चित्र: रशीदा भगत

WinS के युवा राजदूत से प्रेरणा

उत्कृष्ट मई अंक प्रकाशित करने के लिये संपादकीय दल को बधाई हो। इस अंक में *WinS की एक आकर्षक युवा राजदूत* जैसे अनेक प्रेरक लेख हैं, जो अपने गाँव में शौचालय बनवाने में, के. पी. सुचित्रा के प्रयासों को विवरित करता है। *परोपकार मेरे खून में है* शुरू से अंत तक एक मूल्यवान उपहार है। *पालरा में मेरा एक श्री स्टार स्कूल* तथा इतर लेख बढ़िया हैं। सभी प्रेरक कहानियाँ है जो रोटरी की छवि को बेहतर बना देती है।

रशीदा, जयश्री और इतर लेखकों के लेख वाकई पाठकों के दिलों को छू लेते हैं। इस तरह के मूल्यवान रोटरी लेखों को प्रकाशित करने के लिये आपकी टीम को सलाम।

एच एम हरीश,
रोटरी क्लब विजयनगर – मंडल 3181

के पी सुचित्रा के बारे में खबरें (मई अंक का संपादकीय तथा लेख) इस बात की एक जीती जागती और प्रेरक मिसाल है कि किस तरह भारत में बच्चे अपनी वैयक्तिक ताकत का इजहार कर रहे हैं और एक ऐसे युग में कुछ असंभव लक्ष्यों को हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं जहाँ प्रौढ़ों में इस गुण की कमीं देखी जा रही है। इसी तरह से उत्कृष्ट नेताओं का जनन होता है और निश्चित ही सुचित्रा उनमे से एक हैं। इस पहल के लिये उन्हे सलाम करना चाहता हूँ।

अरुण कुमार दाश, रोटरी क्लब
बारीपाडा- मंडल 3262

रोटरी समाचार को वाकई मुकुट का मणि बनाने के लिये आप तथा आपके संपादकीय दल को बधाई देता हूँ। बढ़िया काम किया जा रहा है।

संजय भाटिया, रोटरी क्लब
चंडीगढ़ मिड़टाऊन – मंडल 3080

अप्रैल अंक में RILM चैयर PRID शेखर मेहता द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्य के बारे में पढ़ना बेहद आनंदायक अनुभव साबित हुआ। रोटरी दक्षिण एशिया साक्षरता शिखर सम्मेलन ने साक्षरता के क्षेत्र में मेहता और उनके साथियों द्वारा किये गये काम और उनके भारी प्रयासों की बस एक झलक दिखला दी है। शिखर सम्मेलन में मानव संसाधन विभाग के मंत्री प्रकाश जावडेकर तथा नोबल शाँति पुरस्कार प्रापक कैलाश सत्यार्थी की मौजूदगी, रोटेरियनों द्वारा साक्षरता के क्षेत्र में किये गये काम की सही गवाही है। मैं व्यक्तिगत तौर पर खुश हूँ कि मेरे कालिज के दिनों में, उनके पिता सुमेर चंद मेहता और मैं पडोसी होने के साथ नजदीकी दोस्त भी थें। इस बात से कि मेरे दोस्त का बेटा रोटेरियन की हैसीयत से साक्षरता के क्षेत्र में इतना बढिया काम कर रहा है मेरा दिल खुशी से फूले नहीं समा रहा है।

बी आर अग्रवाल
रोटरी क्लब सिलीगुरी
मिड़टाऊनऊ 3240

अप्रैल अंक में लेख *अपने द्वेष को स्वीकारो* को भरत और शालन सवूर ने बखूबी लिखा है। विषय अच्छा है सो कृपया लेखकों को मेरी ओर से शुक्रिया कहियेगा।

आर के सुदर्शन बाबू
रोटरी क्लब सेंट्रल मुलभगल
मंडल 3190

मातृ एवं बाल स्वास्थ्य पर रोटरी क्लब बेलगाँव की परियोजना ''Reaching the Unreached'' पर लेख *रोटरी क्लीनिक सुरक्षित गर्भधारण सुनिश्चित करता है* (मार्च अंक) के लिये आपका बेहद शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।

हमारे क्लब के लिये यह सम्मान की बात है कि आपने *रोटरी समाचार* जैसी प्रतिष्ठित और व्यापक तौर पर पढी जाने वाली पत्रिका में हमारी परियोजना के बारे में प्रकाशित किया है। इससे हमारा उत्साह बढा है और हम निकट भविष्य में इस तरह की परियोजनायें करने पर प्रेरित किया है।

डॉ सतीष धामणकर, अध्यक्ष,
रोटरी क्लब बेलगाँव – मंडल 3170

एक आकर्षक मुखपृष्ठ

रोटरी समाचार का मई अंक मिला; ट्रस्टी सुशील गुप्ता और उनकी पत्नी विनिताजी की खूबसूरत तथा हार्दिक तस्वीर को मुखपृष्ठ में देखकर दिल खुश हुआ। क्यों कि मैं ट्रस्टी सुशील को तब से जानता हूँ जब उन्हे रो इं के निदेशक के रूप में मनोनित किया गया था, मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि आपने उनकी इंसानीयत के पहलू तथा उनके बहुमुखी व्यक्तित्व को उनके पाश्वचित्रण में एकदम ठीक चित्रित किया है। शाबास रशीदा!

पीडीजी गुलाम ए. वहनवटी
रोटरी क्लब बाँबे – मंडल 3141

पत्रिका की राशी चुकता करें

मई अंक में रो इं निदेशक मनोज देसाई के संदेश *अपनी पत्रिका की बकाया राशि का भुगतान करें* में दिये गये तथ्य और आँकडों को पढने के बाद मैं अचरज में पड गया। यह सच है कि भारत में अनेक समाचार पत्रिकायें आर्थिक संकट का सामना कर रही है और बंद करवा देने की नौबत में है। लेकिन जहाँ तक हमारे *रोटरी समाचार* का सवाल है, हम सच्चे रोटेरियन, जो संपादिका रशीदा भगत और उनकी टीम के उत्कृष्ट काम की सराहना करते नहीं थकते हैं, 4-मार्ग परीक्षण का अनुसरण करें तथा जल्द से जल्द बकाया देय राशि का भुगतान करने का प्रण ले।

पियुश दोशी
रोटरी क्लब बेलूर– मंडल 3291

मई अंक के सभी लेख पढ़ने में दिलचस्प थे। हम दुनिया भर में रोटरी द्वारा किये जा रहे भले काम तथा हजारों लोगों को लाभाँवित करने वाली विभिन्न परियोजनाओं को देखकर दंग रह गये हैं। यह सब उन निष्ठावान रोटेरियनों की वजह से संभव हो सका जो इन परियोजनाओं के लिये उदार दिल से अपना समय और अपनी दौलत दे रहे हैं जिनके रोटरी सफर के बारे में आपने पत्रिका में बढ़िया तरीके से प्रस्तुत किया है। इक्कत और काजू पर लेख दिलचस्प थे। रोटेरियन होने पर मुझे गर्वित महसूस कराने के लिये आपका शुक्रिया।

जया सवानूर
रोटरी क्लब हुबली मिड़टाऊन
मंडल 3170

मई अंक में प्रकाशित सभी लेख अच्छे हैं। खासकर पत्रिका के देय राशि का भुगतान करने का अनुरोध करने वाला, रो इं निदोक मनोज देसाई का संदेश बेहद अहम और रोटेरियनों को दिया गया उल्लेखनीय संदेश है।

देवराजन् के.
रोटरी क्लब कोईंबात्तूर ईस्ट
मंडल 3201

ज्येष्ठ नेताओं की अत्याधिक तस्वीरें

रोटरी समाचार के समीपकालीन अंकों में भारतीय रोटरी नेताओं की तस्वीरें प्रकाशित की जा रही है और इससे यूँ महसूस होता है कि हम किसी क्लब बुलेटीन को पढ़ रहे हैं! अप्रैल अंक में कल्याणदा, राजाजी, सुशीलजी, डॉ मनोज देसाई, शेखरजी, पी टी प्रभाकर तथा भास्कर जैसे नेताओं की तस्वीरें कुछ ज्यादा ही दिखायी दी। हाँ बेशक मुझे इन महान नेताओं से किसी तरह की शिकायत नहीं है जो असल में हमें लगातार प्रेरित करते आ रहे हैं। जाहिर है कि उन्होने संपादकीय दल से अपनी इतनी सारी तस्वीरें प्रकाशित करने के लिये नहीं कहा होगा। ऐसा पहले देखा नहीं गया। यह महज एक आलोचना है शिकायत नहीं।

खैर, किस्मत से इसके सभी बेहतरीन अंश अब भी बरकरार है... लेखों का उत्कृष्ट स्तर और उनकी विविधता अब भी रोटरी समाचार को अंतिम पृष्ठ तक पठनीय बना देती है; इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती! उसके लिये बधाई हो... और सच मानिये मैं इसे दिल से कह रहा हूँ।

डॉ लक्की एस कसाट
भूतपूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब ठाणे हिल्स
मंडल 3142

रोटरी समाचार के पास इसी को लेकर शिकायतें आती है। अप्रैल अंक में ज्येष्ठ नेताओं की इतनी सारी तस्वीरें इसलिये प्रकाशित करनी पडी क्यों कि दो बृहत कार्यक्रमों का एक साथ कव्हेरज किया गया था – एक था **दक्षिण एशियाई साक्षरता सम्मेलन** तथा दूसरा था आगंता मंडलाध्यक्षों के लिये सपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम **दिशा**। और जब हम साक्षरता अभियान के नायकों की तस्वीरें ले रहे थे जिन्हे देश भर में साक्षरता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिये पुरस्कार से सम्मानित किया गया और जब साक्षरता के लिये समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया जा रहा था तब मंच पर अनेक ज्येष्ठ रोटेरियनों को भी आमंत्रित किया गया; सो उनकी तस्वीरें भी प्रकाशित की गयी।

संपादिका

अपने विचार संपादक को भेजें:
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com
पर इ-मेल करें।

कृपया रोटरी समाचार की बकाया राशि का भुगतान करें।

रोटरी का यह वर्ष समाप्त होने में एक माह से भी कम समय बचा है और यह चिन्ता का विषय है कि वर्ष 2016-17 में *रोटरी समाचार* के सदस्यता शुल्क के संग्रहण में कमी आई है। अभी रू40 **लाख की बड़ी राशि बकाया है**। रोटरी इन्टरनेशनल के निदेशक मनोज देसाई ने पत्रिका के पिछले अंक में अपने संदेश में रोटरी क्लबों को अपनी बकाया राशि का भुगतान करने की अपील की हैं।

सभी डिजीयों और क्लब लीडर्स से अनुरोध है कि वे अपने सदस्यों को इस बात की जानकारी दें कि प्रत्येक सदस्य को एक रोटरी पत्रिका का सदस्य बनना अनिवार्य है। भारत में हमें अभी भी ऐसे 20 हजार सदस्यों का इन्तजार है जो बहुत ही चिन्ताजनक है। इस सम्बन्ध में यदि रोटरी इन्टरनेशनल को शिकायत की जाये तो क्लब निलम्बित किये जा सकते है अतः यह सुनिश्चित करें कि क्लब का प्रत्येक सदस्य या तो *The Rotarian* (24) अथवा *रोटरी समाचार* (6.45) का सदस्य बनें।

और हाँ कृपया अपनी पत्रिका की बकाया राशि 1 जुलाई से पूर्व अवश्य चुका दें। उक्त बकाया राशि रू40 लाख के अलावा **हमारे पास रू10 लाख की ऐसी राशि भी है जिसका अभी तक लेखा-पुस्तकों में मिलान (Reconciliation) नहीं हुआ है** क्योंकि कुछ क्लबों ने राशि तो ऑनलाईन जमा करा दी लेकिन उसकी सूचना हमें अभी तक नहीं भेजी है। कृपया यह सूचना भी तुरन्त *rotarynews@rosaonline.org* पर भेजें।

रशीदा भगत

Governors Council

RI Dist 2981	DG	A Mani
RI Dist 2982	DG	T Shanmugasundaram
RI Dist 3000	DG	M Muruganandam
RI Dist 3011	DG	Dr N Subramanian
RI Dist 3012	DG	Sharat Jain
RI Dist 3020	DG	Dr S V S Rao
RI Dist 3030	DG	Mahesh H Mokalkar
RI Dist 3040	DG	Darshan Singh Gandhi
RI Dist 3051	DG	Dinesh Kumar V Thacker
RI Dist 3052	DG	Ramesh Choudhary
RI Dist 3053	DG	Bhupendra Jain
RI Dist 3060	DG	Hitesh Manharlal Jariwala
RI Dist 3070	DG	Dr Sarbjeet Singh
RI Dist 3080	DG	Raman Aneja
RI Dist 3090	DG	Sanjay Gupta
RI Dist 3110	DG	Dr Ravi Mehra
RI Dist 3120	DG	Dr Pramod Kumar
RI Dist 3131	DG	Prashant Deshmukh
RI Dist 3132	DG	Pramod Shashikant Parikh
RI Dist 3141	DG	Gopal Rai Mandhania
RI Dist 3142	DG	Dr Chandrashekhar Kolvekar
RI Dist 3150	DG	Ratna Prabhakar Anne
RI Dist 3160	DG	Sreerama Murthy
RI Dist 3170	DG	Dr Vinaykumar Pai Raikar
RI Dist 3181	DG	Dr R S Nagarjuna
RI Dist 3182	DG	Devarunda Subbegowda Ravi
RI Dist 3190	DG	H R Ananth
RI Dist 3201	DG	Dr Prakash Chandran Arackal
RI Dist 3202	DG	Dr Jayaprakash P Upadhya
RI Dist 3211	DG	Dr John Daniel
RI Dist 3212	DG	Dr K Vijayakumar
RI Dist 3230	DG	Natrajan Nagoji
RI Dist 3240	DG	Dr Rintu Guha Niyogi
RI Dist 3250	DG	Dr R Bharat
RI Dist 3261	DG	Deepak Mehta
RI Dist 3262	DG	Narayan Nayak
RI Dist 3291	DG	Shyamashree Sen

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3140
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3230
RID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RIDE	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2016–17)

DG	M Muruganandam Chair - Governors Council	RI Dist 3000
DG	Shyamashree Sen Secretary - Governors Council	RI Dist 3291
DG	Sarbjeet Singh Secretary - Executive Committee	RI Dist 3070
DG	Natarajan Nagoji Treasurer - Executive Committee	RI Dist 3230
DG	Gopal Rai Mandhania Member - Advisory Committee	RI Dist 3141

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust or Rotary International. No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

पौधा रोपो, क्राँति शुरू करो

जब चेन्नै, पानी की कमीं और 42-43 डिग्री सेलशियस की परेशान कर देने वाली तापमान के बीच दबकर परेशान था और केवल गायब होने के इरादे से ही कभी कभार काले बादल आसमान पर मंडरा रहे थे, अंतर्राष्ट्रीय असेंब्ली (IA) तथा जयपूर में चउझएढड, दोनों में रो इं के आगंता अध्यक्ष इयान राय्सली के संदेश को सुनना एक सुखद अनुभव साबित हुआ जहाँ उन्होने आगंता अध्यक्षों (IA), क्लब के अध्यक्षों व सचिवों (MDPETS) से यह सुनिश्चित करने का निवेदन किया कि 1 जुलाई 2017 से 22 अप्रैल, भू दिवस के बीच प्रत्येक रोटेरियन अपने क्लब में कम से कम एक पेड़ का रोपण करें। ''ऐसा करने से रोटेरियन कम से कम 1.2 मिलियन पेड़ रोपेंगे, शायद ज्यादा भी।''

राय्सली ने कहा कि मंडल 3142 के DGE बी एम शिवराज ने वादा किया है कि उनका मंडल अकेले ही इस रोटरी वर्ष के दौरान 1.2 मिलियन पौधों को रोपेगा। (इस हरित पहल के लिये महाराष्ट्र सरकार के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किया जा रहा है)। वादा तो बढिया है लेकिन सबसे जरुरी बात यह जानना होता है कि रोपे जाने के बाद उन पौधों का क्या होता है, जैसा कि जयपुर में रो इं निदेशक मनोज देसाई ने कहा। ''सालों से हम पौधे रोपते आ रहे हैं; यदि हमने उनकी उचित देखभाल की होती तो अब तक हमारा देश एकदम हराभरा नज़र आता।''

धरती को हराभरा बनाना अच्छी योजना है और इसे दो तरह से किया जा सकता है; हमारे भूग्रह को बचाने पर्यावरण के समर्थकों की लडाई। लेकिन वंचित लोगों की, खासकर शहरी इलाकों में रहने वालों की, समझ में आने वाली बात यह है कि पेड रोपने से फलों और तरकारियों के जरिये लोगों तक सीधे पहुँचा जा सकता है। ग्रामीण भारत पेडों के मोल को बेहतर जानता है क्यों कि आजकल बडी तादाद में किसान, अधिक लाभप्रद बागबानी के क्षेत्र में आने लगे हैं। लेकिन हमारे शहरी जंगलों में, जहाँ पेडों को बेफिक्र होकर, लालच में काट डाला जाता है, ताकि वहाँ इमारतें खडी कर दी जा सके; वहाँ यदि इस हरित पहल के अंतर्गत रोपे गये पेडों में उगे फल/तरकारियाँ, सीधे लोगों को ही दे दी जाये, तो निश्चित ही उन्हे बचाया जा सकेगा।

हम जरा याद कर लें कि मंडल 3131 (2014-15) के डीजी विवेक अरान्हा ने अपनी कार्यावधि के दौरान क्या किया था। उन्होने 1,500 नये सदस्यों को ले आने के अलावा, जो रोटरी संसार के किसी भी मंडल के लिये उच्चतम संख्या है, शहजन की फल्ली क्राँति शुरू कर दी। तमिल नाडु के गाँवों में यह देखने के बाद कि किस तरह महिलाओं में अल्परक्तता की मात्रा को बेहतर बनाने शहजन की फल्ली का उपयोग किया जाता है, जो लौह तत्व का बढिया श्रोत है, उन्होने अपने मंडल के रोटेरियनों को हजारों शहजन के पेड रोपने पर प्रोत्साहित किया। जब 406 सदस्यों के साथ एक नये क्लब, रोटरी क्लब पुणे नेक्स्ट जेन, को चार्टरित किया गया था, उनकी एक बृहत् परियोजना थी मंडल के ग्रामीण तथा शहरी इलाकों में छूट के दर पर 100,000 शहजन के पौधे रोपना। सभी सदस्यों से अपने घरों और पडोसी इलाकों में कम से कम दो पौधे रोपने के लिये कहा गया क्यों कि कुछ सालों में इससे स्थानीय समुदाय के पोषाहार की मात्रा बढ जायेगी। समुदाय को लाभांवित करने का कितना आसान तरीका है यह! और हमारी महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के साथ, इससे धरती माँ से छीने गये संसाधन के छोटे से हिस्से को भी वापिस दे दिया जा सकेगा।

आपको 1970 का ऐतिहासिक चिपको आँदोलन याद होगा जो गढ़वाल हिमालय प्रदेश में बेहद बडे पैमाने पर चल रहा था जब ठेकेदारों को, पेड काटने से रोकने महिलायें पेडों से चिपक कर खडी हुयी थी? चंडी प्रसाद भट्ट तथा सुंदरलाल बहुगुणा जैसे तीव्र पर्यावरणविदों ने, हिमालय प्रदेश में खतरनाक पर्यावरणीय उलझन पैदा करने वाले निर्वनीकरण पर रोक लगाने, सीधी-सादी लेकिन ताकतवाली देहाती महिलाओं को एकत्रित किया। इन जैसे समर्पित धर्मयोध्दाओं के बिना हमने अपनी धरती माँ के साथ कैसा सलूक किया होता? दिल्ली के एक पाँच सितारा होटेल में आयोजित पर्यावरण संबंधित सेमीनार में लंच लेने से इंकार करते हुये, जहाँ वें प्रधान वक्ता थें, उन्होने मुझ से कहा: ''इस तरह के होटेल, जंगलों के कब्रों पर बनवाये गये होते है; यहाँ परोसे गये खाने को मैं पचा नहीं पाऊँगा!''

रशीदा भगत

अध्यक्ष

की ज़बानी

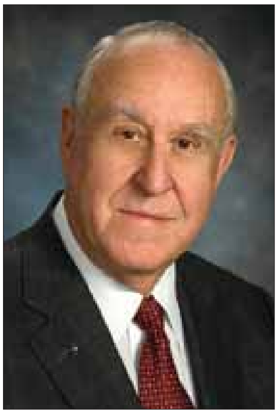

भलाई के लिए काम करने की इच्छा

प्रिय साथी रोटरी सदस्यों,

चट्टानूगा, टेनेसी, में अपने भाइयों के साथ पलते -बढ़ते हुए मैंने कडी मेहनत करने का गुण युवावस्था में सीखा। यह एक ऐसा सबक था जिसे हमारे पिता ने हमें सिखाया था, जो अमेरिका में एक अकेले किशोर के रूप में आए थे। वह चाहते थे कि उनकी कठिन जिंदगी की अपेक्षा हमारा जीवन बेहतर और आसान हो; वह हमें शिक्षा और विकास का अवसर देना चाहते थे जो उन्हें प्राप्त नहीं हो सका था। हम हमेशा यह जानते थे, जब वह पेपर मिल पर रात की पाली में काम करने के बाद सुबह 8 बजे घर आते थे, तो यह कठिन मेहनत वह हमारी भलाई के लिए कर रहे थे।

अतीत की खिड़कियों से अपने पूर्व जीवन को देखने पर, मुझे अपने पिता का कठिन परिश्रम न केवल हमारे प्रति उनके प्रेम की अभिव्यक्ति, बल्कि प्रत्येक पीढ़ी द्वारा अगली पीढ़ी की देखभाल करने और उत्थान की सार्वभौमिक इच्छा के रूप में दिखाई देता है। और रोटरी में इस वर्ष की सेवा पर नजर डालते हुए, मैं देख सकता हूँ कि वह इच्छा हम सभी में प्रतिबिंबित हो रही है, जिन्होंने इस महान संगठन का एक हिस्सा बनने का निर्णय लिया है। माता-पिता के लिए यह स्वभाविक ही हैं कि वे अपने बच्चों के लिए अच्छी से अच्छी सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास करें। रोटरी के माध्यम से हम बहुत अधिक जन-कल्याणकारी कार्यो को निष्पादित कर सकते हैं: हम न केवल अपने बच्चों के लिए, बल्कि सभी बच्चों के लिए बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करा सकते हैं। हमारे पास जरूरतमंद बच्चों के देखभाल करने का अवसर है, जिन्हें देखभाल की सर्वाधिक आवश्यकता होती है - चाहे वे आपके समुदाय में हो या संसार के किसी अन्य भाग में।

रोटरी के लिए विगत दो वर्षों से जुडी और मैंने संपूर्ण संसार की यात्रा की है; और हमें बार-बार स्मरण हुआ कि हमें रोटरी से जुड़े रहने के लिए क्या प्रोत्साहित करता है: मदद करने की सामान्य-सी इच्छा, उन लोगों की सहायता करना जिन्हें मदद की अत्यंत आवश्यकता होती है। चाहे यह कार्य यूगांडा में एक ब्लड बैंक की स्थापना से संबंधित हो, या ग्वाटेमाला के किसी गाँव को एक्स-रे मशीन उपलब्ध कराने या लेबनान के शरणार्थियों की देखभाल करने से संबंधित हो, रोटरियन जरूरतमंदों की सहायता करने के लिए हर संभव सुविधाएं उपलब्ध रहे हैं। वे उन समुदायों के लिए कडी मेहनत कर रहे हैं जिनका वे ख्याल रखते हैं, और उन समुदायों के लोगों को बेहतर जीवन प्रदान करने में मदद कर रहे हैं।

मेरे लिए, यह रोटरी का सार है: सहायता की इच्छा, दूसरों की भलाई के लिए काम करने की इच्छा। रोटरी में, जब किसी को मदद की जरूरत होती है और आप वह सहायता दे सकते हैं, और आप मदद करने से पीछे नहीं हटते है। आप अपना पीठ नहीं दिखाते हैं आप कहते हैं, मैं आपकी मदद के लिए यहाँ हूँ मैं जो कुछ भी कर सकता हूँ मैं करूँगा और मुझे पता है कि जो कुछ मैं करता हूँ, मैं अकेला नहीं कर रहा हूँ - मैं इसे *रोटरी मानवता की सेवा में* के साथ कर रहा हूँ।

जॉन एफ जर्म

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

रो ई निदेशक

का संदेशा

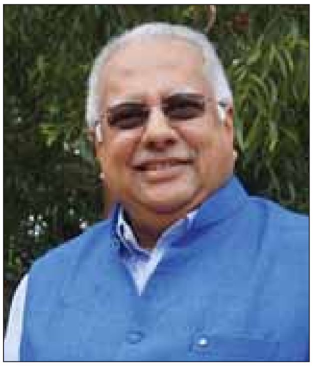

अगली पीढ़ी का स्वागत

प्रिय मित्रों,

हमें 'जेन नेक्स्ट' के लिए तैयार रहना चाहिए। इस पीढ़ी को मोजेक़, मिलेनियल, नेट जनरेशन (एन-जेन), नेविगेटर, वाई-जनरेशन जैसे अनेक नामों से नवाज़ा गया गया हैं।

नेट जनरेशन वर्तमान समय में 81 मिलियन से अधिक युवा लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जो हमारी मौजूदा आबादी का लगभग 30 प्रतिशत है। अगर आपने इस मसले को अभी तक नहीं उठाया है, तो यह समूह बेबी बूमर्स पीढ़ी की तुलना में विशाल है।

हमें उनके लिए तैयार करना होगा क्योंकि अपने आप वे एक शक्ति। तो आइए उनके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करें।

- वे एक ऐसे जगत में बढ.रहे हैं जो एक वृद्ध वयस्कों से उल्लेखनीय रूप से अलग हैं।
- वे अभी भी बहुत युवा हैं
- वे केवल एक ही जर्मनी जानते हैं
- वे अंतरिक्ष शटल को उड्ते हुए देखने को याद करने के लिए बहुत युवा हैं और टियानानमेन स्क्वायर से उन्हें कोई मतलब नहीं है।
- उन्हें *स्टार वार्स* बहुत नकली दिखता है और विशेष प्रभाव दयनीय प्रतीत होता हैं।
- उनका जन्म उस वर्ष हुआ था जब सोनी द्वारा वॉकमेन पेश किया गया था।
- अधिकांश युवाओं ने कभी भी रोटरी डायल फोन नहीं देखा या इस्तेमाल नहीं किया है।

उनके सामान्य रुझान निम्नानुसार हैं:

आत्म-निर्भरता - उनका मानना है कि सफल होना उन पर निर्भर करता है, और वे सहायता के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं करते हैं, लेकिन वे चाहते हैं की उनके साथ आदर का व्यवहार किया जाए।

सशक्त साहसी - वे सोचते हैं और संवादात्मक, गैर-रैखिक तरीकों में सीखते हैं। वे तलाशने, खोज और नेविगेट करने के लिए तत्पर हैं।

परिवार का प्यार- उनमें एक आश्चर्यजनक प्रवृत्ति यह है कि वे जीवन की कठिनाइयों के विरुद्ध अभयारण्य के रूप में अक्सर अपने परिवार पर विश्वास करते हैं। वे अपने माता-पिता को मार्गदर्शन और भावनात्मक समर्थन का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत मानते हैं।

संबंध सर्वोपरि है - वे मित्रों और परिवार के निकटतम व्यक्तिगत नेटवर्क पर दृढ़ता से विश्वास करते हैं। उनके पास अन्य लोगों से जुड्ने की अदम्य इच्छा भी है।

वैश्विक आइकॉन - यह पीढी - ब्रांड वफादारी के रूप में - सभी मार्केटरों के आजमाए हुए और सच्चे सपने को लौटा रही है।

शैक्षिक उपलब्धि - उनका मानना है कि अच्छी शिक्षा सफलता का प्रवेश द्वार है।

विविधता महत्वपूर्ण है - यह पीढी पहले की पीढ़ियों से कही अधिक सभी प्रकार के विविधता में विश्वास करती है। वे समान अधिकारों में दृढ़ता से विश्वास करते हैं वे जानते -समझते हैं कि वे एक तीव्र से विकसित हो रहे बहुसांस्कृतिक संसार में बढ.रहे हैं।

गतिशीलता स्वतंत्रता के बराबर है - यह पीढी सबसे अधिक गतिशील पीढ़ी है। वे घर पर रहने के इच्छुक नहीं है।

सेवा उन्मुख - उनके पास सामान्य रूप से बेहतर और सामूहिक रूप से मजबूत सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारी की भावना है।

उत्कृष्टता की ललक - उनमें आध्यात्मिक की गहरी ललक हैं।

आशा- बच्चों की यह पीढ़ी आशाओं का दामन थाम कर बढ.रही हैं। वे निराशावादी या निंदक नहीं हैं।

उनसे बात करने के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार है:

- उनकी बुद्धि, ज्ञान और क्षमता का सम्मान करें
- यह उसके बारे में है कि आप उनकी दुनिया में कब और कैसे आप फिट होते हैं
- उनसे बात करें, उन्हें पसंद नहीं करें।
- प्रासंगिकता! दिखाएं कि आप उन्हें कैसे मूल्य प्रदान करते हैं
- अपने संदेशों को शीघ्रता और स्पष्टता के साथ व्यक्त करें
- मूल्यों की खोज / जरूरत जारी रहेगी।

मनोज देसाई

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

फाउंडेशन न्यासी

अध्यक्ष का संदेश

फाउंडेशन का भविष्य सुनिश्चित करना

रोटरी फाउंडेशन के विगत 100 वर्षों के दौरान सभी असाधारण उपलब्धियों का उत्सव मनाते हुए हमने एक अद्भुत समय व्यतीत किया है। अब जबकि हम इस शताब्दी वर्ष के अंत की ओर बढ़ रहे हैं, यह हमारे - फाउंडेशन के भविष्य पर ध्यान देने का समय है। हमें अभी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि फाउंडेशन अगले 100 वर्षों में सफलता की नई बुलंदियों को कैसे प्राप्त करें?

सबसे पहले, हमें पोलियो उन्मूलन के अपने कार्य को अवश्य समाप्त करना चाहिए। यदि हम इस कार्य में असफल हो जाते है। तो इस महामारी के वैश्विक वापसी का खतरा उत्पन्न हो जाएगा - और 10 वर्षों के भीतर प्रति वर्ष पोलियो के 200,000 नए मामले सामने आएंगे। परंतु यदि हम सफल होते है। तो संसार 2035 तक लगभग 50 बिलियन राशि की बचत करने में सफल होगा। और यहाँ कोई अन्य विकल्प उपलब्ध नहीं है, इसलिए हमें अवश्य सफल होना चाहिए।

इसमें आप क्या कर सकते है? आप राशि एकत्र कर सकते है, - सरकार से सहयोग प्रदान करने के लिए आग्रह कर सकते है, और पोलियो मुक्त विश्व के लिए रोटरी की दृढ़ प्रतिबद्धता की प्रेरणादायक कहानी को लोगों के साथ साझा कर सकते है। बेशक, हमारे पास लोगों के साथ साझा करने के केवल पोलियो को समाप्त करने की सम्मोहक कहानी ही नहीं है। बल्कि आपको अपने क्लब और वैश्विक अनुदान परियोजनाओं की सफलता की कहानी भी स्थानीय समुदाय और मीडिया के साथ साझा करनी चाहिए। आप जिन विद्वानों को प्रायोजित कर रहे है। वह व्यवसायिक प्रशिक्षण दल जो प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए आपके मंडल से यात्रा कर रही है या दौरा कर रही है, और फाउंडेशन के सहयोग के बारे में भी लोगों को बताएं।

एक बार जब आप लोगों को फाउंडेशन के अनेक उपलब्धियों से प्रभावित करने में सफल होते हैं, तो उनसे - सदस्य, समर्थक, या स्वयंसेवी के रूप में हमारे साथ जुड़ने का आग्रह करें। मेरा मानना है कि प्रत्येक रोटरियन को फाउंडेशन में वार्षिक रूप से योगदान करना चाहिए, क्योंकि यह हमारा - फाउंडेशन है, और अंततः इसकी सफलता के लिए हम जिम्मेदार हैं - यदपि इसका मतलब यह नहीं हैं कि हमें अन्य लोगों को योगदान करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। स्वच्छ पेयजल और आधारभूत शिक्षा उपलब्ध कराने, बीमारियों से लड़ने में मदद करने और शांति को प्रोत्साहित करने की कहानियों के बारे में लोगों के बताने से उनमें हमारे फाउंडेशन और क्लब से जुड़ने की इच्छा जागृत होगी।

यदि आप और हम वर्ष 2017 में फाउंडेशन के 200 वें वर्षगांठ को मनाने के लिए इस धरा पर नहीं रहेंगे, तथापि हमें उसके लिए मंच का निर्माण कार्य अभी से शुरू करना चाहिए - एक साथ मिलकर कार्य करते हुए, हम जनकल्याणकारी कार्यो के फाउंडेशन की लंबी परंपरा को जारी रख सकते हैं और रोटरियनों की अगली पीढ़ी को उत्सव मनाने का और अधिक कारण प्रदान कर सकते हैं।

Kalyan Banerjee

कल्याण बेनर्जी

फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

कैंसर की देखभाल में गुणवत्ता मामले

पूर्व की अपेक्षा अधिक बच्चे कैंसर से जीवित बच रहे हैं। अधिकांश प्रकार के कैंसर पूर्ण रूप से ठीक किए जा सकते हैं किंतु या तो उसके लिए अधिक सुविधाएँ सज्जित नहीं थीं अथवा लोग सजग नहीं थे। कारण भिन्न थे, कुछ मरीज विशिष्ट और कुछ तुच्छ थे। उदाहरण के लिए, अस्पताल तक जाने के लिए धन न होना अथवा यहाँ उनका साथ देने के लिए कोई नहीं, ऐसा नहीं कहा जाना कि बीमारी चार अथवा पाँच मुलाकातों में पूर्ण रूप से ठीक की जा सकती है, इत्यादि।

आँकड़े खुलासा करते हैं कि प्रत्येक वर्ष हमारे राज्य में लगभग 6000 से 8000 बच्चों में कैंसर की पहचान होती है। हमारे राज्य में ठीक होने की समग्र दर का आकलन 10% किया जाता है जब विश्वव्यापी मानक 90% से तुलना की जाती है।

उन बच्चों में से 40% BPL से संबंध रखते हैं। कैंसर का उपचार बहुत महँगा है और इन लोगों के लिए वहनीयता के परे है, जिसका परिणाम मृत्यु होता है। वंचित वर्ग के बच्चों के पास कोई साधन अथवा वित्तीय सहायता नहीं होती है। बसावर्तकम इंडो अमेरिकन कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट (BIACHRI) आप जैसे संरक्षकों के उदार दानों के माध्यम से निशुल्क उपचार प्रदान करने के पदों में ऐसे लोगों की सहातया करता है। उपचार में आवश्यकता के आधार पर कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी और सर्जरी सम्मिलित होती है।

हम कैंसर से लडने वाले बच्चों की देखभाल को सुधारने के लिए हमारे प्रयास में आपकी उदार सहायता की वास्तव में प्रशंसा करते हैं। आपका योगदान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अंतर्गत खढ लाभों का पात्र है।

प्राप्त दानों का खाता पृथक रूप से रखा जाता है और उल्लेखित उद्देश्य के लिए न्यायपूर्वक खर्च किया जाता है

हम ₹50,000 और अधिक के दानदाताओं को स्वयं और दंपत्ति के लिए एक प्रशंसात्मक कैंसर चेक, ₹25,000/- और अधिक के दानदाताओं को स्वयं के लिए एक प्रशंसात्मक कैंसर चेक और ₹10,000/- हम स्वयं के लिए कैंसर जाँच पर 10% छूट प्रदान कर रहे हैं।

समय निर्धारण के लिए कृपया संपर्क कीजिए +91 95537 98500, +91 98493 98879

For those using EFT/ NEFT/ RTGS payment System INR donations to the following Bank Account.

Name of the Account: **Smt. Nandamuri Basavataraka Rama Rao Memorial Cancer Foundation Corpus Fund A/c.**

Bank Account No.: **151411100000070**

Name & Address of the Bank: Andhra Bank, Road No.14, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034

MICR Code No.: 500011118 | IFSC Code No.: ANDB0001514 | SWIFT Code: ANDBINBB

You can also pay Online or with your Credit Card. Visit our **www.induscancer.com**

Please download form from our website and send in duly filled along with your cheque/ DD to the below address

BASAVATARAKAM INDO-AMERICAN CANCER HOSPITAL & RESEARCH INSTITUTE

Dept. of Corporate Affairs and Strategic Alliance

BASAVATARAKAM INDO-AMERICAN
CANCER HOSPITAL AND RESEARCH INSTITUTE

Promoted by Smt. Nandamuri Basavataraka Ramarao Memorial Cancer Foundation and Indo-American Cancer Organisation

Road No. 14, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034 India T: +91 40 2355 1235 Ext. 2315

WINNER 2015
CNBC TV18 & ICICI LOMBARD India Healthcare Awards, 2014
Best Single Speciality Hospital
"ONCOLOGY"

Amongst India's
15 Best Cancer Hospitals
The WEEK-NIELSEN Survey, 2013 & 2014

www.induscancer.com **Toll-free: 1800 4253 6666**

WHERE WILL ROTARY GLOBAL REWARDS TAKE YOU?

THE MEMBER BENEFIT PROGRAMME THAT OPENS UP A WORLD OF OPPORTUNITIES.

Rotary

SEE MORE AT ROTARY.ORG/GLOBALREWARDS

FIND A CLUB

ANYWHERE IN THE WORLD!

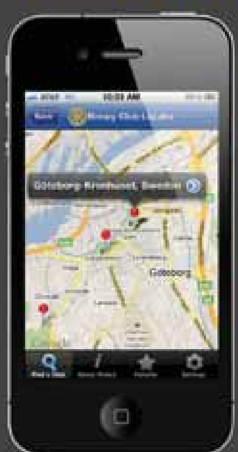

Get Rotary's free Club Locator app and find a meeting wherever you go!

www.rotary.org/clublocator

District Wise TRF Contributions as on April 2017

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus*	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions
			India		
2981	2,01,938	19,394	0	0	2,21,332
2982	34,928	13,948	0	0	48,876
3000	1,94,861	0	69,105	70,382	3,34,348
3011	9,91,052	2,971	3,183	88,373	10,85,579
3012	1,81,975	2,530	72,381	6,000	2,62,887
3020	34,760	12,985	0	1,01,114	1,48,858
3030	(5,129)	0	(1,76,099)	(8,825)	(1,90,053)
3040	1,297	29	27,512	0	28,838
3051	14,662	27	0	0	14,688
3052	(23,407)	0	53,175	0	29,768
3053	2,839	0	0	12,500	15,339
3060	1,05,612	175	26,075	60,373	1,92,234
3070	76,510	1,368	6,191	0	84,070
3080	62,764	22,151	1,38,968	25,833	2,49,716
3090	39,683	0	0	0	39,683
3110	39,402	26,815	53,000	0	1,19,217
3120	37,686	626	30,000	0	68,312
3131	2,88,871	32,865	2,94,198	1,24,955	7,40,888
3132	49,622	3,213	16,877	0	69,711
3141	7,30,514	36,177	3,63,273	25,699	11,55,662
3142	1,47,431	100	5,250	2,000	1,54,781
3150	1,71,414	17,919	1,08,507	97,585	3,95,424
3160	89,557	2,198	3,000	0	94,756
3170	90,637	20,060	21,582	58,735	1,91,015
3181	1,81,191	4,118	27,261	0	2,12,570
3182	74,105	2,476	12,590	35,373	1,24,543
3190	1,27,296	(9,190)	1,73,724	74	2,91,903
3201	61,585	2,964	88,833	0	1,53,382
3202	35,052	1,419	0	15	36,486
3211	85,479	1,015	3,505	18,015	1,08,014
3212	87,880	1,800	49,265	1,000	1,39,945
3230	2,34,660	7,855	91,440	24,525	3,58,480
3240	1,08,506	7,824	0	2,866	1,19,195
3250	20,954	0	722	0	21,676
3261	13,237	100	0	0	13,337
3262	1,24,060	5,608	1,25,508	2,000	2,57,176
3291	1,09,885	2,800	73,765	9,875	1,96,325
India Total	**48,30,441**	**2,44,339**	**17,62,790**	**7,58,467**	**75,96,036**
3220 Sri Lanka	64,674	325	705	11,068	76,773
3271 Pakistan	74,011	1,16,362	20,011	100	2,10,484
3272 Pakistan	96,501	23,575	0	4,000	1,24,076
3281 Bangladesh	1,73,597	12,363	60,651	7,000	2,53,610
3282 Bangladesh	61,987	3,957	0	3,000	68,944
3292 Nepal	3,23,633	1,421	1,67,611	0	4,92,665
South Asia Total	**56,24,844**	**4,02,342**	**20,11,768**	**7,83,635**	**88,22,589**
World Total	**9,97,94,938**	**2,59,39,698**	**1,04,55,474**	**2,06,16,500**	**15,68,06,610**

** Excludes Bill and Melinda Gates Foundation.*

Source: RI South Asia Office

Häcker

kitchen. germanMade.

DELHI	MUMBAI	BENGALURU	KOCHI	COIMBATORE	CHENNAI	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUDHIANA	JAIPUR	INDORE	THRISSUR
9313134488	9322987229	9740999350	9895058285	9500210555	9442081111	9700058285	9879538977	9815048222	9414058718	9425803599	7025991000

E-mail: info@hacker-kitchens.com

Website: www.haecker-india.com / www.haecker-kuechen.com

हाज़िर जवाब और ज़िंदादिल

रशीदा भगत

रशीदा भगत

अधिक मानवता कार्य करने के तथा दुनिया में परिवर्तन ले आने, अदभुत सामुदायिक परियोजनायें कार्यांवित करने के बढिया अवसरों के रहते हुये रोटरी के लिये एक ''बेहद उजले भविष्य'' के बारे में रो इं के निर्वाचित अध्यक्ष काफी उम्मीद लिये हैं।

जरा जुलियट राय्सली से पूछिये कि उनके पति रोटरी इंटरनैशनल के निर्वाचित-अध्यक्ष ईयान राय्सली को रोटरी में कौन सी बात सबसे ज्यादा अच्छी लगती है तो तुरंत, बिना किसी हिचकिटाहट के वें कहती है, ''जाहिर तौर पर लोग। न्यूज़ीलैंड में कहावत है (एक माओरी मुहावरा) हे टाँगटा, हे टाँगटा, हे टाँगटा... यानि लोग, लोग, लोग। ईयन के लिये हमेशा लोग ही अहमीयत रखते हैं। उनमे इस उत्साह से जोश जगता है जो रोटरी में मिल जाता है। और ऐसे अनेक साधारण रोटेरियन हैं जिन्होने अनेक असाधारण काम किये है और रोटरी के बारे में यही बात हम दोनों को बेहद अच्छी लगती है।'' वें खुद भी एक भूतपूर्व मंडलाध्यक्षा हैं।

हम जयपूर में IIS विश्वविद्यालय में पीडीजी अशोक गुप्ता के शानदार कार्यालय में बैठे हुये थे जहाँ राय्सली मंडल 3060 और 3054 के MDPETS में मुख्य अतिथि के रूप में आये हुये थें। भारत में वें एक चक्रवाई और व्यस्त दौरे पर आये हुये थे; बंगलुरू, चेन्नै, मदुरै, खोपोली के बाद अब वें जयपुर आये हुये हैं जिसके बाद मुंबई जा रहे हैं। यदि वें थके-माँदे थें तो उसे उन्होने बखूबी छिपा लिया और हँसमुख होकर रोटेरियनों के साथ तस्वीरें खिंचवायी।

डिन्नर पर, जहाँ राय्सली ने वहाँ परोसे गये शाकाहारी पकवानों का लुत्फ उठाया – अपनी 27 साल की उम्र से वें शाकाहारी है – उनकी हास्य प्रवृत्ति जाहिर दिखायी दी; वें पूरी तरह से जिंदादिल नज़र आ रहे थें जो इस बात का सबूत है कि वें रोटरी नेतृत्व पद के अपने किरदार को कितनी सहजता से लेते हैं... बिना किसी हंगामे, झंझट और बतंगड के। उस वक्त मेरे दिमाग में, सैन डियेगो में अंतर्राष्ट्रीय असेंब्ली के लिये आये इन

निर्वाचित अध्यक्ष की छवि उभरी जो हर एक वक्ता से पहले और बाद, चुनींदा संगीत की जोशीली धुन पर ठुमकते/लहराते हुये मंच पर आते थे। हर एक धुन ''उस वक्ता की शख़्सियत के अनुरूप चुना गया था'' जिनकी बारी थी।

लेखाकार्य का पेशा

मेलबोर्न में पैदा होकर, वहीं पर राय्सली की परवरिश हुयी और एक लेखाकार्य कार्यालय में लेखाकार बन गये जहाँ उनकी एक मौसी भी काम कर रही थी ''और एक ऐसे वक्त यह एक अच्छा पेशा मालुम हुआ जब किसी विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना मुश्किल और महंगा था; हाँ आपको छात्रवृत्ति मिली हो तो बात और थी; फिर मैं भी पढाई में कुछ खास नहीं था,'' उन्होने मुस्कुराते हुये कहा।

सो वें लेखाकार्य के कारोबार में आ गये, अपनी पढाई को भी साथ साथ जारी रखा और बाद में तृत्रिय श्रेणी के शिक्षण को भी जारी रखा जिसमे अल्पकालिक मास्टर्स पाठ्यक्रम भी शामिल है और आज वें बेहद कामयाब ईयान राय्सली एंड कंपनी चला रहे हैं। बडा होते हुये उन्होने अपने माता-पिता से कठिन मेहनत का मोल सीखा। ''मेरे पिताजी एक ही समय दो दो जगहों में काम कर रहे थें खासकर इसलिये कि उन्हे और उनके चार भाई बहनों को अच्छी तालीम मिल पाये जिस पर उन्हे बेहद भरोसा था। जूलीयट और मैं ऊँचे दर्जे के शिक्षण की जरुरत पर काफी जोर देते हैं और हम अपने बच्चों से यही कहते हैं कि हमने आपको चाहे और कुछ दिया हो या नहीं दिया हो, पर हमने बेहतरीन तालीम दी है।''

सो वें रोटरी में क्यों आयें? ''आपको कुछ ओछा सा लगेगा, लेकिन सच तो यही है कि मुझसे आने के लिये कहा गया इसलिये मैं आया।''

उन्हे एक बार रोटरी क्लब में वक्तव्य पेश करने के लिये आमंत्रित किया गया था, ''वें अच्छे लोग मालूम हुये'', और जब वें कुछ हफ्ते बाद यह कहते हुये उनके पास आये कि एक नया क्लब चार्टर किया जा रहा है और क्या वें भी उसमें शामिल होना चाहेंगे?, तो ''मैंने जूलीयट से उनकी राय पूछी। वें इस विचार से खुश थी कि इससे हमारे जान पहचान वालों का घेरा व्यापक हो जायेगा।'' इस 'परिचय बैठक' में उन्होने पाया कि ''उस उपनगर के सभी कारोबारी और सामुदायिक नेतागण वहाँ मौजूद थें जहाँ हम रहते थे। हमें बेहद मजा आया, हमने आपस में कई बातों का लुत्फ उठाया और जब रोटरी की संरचना को विवरित किया गया, तो मैंने सोचा मैं क्यों ना इस समूह में शामिल हो जाऊँ जिसमे उस इलाके की प्रख्यात हस्तियाँ जुडी हो?''

सो वें 1978 में रोटरी क्लब सैंड्रींगहैम के सदस्य बने। काफी समय बाद 1995 में जूलीयट भी रोटरी में आ गयी जब राय्सली के क्लब से एक नये क्लब को चार्टरित करने के लिये कहा गया। यूँ तो 1995 तक महिलायें रोटरी का सदस्य बनने लगी थी। ''ऑस्ट्रेलिया ने बडी आसानी से पुरूष-महिला दोनों की सदस्यता की संकल्पना को अपना लिया और मेरे क्लब में हमेशा 50 प्रतिशत महिलायें और

जूलीयट और मैं ऊँचे दर्जे के शिक्षण की जरुरत पर काफी जोर देते हैं और हम अपने बच्चों से यही कहते हैं कि हमने आपको चाहे और कुछ दिया हो या नहीं दिया हो, पर हमने बेहतरीन तालीम दी है।

बाएं से: जूलियट, बेटी जिल, बेटा ऐन्ड्रू, GSE टीम के सदस्य स्वीडन से गेबी गममेसन, RIPE इयान राय्सली।

एक नज़र में

संगीत: हर तरह का संगीत। मैं 'रैप' का शौकीन नहीं हूँ, मैं कहूँगा, लेकिन मैं चाहूँगा कि मैं गा पाऊँ; किसी संगीत वाद्य को हमेशा अपने साथ ले जाना बढिया बात होगी। मैं नहीं कहूँगा कि मैं बेसुरा हूँ। मैं यही कहूँगा कि मैं किसी भी धुन को स्पष्ट सुन सकता हूँ, बस इतना ही है कि जब मैं उसे दोहराता हूँ तो इतना अच्छा पेश नहीं कर पाता! (जूलीयट हँस पडती हैं)। हर युग में अच्छा संगीत होता है, लेकिन मुझे 1950 के जमाने का संगीत अच्छा लगता है जिसे सुनते हुये मैं बडा हुआ था। मेरी किशोर उम्र में मैं अपने बिस्तर के पास छोटा सा एक 'ट्राँसीस्टर' रख लेता था और संगीत को सुनते हुये सो जाता था। मुझे तो संगीत से बेहद लगाव है।

खेल-कूद: मैं क्रिकेट खेला करता था, लेकिन जाहिर है अब नहीं खेल पाऊँगा। लेकिन मैं गोल्फ का तीव्र खिलाडी हूँ और रॉयल मेलबोर्न क्लब का सदस्य होने का सौभाग्य मुझे मिला है जो दुनिया का सर्वोत्कृष्ट गोल्फ क्लब है जिसका शुमार चोटी के 10 क्लबों में किया जाता है। मुझे यह जगह बेहद पसंद है। दैनिक जीवन की नीरसता से छुटकारा पाने का यह एक अच्छा तरीका है। इन दिनों मेरे पास गोल्फ खेलने का समय नहीं है लेकिन मैं वापिस खेलने के लिये जाऊँगा। हालाँकि जूलीयट गोल्फ नहीं खेलती। (जूलीयट का कहना है कि इससे टहलने का मजा किरकिरा हो जाता है!)

तंदुरुस्ती: रो इं का निर्वाचित अध्यक्ष होने में सबसे मुश्किल बात है व्यायाम करने के लिये समय ना मिल पाना, जिसकी मुझे कमीं खल रही है। मैं आलस महसूस कर रहा हूँ और मेरा वजन बढ रहा है। मेरा पसंदीदा व्यायाम? मेलबोर्न में हमारी एक टोली है जो हफ्ते में दो बार मिलकर 7 किमी तक, दुनिया भर की बातें करते हुये चलते हैं और वह मजेदार हुआ करता था।

खान-पान: मैं एक शाकाहारी व्यक्ति हूँ, जब कि जूलीयट नहीं है; जब मैं 27 साल का था मैंने माँसाहार खाना छोड दिया था। भारत आना मेरे लिये सौभाग्य की बात है जहाँ आपको इतना स्वादिष्ट शाकाहारी खाना मिलता है। लेकिन जब कभी मैं यहाँ आता हूँ मेरा वजन बढ़ जाता है!

खाना पकाना: मैं अंडों को लेकर खाना बनाने में माहिर हूँ (''वें ओमलेट अच्छा बना लेते हैं,'' जूलीयट सहमती में कहती हैं), मैं अंडे तोडने में माहिर हूँ और सूप बना लेता हूँ जो पोषक और आरोग्यकर चीजों से भरपूर होता है।

पसंदीदा खाना: मेरे आकार को देखकर आपको अंदाजा हो ही जायेगा... लगभग हर चीज!

धार्मिकता: कोई खास धार्मिक नहीं हूँ, लेकिन शाकाहारी व्यक्ति होने के नाते मैं आध्यात्मिक हूँ। मैं चर्च नहीं जाता हूँ लेकिन हम ईसाई धर्म के मूल तत्वों का पालन करते हैं।

परिवार: बेटा एक उत्कृष्ट वकील है और बेटी जो निगमित धारणीयता तथा प्रतिष्ठा में निपुण है और अपनी खुद की कंपनी चलाती है। वह बेहद कामयाब है।

पढना: जब कभी मुझे वक्त मिलता है, जो अक्सर नहीं होता, मैं पढ़ना पसंद करता हूँ और जूलीयट आपको बतलायेगी कि ऑस्ट्रेलीया में पुस्तकों का ढेर पडा है जिसे पढना बाकी है। मुझे हर माह *Harvard Business Review* मिलता है और उसे पढना बहुत अच्छा लगता है। यह जानते हुये कि मैं पेशेवर फुटबॉल टीम Green Bay Packers का प्रशंसक हूँ एक अमरीकी रोटेरियन ने बार्ट स्टार्ट नामक खिलाडी पर लिखी गयी किताब तोहफे में दी जो 1960 के दशक में उनके 'क्वार्टर बैक' थें और मैं अब उसे पढ रहा हूँ।

सदैव पसंदीदा पुस्तक: क्यों कि मुझे आमोद-प्रमोद पसंद है, मेरी पसंदीदा पुस्तक है डौग्लास एड्म्स् की *The Hitchhikers Guide to the Galaxy* तथा *Trilogy* श्रृँखला की पूस्तकें। गंभीर, गहन विषयों के मुकाबले, मैं ऐसा कुछ पढ़ना चाहता हूँ जो मनोरंजक और दिलचस्प हो।

रोटरी का भविष्य: रोटरी का भविष्य बेहद उजला है, वह भी उत्तम अवसरों से भरपूर भविष्य। हमारे पास 1.2 मिलियन सशक्त रोटेरियनों का एक संगठित समूह है जो मानव सेवा कार्य करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। और अब जब कि महिलायें ना केवल हमारी संस्था में उपयुक्त तरीके में हिस्सा ले रही हैं बल्कि जिम्मेदारी भी उठा रही हैं तो वह और बेहतर होते जायेगी; उसके साथ रोटरी के बारे में लोगों की समझ भी बेहतर होते जायेगी।

ऑस्ट्रेलीया में रोटरी: वहाँ सदस्यता स्थिरता और गतिहीनता के बीच है। असल में जैसा कि अनेक देशों में देखा गया है ऑस्ट्रेलीया में रोटरी के लिये बडे अवसर है; हमे सदस्यों की नाराजगी को दूर करना है और अधिक लोगों को हिस्सा लेने पर प्रोत्साहित करना है... ऑस्ट्रेलीया में रोटेरियन कुछ उत्कृष्ट परियोजनायें कर रहे हैं।

जूलीयट की भूमिका: वें ही पहली भूतपूर्व मंडलाध्यक्ष हैं जो रो इं के अध्यक्ष की पत्नी की हैसीयत से रो इं की प्रथम महिला भी है। हर बात में तेज दिमाग रखने के अलावा रोटरी के मुद्दों के मामले में अपने विविध अनुभवों को भी वें ले आयेंगी। मेरे मुकाबले वें ही अधिक समीपकाल में रोटरी की अध्यक्षा, 2011-12 में मंडलाध्यक्ष आदि पदों पर सेवारत रह चुकी हैं। वें क्लब की सचीव भी रह चुकी हैं जो मैं कभी नहीं था; वें रोटरी के मुद्दों को तीव्र और कुशाग्र नजरों से देखते आ रही है। उन जैसी सलाहकार का मेरे साथ होना मेरे सौभाग्य की बात है।

पत्नी जूलिएट, मारगरेट ह्यूको और RI जनरल सेक्रेटरी जॉन ह्यूको के सात
क्लीवलैंड के 2016 के रोटरी इंस्टिट्यूट में।

जूलीयट और मैं ऊँचे दर्जे के शिक्षण की जरुरत पर अत्याधिक जोर देते आ रहे हैं और मैं अपने बच्चों से कहता हूँ हमने भले ही आपको कुछ और नहीं दिया हो लेकिन हमने आपको बेहतरीन से बेहतरीन तालीम दी है।

50 प्रतिशत पुरूष सदस्य रहे हैं। हमारे क्लब से ईयान का क्लब भिन्न था जहाँ ज्यादातर पुरूष सदस्य ही थें,'' जूलीयट ने कहा।

राय्सली तुरंत अपने क्लब के पक्ष में बोलने लगे: ''सबसे अहम बात यह है कि मेरा क्लब ऑस्ट्रेलीया का पहला क्लब था जिसने तुरंत रोटरी में महिलाओं को भी अनुमति दी जाने की संकल्पना का समर्थन किया।

हर बात में तेज दिमाग लगाने के अलावा जूलीयट रोटरी मुद्दों के मामले में अपने विविध अनुभवों को भी ले आती है।

दरअसल, हम विधि परिषद से पहले ही उसका पक्ष प्रचार कर रहे थे जिसने आखिर में उसे पारित कर दिया और हम शुरू से ही रोटरी में महिलाओं को ले आने के पक्ष में थे और रोटरी में जूलीयट के आने से पहले ही उसमें महिला सदस्यायें आ चुकी थीं।''

रोटरी में महिलायें

सो रोटरी में महिलाओं का क्या योगदान रहा है?

''खैर मैं अब की बार भी कुछ अविनीत होकर कहूँगा कि उन्होने सदस्यता संख्या को बढाने में योगदान दिया है, लेकिन असल में यह उससे भी बढकर है। यह एक भिन्न नज़रीया है, एक भिन्न जीवन अनुभव और खासकर व्यापक समुदाय का प्रतिनिधित्व,'' उन्होने कहा।

राय्सली ने आगे कहा कि 1978 में जब वें रोटरी का सदस्य बनें और महिलाओं को रोटरी में आने की अनुमति नहीं थी, ''मेरे दिमाग को सूझा ही नहीं कि यह संभव हो सकता था। मैंने सोचा ही नहीं कि क्यों कर हमारे क्लब की सदस्यता सर्व-पुरूष है। और जब मुझे इस सचाई का एहसास हुआ, तो मैं इस स्थिति को बदलने में जी जान लगाकर जुट गया।''

सौ साल पहले, जब रोटरी को स्थापित किया गया, ''रोटरी जैसी संस्था में बहुत कम महिलायें ही आने की स्थिति में थी; लेकिन अब ऐसा नहीं है और बडी मात्रा में महिला सदस्यों के होने से निश्चित ही हर एक क्लब लाभाँवित होगा,'' उन्होने कहा।

पूर्वी टिमोर-लेस्टे में अपने काम की मान्यता में 2002 में उन्होने ऑस्ट्रेलीय सरकार का 'AusAid Peacebuilder' पुरस्कार प्राप्त किया। समुदाय सेवा के लिये 2006 में 'Order of Australia' पदक भी प्राप्त किया। पूर्वी टिमोर पुरस्कार के बारे में उन्होने कहा कि कई दशकों से ऑस्ट्रेलीया और पूर्वी टिमोर के बीच एक गहरा संबंध रहा है और जब वें डीजी थें उनके मंडल के अंर्तगत एक क्लब ने एक उत्पादन इकाई, अनाथालयों, स्कूलों तथा अस्पतालों के लिये छत बनवाकर देने की परियोजना शुरू की, जो असैनिक जंग के दौरान विध्वंसित हो चुके थे। इस परियोजना के जरिये समुदाय की एक और भारी जरुरत को भी पूरा किया गया – छापामार (गोरील्ला) योध्दाओं को गतिहीन बना दिये जाने के बाद उन्हे रोजगारी दिलाना। ''सो इस सुविधा की स्थापना से स्थानीय लोगों को रोजगारी मिल पायी और परियोजना गजब का कामयाब रहा।''

रो इं के अध्यक्ष की हैसीयत से प्राथमिकतायें

राय्सली रो इं में कोषाध्यक्ष, निदेशक, न्यासी, रो इं बोर्ड की कार्यकारी कमेटी के सदस्य आदि पदों पर सेवारत रह चुके हैं। रो इं की हैसीयत से अपनी प्राथमिकताओं के बारे में कहते हुये, राय्सली ने कहा, ''यदि रोटरी के अध्यक्षपद के कार्यकाल के अंत में

रोटरी संसार में भारत की अहमीयत

सो रोटरी संसार के लिये भारत, कितनी अहमीयत रखता है, मैंने रो इं के निर्वाचित अध्यक्ष ईयान राय्सली से पूछा: ''खैर, अनेक तरह से अहमीयत रखता है, केवल आँकडों के बल पर ही नहीं। जैसा कि रो इं के निदेशक मनोज देसाई ने कहा, जल्द ही आप 2.5 से 4 अंचलों तक पहुँच जायेंगे।''

तब तो मेरा सिर दर्द और बढ जायेगा क्यों कि मुझे ज्यादा निदेशकों का सामना करना पडेगा, मैंने उनसे मजाक में कहा। राय्सली ने भी हमदर्दी में हँसते हुये कहा, ''लेकिन खुश खबरी यह है कि मनोज को देखते हुये आने वाले निदेशकों का सामना करना आसान होगा!''

फिर गंभीर लहजे में, उन्होने कहा कि कोरीया और तैवान जैसे देशों के साथ रोटरी को भारत से होने वाला एक फायदा है सदस्यता विकास, जो उन प्रदेशों की कमीं को पूरा कर रहा है जहाँ सदस्यता घटने लगी है। ''लेकिन यह केवल आँकडों की बात नहीं है। मिसाल के लिये फाऊँडेशन को देने की बात को ही लीजिये; पिछले 20 सालों में कितना भारी परिवर्तन देखा गया है जब कि भारत लंबे समय से फाऊँडेशन का प्रापक रहा है। अब वह एक निवल दाता देश है। यह कितनी बढिया बात है। यह भी उसकी अहमीयत की एक वजह है।''

लेकिन, उन्होने, सख़्ती से कहा, एक वाकई अहम सचाई और ''रोटरी में भारत को श्रेष्ठ देश बनने से रोकने वाली एकमात्र वजह यही है कि आपके देश में इतने सारे चुनाव से जुडे विवाद और मतभेद देखे जाते है। मैं नहीं जानता किस वजह से ऐसा होता है; मुझे इस बाबत में कुछ कहना नहीं चाहिये। लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि जब कभी ऐसा होता है वह भारत में रोटरी को कलंकित कर देता है।''

लेकिन इसे छोड दिया जाये तो, राय्सली का कहना है, ''भारत में रोटरी बडी, बडी उपलब्धियाँ हासिल कर रहा है; कुछ उत्कृष्ट परियोजनायें कार्यांवित कर रहा है, जिन्हे मैं अपने इस भेंट के दौरान देख पा रहा हूँ और उसका भविष्य उजला है।''

दुनिया को, रोटरी के बारे में अब के मुकाबले बेहतर जानकारी रहती, तो मुझे बडी खुशी होगी।'' जयपुर के MDPETS में अपने वक्तव्य में उन्होने इस बात का हिसाब रखने को कहा कि वें सामुदायिक सेवा कार्यों के लिये कितना वक्त देते हैं। उन्होने कहा, यह जानने की ''मेरी व्यावसायिक उत्सुकता'' भी इस अर्जी की एक वजह थी कि स्वयंसेवकों की हैसीयत से रोटेरियनों ने कितने घंटे काम किया। अब तक रोटरी संसार को इस सम्मिलित आँकडे के बारे में खबर ही नहीं है जिसे जब उपलब्ध कराया जायेगा तो रोटरी के 'छवि समन्वयकों'' को किसी निर्दिष्ट विषय पर बात करने का मौका मिलेगा।

राय्सली, पर्यावरण के प्रति भी बेहद दिलचस्पी रखते हैं और सभी रोटरी नेताओं से यह सुनिश्चित करने के लिये कहते हैं कि प्रति क्लब, प्रत्येक सदस्य द्वारा एक पेड के हिसाब से रोपा जाये; आगामी साल में कम से कम 1.2 मिलियन पेडों के रोपण से हमारी धरती उतनी ही हरी भरी हो जायेगी।

महिलाओं ने रोटरी को एक भिन्न नज़रीया, भिन्न जीवन अनुभव और खासकर एक सर्व व्यापक समुदाय का प्रतिनिधित्व दिलाया है।

पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति अपनी उत्कंठा के बारे में उनका कहना है कि रो इं के भूतपूर्व अध्यक्ष, ब्रेजील के पॉलो कोस्टा ने रोटरी में भूग्रह का संरक्षण करें कार्यक्रम शुरू किया था, ''लेकिन मुझे नहीं लगता उसके बाद हमने इस सिलसिले में कुछ खास काम किया है। मुझे लगता है दुनिया में इस मुद्दे की अहमीयत बढ़ते जा रही है और रोटरी उससे नज़रें नहीं फिरा सकता। आज यह हमारी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है और परिवर्तन ले आने के लिये हमारे पास अनेक मौके हैं,'' उन्होने कहा।

मैं 1950 के ज़माने के संगीत को पसंद करता हूँ जिसे सुनते सुनते मैं बडा हुआ। मेरी किशोर उम्र में मेरे बिस्तर के पास एक ट्राँजीस्टर रखा होता था और मैं संगीत को सुनते सुनते सो जाया करता था।

2005 में बांग्लादेश में एक मेडिकल प्रोजेक्ट की यात्रा पर।

मैंने उनसे क्लेम रेनौफ के बारे में पूछा जो ऑस्ट्रेलीया से आये रो इं के बेहद मशहूर भूतपूर्व अध्यक्ष थे; क्या वें खुद एक आदर्श मिसाल थे? ''ओह, हाँ, बिलकुल! जूलीयट और मैं खुशमिस्मत थे जो पिछले साल उनके साथ कुछ समय बिताने का मौका मिला। वें एक अनोखे इंसान हैं और रोटरी के इतिहास में मैंने उनके बारे में कितनी सारी बातें पढी है, खासकर पोलियो प्रतिरक्षण कार्यक्रम की शुरूआत में।'' राय्सली ''एक अपेक्षाकृत छोटी पुस्तिका'' को पढने की सिफारिश करते हैं जिसे क्लेम ने उन रोचक घटनाओं का बयान करते हुये लिखा था जब पोलियोप्लस को शुरू किया गया था। पुस्तक पढने में बेहद रोचक थी।''

अध्यक्षीय विषयवस्तु

उनकी विषयवस्तु है ''रोटरी परिवर्तन ले आ रहा है''। लेकिन जिस दुनिया में हम रहते है वह हर तरह की प्रतिकूलताओं की वजह से अधिक अशाँत होते जा रहा है – आतंकवादी आक्रमण से लेकर असैनिक जंग/विद्रोहियों द्वारा एक बहुत बडे शरणार्थी संकट की शुरूआत तक, रोटरी किस तरह के परिवर्तन ले आने की उम्मीद कर सकता है?''

''अक्सर हम भूल जाते हैं कि आजकल लगभग हर समय कुछ ना कुछ उपद्रव मचा रहता है और रोटरी जैसी संस्थाओं की जरुरत रहती है और उनके लिये परिवर्तन ले आने के अनेक अवसर उपलब्ध है। हमारी संस्था में 35,000 क्लबें है और जिस तरह का काम इन क्लबों में किया जाता है निश्चित ही उससे परिवर्तन लाया जा सकेगा,'' वें विश्वास के साथ कहते हैं।

इस विश्वास को उनके समीपकालीन दौरों ने उन्हे दिलाया है जिस दौरान ''मैंने कुछ बेहद अच्छे कार्यक्रम और उत्कृष्ट परियोजनायें देखी है जिसे रोटरी क्लबों ने समुदाय की जरुरतों को पूरा करने के इरादे से कार्यांवित किया। वह प्रेरक है। उन्हे तो इस काम को जारी रखना होगा।''

मस्त मौला

रो इं की मंडली में राय्सली को 'मस्त मौला' कहा जाता है; जयपुर MDPETS में एक तस्वीर थी जिसमे वें बरसाती-कोट नुमा पॉलीथीन का एप्रन पहने, रो इं के महा सचिव जॉन ह्यूको की बगल में बैठकर तरबूज खा रहे हैं। इस बाबत में विवरण पूछने पर उन्होने कहा, ''ओह, वह रोटरी कर्मचारियों के पिकनिक पर ली गयी थी। ईवानस्टन के झील किनारे सालाना पिकनिक का आयोजन किया जाता है; वह एक मजेदार दिन होता है जहाँ हर कोई पसंदीदा गतिविधियों में लगा होता है जैसे वॉलीबॉल खेलना आदि। इस बार एक गतिविधि थी एक ऐसी चीज को खाना जिसे मैं तरबूज का टुकडा मान बैठा था। लेकिन वह एक बेहद बडा खूँटा था। हमारे हाथों को पीछे से बाँधा गया था और उन्होने हमें एक पॉलीथीन का लबादा दिया ताकि हम खुद को कुछ हद तक सूखा रख सके वरना हम बुरी तरह से चिपचिपे से रहते!''

सो ह्यूको तथा कुछ ज्येष्ठ कर्मचारियों के साथ प्रतियोगिता शुरू हुयी। ''जब कि हममे से ज्यादातर लोग तरबूजे पर झुक पडे और चपर-चपर करते चबा रहे थे, एक खढ विभाग के अधिकारी थे जो आश्चर्यजनक तरीके से अपने दाँतो से उस खूँटे को उठा पा रहे थे; जाहिर था उन्ही की जीत हुयी।''

लेकिन राय्सली एक ''मजाकिया और जिंदादिल व्यक्ति'' से बढकर भी कुछ और है; रो इं के भूतपूर्व अध्यक्ष के आर रविंद्रन् ने, 2016 में अपने कोरीय महाधिवेशन के चैयरमैन की हैसीयत से उनके साथ निकट अनोन्यक्रिया की थी। ''अध्यक्ष के रूप में ईयान राय्सली के मनोनयन के बाबत में एक ही गलती हो सकती थी और वह यह थी कि उसमे बेहद देरी हो गयी,'' रविंद्रन् ने आगे कहा, ''असल में यदि मुझ से पहले उन्होने अपना नाम दिया होता तो इसमे कोई शक नहीं कि वें ही चुने गये होते और मुझे ऐसा कहने में अफसोस नहीं हो रहा।''

रविंद्रन् ने राय्सली को ''असाधारण तौर पर प्रतिभावान व्यक्ति बतलाया जिनमें अपने उद्देश्य की गहन समझ, उच्चतम नैतिक मूल्य और हाजिर जवाबी देखी जा सकती है। वें व्यय पर सतर्क नजर रखेंगे और सामयिक प्रबंधन शैली को ले आयेंगे जिसे केवल ऑस्ट्रेलीय लोग ही कर पायेंगे साथ ही साथ अपने प्रत्येक लक्ष्य पर सही 'निशाना' लगा पायेंगे। वें कट्टर शाकाहारी हैं और हर तरह के खेल से वाकिफ हैं चाहे बर्फ में हॉकी या महिला 'नेट बॉल' हो; अमरीकी फुटबॉल हो हो या 'लैक्रोस' (क्रीडा विशेष) हो!''

इवान्स्टन में आरआई स्टाफ द्वारा आयोजित एक तरबूज खाने की प्रतियोगिता में, RI जनरल सेक्रेटरी जॉन ह्यूको (बाएं) के साथ ।

ईयान असाधारण रूप में प्रतिभावान व्यक्ति हैं; अपने उद्देश्य के प्रति वचनबध्द, उच्चतम नैतिक मूल्य रखने वाले और हाजिर जवाब। वें व्यय पर एक सतर्क नजर रखेंगे और एक सामयिक प्रबंधन शैली में काम करेंगे जिसे केवल ऑस्ट्रलीय लोग ही कर सकते हैं और फिर भी वें अपने हर एक लक्ष्य पर सही निशाना लगायेंगे।

रो इं के भूतपूर्व अध्यक्ष के आर रविंद्रन

इस बात का आभार व्यक्त करते हुये कि ''इतने योग्य व्यक्ति की अध्यक्षता में मेरे कोरीय महाधिवेशन का आयोजन होना मेरे लिये सौभाग्य की बात है,'' रविंद्रन ने कहा, ''45,000 लोगों की उपस्थिति और 2.5 मिलियन के करीब मुनाफा अपने आप में एक कीर्तिमान स्थापित कर देता है। उनके नेतृत्व के अधीन रोटरी लाभाँवित होगा।''

एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

14th JJS
JAIPUR
JEWELLERY
SHOW
Ruby
...Red, Rare, Royal
the
December
show
JECC, JAIPUR
22-25 DECEMBER 2017
JAIPUR JEWELLERY SHOW
Gold Souk, TF-01, Third Floor, Adjoining Hotel Lalit, Jawahar Circle, Jaipur – 302017, Tel.: +91 141 4035900 / 2725648
E-info@jaipurjewelleryshow.org W-www.jaipurjewelleryshow.org

भारतीय रोटेरियनों की गुणवत्ता, कार्यशीलता, सहभागिता को बेहतर बनाना है

रशीदा भगत

हालाँकि भारत, रोटरी संसार में "बेहद अच्छी" स्थिति में है, क्लबों को बेहतर प्रशिक्षण के ज़रिये सशक्त बनाना है। टीआरएफ अनुदानों का निरीक्षण करते रहना बेहद ज़रुरी है। और रोटरी की परियोजनाओं को स्थानीय समुदाय की ज़रूरतों पर संकेंद्रण करना होगा, रो इं के आगंता निदेशक सी भास्कर ने कहा।

नयी पहल लेना, दिशा निर्देशन करना तथा दलों की अगुआई करना आदि ऐसे गुण है जिन पर बचपन से ही उनके पिता ने सान चढा दी थी और इनमें उनके अपने क्लब रोटरी क्लब करुर में जोश भरकर एक नये अवतार में ले आना भी शामिल है। जब हमारे आगंता रो इं निदेशक सी भास्कर अपनी बीसीयों में थें, लॉयोला इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस एडमिनीस्ट्रेशन में प्रबंधन की पढाई करने के साथ 1983 में सिटी बैंक में अंशकालिक नौकरी कर रहे थें, तब, "मेरे पिताजी – मैं करुर में एक जमींदार परिवार से हूँ – एक नया उद्योग शुरू करना चाहते थें। और उनकी बात रखने मैं चेन्नै से करुर चला गया जहाँ मैंने 'वेल्डींग इलेक्ट्रोडस' का उत्पादन करना शुरू किया।"

इसके बाद उन्होने विविध क्षेत्रों में कदम रखा; निर्माण उद्योग के लिये स्टील वायर्स तथा इतर संबंधित चीजों का उत्पादन। "हम 25 सालों में तीन ब्रैंड ले आये; यें सभी आज दक्षिण भारत में बड़े बाज़ार हिस्से के साथ अग्रणीय ब्रैंड है और हम बाज़ार में, ऊँचे स्तर तथा वचनबध्दता के लिये जाने जाते हैं," उन्होने कहा।

आज VNC ग्रूप, जिसके भास्कर प्रबंध भागीदार हैं, सालाना रु 1,200 करोड की विक्री करता है; दक्षिण भारत में 13 शाखाओं में 1,300 कर्मचारी काम करते हैं और तमिल नाडु में टाटा स्टील के सभी ब्रैंडों के अंतर्गत उत्पादनों का सबसे बडा चिल्लर वितरक है। उनके बेटे गोकुल और गौतम दोनों, परिवार के कारोबार को विस्तृत करने तथा विविधिकरण में उनकी मदद कर रहे हैं।

हम चेन्नै में भास्कर के शानदार कार्यालय में बैठकर बातचीत कर रहे थे जब कि उनकी पत्नी माला उनके पास बैठी हुयी थी; उन्हे देखते हुये मालूम होता है कि वें काम के लती हैं, जो अपने कारोबार और रोटरी में अपनी जिम्मेदारियाँ, दोनों को गंभीरता से लेते हैं... इतनी गंभीरता से कि दोनों ने एक बार भी छुट्टियाँ नहीं मनायी होगी!

मुझे कोई तर्जुबा नहीं था, लेकिन मुझे अध्यक्ष चुना गया था क्यों कि हमारे क्लब के इतर तीन सक्रिय सदस्य दो-तीन बार अध्यक्ष रह चुके थें!

के विश्वनाथन

एक उद्यम शुरू करना

करुर लौटने के बाद जल्द ही, इस नौजवान कारोबारी ने कारोबारी समुदाय को अव्यवस्थित पाया और डिस्ट्रिक्ट चेंबर ऑफ कॉमर्सफ को शुरू करने तथा कारोबारों के लिये टेलीकॉम सुविधाओं को बेहतर बनाने में उन्होने अग्र भूमिका निभायी। नेता के रूप में अपनी दिलेरी को साबित करने का मौका तब आया जब तब की मुख्य मंत्री जे. जयललिता ने तिरुची जिले को द्विशाखित करना चाहा। उन्होने एक कमेटी की अगुआई की जिसने मुख्य मंत्री महोदया से मुलाकात की और इस बात पर राजी कराया कि तिरुची को तिशाखित करना होगा। "केवल जिला मुख्य कार्यालय होने पर ही आप भौगोलिक नक्शे में दिखायी देंगे; करुर तो पहले ही कपडों का निर्यात करने वाला प्रधान शहर है लेकिन लोग मुश्किल से नक्शे पर इसे ढूँढ पाते हैं। हम उन्हे राजी कराने में कामयाब रहे और इस तरह तिरुची को तिशाखित कर दिया गया," भास्कर ने मुस्कुराते हुये कहा।

वें अनेक क्रीडा संघटनों को शुरू करने में सहायक थें – जिला क्रिकेट, वॉलीबाल, बास्केटबॉल तथा इतर क्रीडा संघठन आदि उन्हीकी बदौलत गठित किये जा सके।

एक रोटरी सफर की शुरूआत

यह पूछने पर कि रोटरी में वें किस तरह आयें, भास्कर ने कहा, "जब 1983 में मैं करुर वापिस आया, अपने परिवार में पहली पीढ़ी का कारोबारी होने के नाते मेरा ध्यान केवल कारोबार पर लगा हुआ था; कुछ और करने के लिये मेरे पास बहुत कम समय था।'' उनके पिता रोटरी क्लब करुर के

चार्टर सदस्य तथा भूतपूर्व अध्यक्ष थें जिसे 1955 में चार्टर किया गया था। भारत के सबसे पुराने क्लबों में इसका शुमार किया जा सकता है। "करुर की प्रतिष्ठित हस्तियाँ उसके सदस्य थें; तब वही करुर का एकमात्र क्लब था; अब सात क्लबें हैं। लेकिन क्यों कि तब युवा सदस्यों को क्लब में दाखिल नहीं किया जाता था, क्लब निष्क्रिय बन गया और एक ऐसा भी वक्त आया जब वह काम ही नहीं कर रहा था।''

उनके पिता ने 1988 में कहा कि वें क्लब छोड रहे हैं और "मुझे क्लब में दाखिल होकर, सहारा देना पडा। मैं केवल 31 साल का था और रोटरी में इसलिये आया क्यों कि मेरे पिता ने आग्रह किया! तब मुश्किल से चार सदस्य नियमित तौर पर बैठकों में हाजिर होते थें।" क्लब ने 1990 में एक शुभ दिन उन्हे अध्यक्ष चुना। "मुझे रोटरी में किसी तरह का तजुरबा नहीं था लेकिन मुझे इसलिये चुना गया था क्यों कि बाकी के तीन सदस्य दो-तीन बार अध्यक्ष रह चुके थें! मेरे लिये इसे मंजूर करने के अलावा कोई चारा नहीं था।"

क्लब में मुश्किल से 10-12 सदस्य थें "और क्यों कि मैंने जिम्मेदारी ले ली थी, मैंने 38 काबिल लोगों को आमंत्रित करने के द्वारा क्लब को सशक्त बनाने का फैसला किया और उन सभी ने इस आमंत्रण को स्वीकार किया।" जिस दिन उनका अधिष्ठापन किया गया उस दिन उन्होने क्लब की सदस्यता को 42 तक बढा दिया; तब से क्लब ने कभी पीछे मुडकर नहीं देखा और आज 430 सदस्यों के साथ "भारत का दूसरा बडा क्लब है," उन्होने कहा।

सदस्यों द्वारा सेवा परियोजनाओं के लिये उदार अंशदान दिये जाने के तथा मंडल 3000 में टीआरएफ को सबसे अधिक अंशदान देने वाला क्लब होने के अलावा, उसमें सबसे अनुकूल बात यह है कि क्लब के पास अपनी एक इमारत, एक वाकिंग ट्रैक, भावी उपयोग के लिये भरपूर खाली ज़मीन के साथ रु 40 करोड़ की संपत्ति है। "हम स्वयं-सहायता समूहों के लिये एक लघु उधार केंद्र, लक्ष्मी विलास बैंक के साथ एक रोटरी चिकित्सा केंद्र चलाते है, जहाँ हर दिन 100 मरीजों का नि:शुल्क इलाज किया जाता है और हम अनेक कल्याणकारी परियोजनायें करते हैं,'' भास्कर ने नाज़ के साथ कहा।

अध्यक्ष, डीजी, प्रादेशिक समन्वयक तथा समीपकाल में आगंता रो इं निदेशक की हैसीयत से रोटरी में मैंने जिन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिस्सा लिया उसने मेरे नेतृत्व कौशल को बेहतर बनाया, उस पर सान चढायी और कारोबार में मेरी जिम्मेदारियों को बेहतर तरीके से निभाने में मेरी मदद की।

रोटरी सफर

उनका रोटरी सफर जारी रहा और वें 2000-01 में मंडलाध्यक्ष बने। "मैं जिन तीन मंडल-स्तर के पदों पर सेवारत रहा हूँ वें सभी सर्व सम्मत रहे है क्यों कि मेरे खिलाफ एक भी मनोनयन दर्ज नहीं कराया गया। मंडल के रोटेरियन हमेशा मेरा आदर करते आ रहे हैं; उन्होने मुझे अवसर दिये हैं, जिसके लिये मैं आभारी हूँ।''

मंडलाध्यक्ष के रूप में अपने कार्य वर्ष के बारे में भास्कर का कहना है कि मंडल के 56 क्लबों में से चार निष्क्रिय थें और उनका प्रधान संकेंद्रण

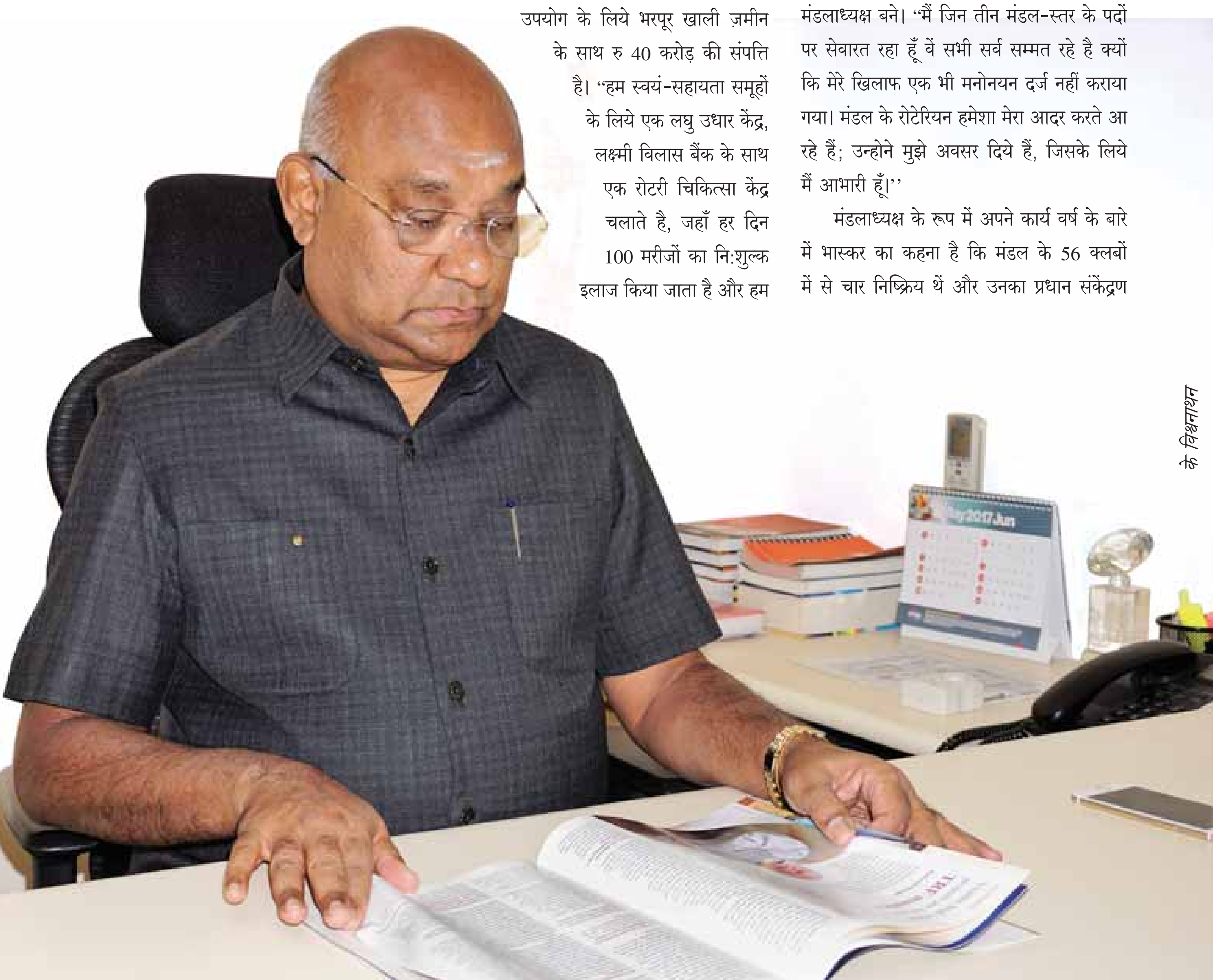

के विश्वनाथन

एक नज़र में

धर्म: मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूँ, मैं हर रोज अपने पूजा घर में प्रार्थना करता हूँ, लेकिन मुश्किल से मंदीर जाता हूँ।

खाना: (माला बीच में बोल पडती हैं: “ओह, वें हर चीज पसंद करते हैं।)” भास्कर ने आगे कहा: मैं शाकाहारी हूँ और भारतीय शाकाहारी खाना पसंद करता हूँ। जब हम विदेश जाते हैं, हम हमेशा भारतीय रेस्तराँओं की तलाश में रहते हैं; सुबह बढिया युरपीय नाश्ता करते हैं; दोपहर को कुछ हल्का-फुल्का सा लेते हैं और रात को किसी भारतीय रेस्तराँ में डिनर लेते हैं।

विश्राम: यह ऐसी बात है जिसे मैंने कभी अनुभव नहीं किया। हम कभी छुट्टियाँ मनाने के लिये नहीं गये, अब तक एक भी छुट्टी पर नहीं गये और यह एक निरंतर परेशानी है। मंडल 3120 असेंब्ली के लिये सिंगापूर से मैं स्टार क्रूईस में आ रहा था। सिंगापूर से रविवार की दोपहर को हम उसमें सवार हुये, सोमवार को असेंब्ली 1.30 बजे खत्म हुयी, हम पेनाँग पहुँचे और घर लौटे। निर्वाचित-डीजी और उनकी पत्नी बेहद निराश हो गये लेकिन हमेशा ऐसे ही होते आया है। पहले, अपने कारोबार के सिलसिले में मैं हफ्ते में कम से कम तीन दिन सफर करता था।

पढ़ना: कुछ सामान्य पुस्तकें पढ लेता हँ, लेकिन मैं रोज सुबह अखबार जरुर पढ़ लेता हूँ।

फिल्में: मैं मुश्किल से कोई फिल्म देखता हूँ; फिल्मों का कोई खास शौकीन नहीं हूँ। माला भी सिनेमा थियेटरों में नहीं जाती... हमने शायद सात साल पहले थियेटर में फिल्म देखी थी! शादी के बाद, हम दोनों ने थियेटर में केवल 10 फिल्में ही देखी होगी। लेकिन घर पर मैं कभी कभी इंग्लिश फिल्में देखता हूँ... मुझे एक्शन, तेज गति की फिल्में पसंद है।

संगीत: हम जब कार में होते हैं तब ही गाना सुनते हैं। हमेशा फिल्मी संगीत... फिल्मी गीत।

व्यायाम: मैं सुबह को करुर के रोटरी बिल्डिंग के प्राँगण में बनाये गये चहलकदमी डगर पर टहला करता था, लेकिन अब लगातार सफर करने की वजह से सुबह सुबह टहलने जाना मुश्किल पड गया है।

माला की भूमिका: मेरे रोटरी सफर में वह एक मौन हिमायती रही है। जब आप एक कारोबारी हो और फिर एक सक्रिय रोटेरियन बन जाते हो, तो घर पर बिताया गया वक्त नहीं के बराबर हो जाता है। जब कि मैं कारोबारी और रोटेरियन की हैसीयत से अपना फर्ज अदा कर रहा था, वें ही परिवार की देखभाल करते आ रही है। अपने परिवार के लिये वक्त ना दे पाना... मेरी जिंदगी में मैंने यही बडी कुरबानी दी है। आपको बडी देर बाद ही इसका एहसास होता है लेकिन इस बारे में आप कुछ नहीं कर पाते हैं। खैर, माला अब निर्वाचित मंडलाध्यक्षों की पत्नियों से, उनके लिये एक अलग प्रशिक्षण कार्यक्रम की जरुरत पर जोर देते आ रही है। और, माला भी एक रोटेरियन है, हालाँकि वें सक्रिय नहीं हैं। अपनी श्रीमती को रोटरी में लाये बिना मैं रोटेरियनों से ऐसा करने के लिये नहीं कह सकता।

जनवरी 2000 में रोचेस्टर यूएसए में डीजीई आतिथ्य कार्यक्रम में भाग लेते समय ,भास्कर और माला।

माला ने आगे कहा: “मैं रोटेरियनों की पत्नीयों को बेहद जोश में पाती हूँ और वें बदलाव ले आना चाहती हैं। सो मैंने उन्हे दो परियोजनायें सुझायी है; ग्रामीण महिलाओं को सैनीटरी नैपकीन देना और किसानों की समस्याओं की ओर ध्यान देना, क्यों कि आज भारतीय किसान बेहद कठिन दौर से गुजर रहे हैं।”

एक यादगार परियोजना: जब मैं एक डीजी था, हमने मदुरै में नेत्र विकार से बाधित लोगों के लिये बोलता पुस्तकालय शुरू किया। मद्रास विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उप कुलपति तथा रोटरी क्लब मदुरै-मिड़टाऊन के सदस्य जी तिरुवासगम् इस किस्म के पुस्तकालय के प्रति तीव्र थे; तब केवल मुंबई में ही ऐसा पुस्तकालय था और एक अंतर्राष्ट्रीय सहभागी के लिये वें मुझ से मदद माँगने आये थे। अंतर्राष्ट्रीय असेंब्ली में जाने से पहले, जो उस वक्त लॉस एंजीलीस के पास एनाहैम में आयोजित किया गया था, माला और मैं रोशेस्टर में एक आतिथेय कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे थे जहाँ एलीजाबेथ रिचर्डसन, उस क्लब की आगंता अध्यक्षा थीं। वें भारत में एक परियोजना करने में बेहद इच्छुक थीं और मैंने मदुरै के लिये इस पुस्तकालय परियोजना की सिफारिश की, दोनों क्लबों के बीच संपर्क स्थापित किया और इस पुस्तकालय की स्थापना की गयी।

एक बार रोटेरियन आपको एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचानने लगेंगे जो आपका नेतृत्व और मार्गदर्शन कर सकता है, तो आप आदर का पोत्र हो जाते हैं।

बाएं से : माला, गौथम, भास्कर, गोकुल अपनी पत्नी दिव्या के साथ।

क्षेत्र था नये क्लबों को शुरू करने के बजाय उन क्लबों को दोबारा शुरू करना। वें उन 56 क्लबों में से 44 को "अंतराष्ट्रीय मैचिंग ग्रांट परियोजनायें करने का तथा दुनिया में भले काम करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सहभागियों के साथ मिलकर काम करने का अनुभव दिलाने में भी'' कामयाब रहे। "मैंने 25 देशों से जुडे अंतर्राष्ट्रीय प्रायोजकों की पहचान की और हमने उस साल 72 परियोजनायें की। सभी मैंचिंग ग्रांट परियोजनाओं को समय पर पूरा कर दिया गया और टीआरएफ की शर्तों के मुताबिक हिसाब पेश कर दिया गया। वही हमारे मंडल में एक मापदंड बन गया। एक बार रोटेरियन आपको एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचानने लगेंगे जो नेतृत्व करते हुये उनका मार्गदर्शन कर सकता है, तो आप आदर के काबिल बन जायेंगे," उन्होने कहा।

साफ जाहिर है कि उनमें उत्कृष्ट नेतृत्व कौशल है, सो क्या कारोबार को विकसित करने का उनका कौशल रोटरी में ऊँचे पदों को हासिल करने में भी मददगार साबित हुआ, मैंने उनसे पूछा। "निश्चित ही वें मददगार साबित होते है लेकिन रोटरी, कारोबार में आपके नेतृत्व कौशल को बेहतर बनाने में भी मदद करता है। मैंने प्रबंधन में कोर्स किया और कारोबार में कदम रखा, लेकिन अध्यक्ष, मंडलाध्यक्ष, प्रादेशिक समन्वयक तथा अभी हाल में आगंता रो इं निदेशक के रूप में मैंने जिन भिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिस्सा लिया... रोटरी में हर कोई प्रशिक्षित होता है... उनसे मेरा नेतृत्व कौशल बेहतर हो गया और पहले से बेहतर तरीके में कारोबार के प्रति मेरे फर्ज को अदा करने में और उसे परिष्कृत करने भी सहायक रहा। सो यह आपस में एक लाभकारी रिश्ता है।"

सो रोटरी का कौन सा पहलू उन्हे सबसे अच्छा लगता है? तुरंत भास्कर ने जवाब दिया, "निस्संदेह, लोगों से मिलना, नये दोस्त बनाना और यह समझना कि किस तरह रोटरी काम करता है। मुझे रोटरी का साहचर्य वाला पहलू बेहद पसंद है।" मैं मन ही मन यही सोचते हुये मुस्कुराती रही कि 2017-18 के अपने रो इं अध्यक्ष ईयान राय्सली के साथ उनकी खूब बनेगी, जिन्होने भी इसी तरह के एक सवाल का ठीक यही जवाब दिया था!

हैदराबाद में, 2001 में रोटरी संस्थान के दौरान आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्राबाबू नायडू के साथ भास्कर और माला।

परियोजना के कार्यांवयन में महिलायें

यह पूछने पर कि रोटरी में महिलाओं का क्या योगदान रहा है, रो इं के आगंता निदेशक सी भास्कर ने कहा, "सच कहना हो तो मैं महिला रोटेरियनों को अधिक वचनबध्द, अधिक समर्पित पाता हूँ। मैं यह भी पाता हूँ कि वें बेहतर नेतृत्व गुणों को जाहिर करती हैं जब कभी सेवा परियोजनाओं के कार्यांवयन की बात आती है। वें अधिक संकेंद्रित होती हैं और मैंने हमेशा पाया है कि जब कभी महिलायें परियोजनाओं के कार्यांवयन में नेतृत्व करती हैं तो उन्हे कार्यावित करने वाले पुरूषों के मुकाबले उनकी कार्य कुशलता बेहतर होती है। मैंने मेरे सभी वक्तव्यों में इसका जिक्र किया है और अब वक्त आ गया है कि हम रोटरी में अधिक महिलाओं को आने पर प्रोत्साहित करें।''

भास्कर सभी पुरुष रोटेरियनों से अर्ज करते हैं कि वें अपनी पत्नियों को रोटरी में ले आयें और "सेवा के नये क्षेत्रों से उनका परिचय करायें। यदि आप अमरीका तथा इतर विकसित देशों में जायें तो पायेंगे कि ज्यादातर पति और पत्नी दोनों रोटेरियन होते हैं; वें बैठकों में मिलकर जाते हैं और काम को आपस में बाँट लेते हैं। मिलकर इस काम को करने से उन्हे बेहद संतोष मिलता है, जो भारत में नहीं है। भारतीय रोटेरियनों से मेरा निवेदन है: रोटरी में अपनी श्रीमतीयों को ले आयें, उन्हे रोटरी बैठकों में ले जायें, सेवा के भिन्न क्षेत्रों में काम करने का अनुभव दिलाते हुये उन्हे आजादी से काम करने दें। यह ना केवल उनकी कायापलट करेगा बल्कि भारत में रोटरी की छवि की भी पायापलट कर देगा। आपने मुझ से रो इं के निदेशक की हैसीयत से मेरी प्राथमिकताओं के बारे में पूछा। यह भी एक प्राथमिकता है; रोटरी में अधिक महिलाओं को ले आना, संख्या को बतलाने के लिये नहीं बल्कि इसलिये कि इस संस्था के लिये उनका होना अच्छी बात है।"

के विश्वनाथन

हम विकसित हुये हैं लेकिन क्लब स्तर पर एक मजबूत आधार खडा किये बिना ही। मेरी पहली प्राथमिकता होगी रोटरी क्लबों को सशक्त बनाना और अध्यक्षों तथा इतर पदाधिकारियों को प्रशिक्षित करना ताकि हम समुदाय की जरुरतों को बेहतर तरीके से पूरा कर सके।

क्लबों को सशक्त बनाना

जब कि उनकी एक प्राथमिकता होगी रोटरी में अधिक महिलाओं को ले आना, अपनी इतर प्राथमिकताओं के बारे में भास्कर ने कहा, "भारत विकसित हो गया है; और 2014-15 में दुनिया भर में रोटरी के विकास में हमारा 35 प्रतिशत का योगदान रहा है जिसका उस वक्त मुझे बेहद नाज़ था। लेकिन अब, निर्वाचित निदेशक के रूप में, मैं महसूस करता हूँ कि हम विकसित हुये है लेकिन क्लब स्तर पर कोई मजबूत आधार खडे किये बिना ही।"

उन्होने कहा भारत में रोटरी में एक कमीं है, "आगंता पदाधिकारियों के उचित प्रशिक्षण का अभाव। आखिरकर यह संस्था इस बात पर निर्भर है कि किस तरह क्लब और उसके सदस्य, समुदाय की जरुरतों को समझने तथा पूरा करने समान्य स्तर पर काम करते हैं। सो मेरी पहली प्राथमिकता होगी क्लब के नेताओं तथा पदाधिकारियों के उचित शिक्षण द्वारा क्लबों को सशक्त बनाना।"

उनका कहना है कि इस साल, भारत भर में प्रशिक्षण प्रारूप को मानकित कर दिया गया है और वह सभी क्लबों के लिये एक समान होगा, "कश्मीर से कन्याकुमारी तक। इस प्रशिक्षण प्रारुप को आगंता मंडलाध्यक्षों के हाथ सौंप दिया गया है और उनके निवेदन पर हमने आठ भारतीय भाषाओं तथा सिंहली भाषा में क्लब अध्यक्ष की नियम पुस्तिका का अनुवादन किया है। इसका, उन्होने कहा, पीडीजीयों

ग्लोबल ग्रांट की निगरानी करने जल्द ही एक पैनल

भारत में रोटरी के सम्मुख पेश आने वाली चुनौतियों के बारे में पूछे जाने पर जैसे किसी मंडल को निलंबित/भंग कराने की नौबत आ जाना, टीआरएफ निधियों का घपला/दुरूपयोग करने के आरोप, चुनावी विवाद, अनुचित लेखाकरण आदि, भास्कर ने गहरी सॉस लेते हुये कहा "हाँ वाकई ये सभी चुनौतियाँ है; मेरे सम्मुख पेश आने वाली यही सबसे बडी चुनौति है। मैंने निर्वाचित मंडलाध्यक्षों से गुजारिश की है, जिन्हे मैं चलनकर्ता कहता हूँ, कि वें एक स्वतंत्र, न्यायपूर्ण तथा पारदर्शी चुनाव का संचालन करें। दूसरे, ग्लोबल ग्राँट के बाबत में, हालाँकि भारत देने में दूसरे स्थान पर है, हम टीआरएफ अनुदान पाने में अव्वल स्थान पर है और यह सुनिश्चित करना हमारा फर्ज बनता है कि इन निधियों का उचित उपयोग किया जा रहा है। मैंने डीजीओं से मंडल स्तर पर एक कार्य कुशल प्रबंधन कमेटी को नियुक्त करने के लिये कहा जो इस बात पर क्लबों का मार्गदर्शन करेगा कि क्या करना है और क्या नहीं करना; क्या स्वीकरणीय है और क्या अस्वीकरणीय।"

भास्कर का कहना है कि इस बात को मद्दे नज़र रखते हुये कि भारत टीआरएफ अनुदानों की सहायता से बडी तादाद में परियोजनायें करता है और उसे बडी तादाद में शिकायतों का सामना करना पडता है, उन्होने टीआरएफ के ट्रस्टीयों को सुझाव दिया है कि इस तरह की शिकायतों पर रोक लगाने, प्रबंधन कमेटी को नियुक्त करें या "भारत में कार्यांवित सभी ग्लोबल ग्राँटों का निरीक्षण करने स्वयंसेवकों का एक पैनल" गठित करें। इससे सुनिश्चित कर लिया जायेगा कि निधि का उचित उपयोग किया जा रहा है और परियोजनाओं की शर्तों को सही तरह से पूरा किया जा रहा है। मैं उनके अनुमोदन के इंतजार में हूँ। एक बार अनुमोदन मिल जाये, तो 1 जुलाई से भारत में किये जाने वाले सभी ग्लोबल ग्राँटों पर हमारे अपने लोग नज़र रखेंगे। सो परियोजना को उचित तरीके में कार्यांवित करने क्लब तथा मंडल पर नैतिक उत्तरदायित्व के साथ साथ उसे बेहतर प्रेरणा मिल पायेगी।

विश्राम ऐसी बात है जिसे मैंने अपनी जिंदगी में कभी महसूस नहीं किया। हम कभी छुट्टियाँ मनाने के लिये नहीं गये... अब तक एक बार भी नहीं।

की मदद से नि:शुल्क अनुवादन किया गया; इसके लिये होने वाले मुद्रण शुल्क का जिम्मा, ज्यादातर उन्होने ही उठाया था।

दूसरी समस्या थी क्लब बैठकों का उचित संचालन। "जब कोई नया व्यक्ति भीतर आकर व्यवस्थित ढंग से बैठक का संचालन होते देखता है, तो वह उस क्लब का सदस्य बनना चाहेगा। सो हमने एक व्यवस्थित बैठक का संचालन करने में क्लब अध्यक्षों की मदद करने Dos and Don'ts शीर्षक पर "एनीमेशन किया गया एक वीडियोफ तैयार किया।" (इस वीडियो को *https://www.youtube.com/watch?v=I3_bCkYvDwg* पर देखें)

अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को एक अकेले कार्यक्रम में समेट लिया गया, "आखिरकर रोटेरियन होते हैं स्वयंसेवक और ज्यादा वक्त नहीं दे पाते हैं सो मैंने डीजीओं से कार्यक्रमों को इकठ्ठा आयोजित करने का तथा सफर पर कम वक्त और खर्चा करने का निवेदन किया। और क्लबों को मानक क्लब संविधान तथा उपविधानों के बारे में शिक्षित किया जायेगा; अनेक क्लब जानते ही नहीं हैं कि ऐसा कुछ मौजूद भी है!"

लेकिन परियोजनायें कार्यांवित करते हुये, सबसे पहले, भास्कर ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि रोटरी क्लबें स्थानीय समुदाय की जरुरतों को समझ ले और समाधान ढूँढें। इस वक्त हम ऊपर से नीचे तक काम कर रहे हैं। लेकिन अब मैंने क्लबों और मंडलों से स्थानीय समुदायिक मुद्दों की ओर देखने तथा उनकी जरुरतों को पूरा करने का निवेदन किया है, ताकि आप ना केवल समुदाय में रोटरी की छवि को बेहतर बनायेंगे बल्कि समुदाय के काबिल लोगों को रोटरी की ओर आकर्षित करेंगे जो उसका सदस्य बनना चाहेंगे। और बेहतर आर्थिक सहायता पाना, सो मैं क्लबों से सामान्य स्तर की जरुरतों की ओर ध्यान देने के लिये कह रहा हूँ।"

RIDE भास्कर (दाएं से) DGE व्यंकटेश चन्ना, PDG सिबाब्रता दाश और DG प्रमोद पारीख के साथ।

सेवा परियोजनाओं को कार्यांवित करने में महिलायें बेहतर नेतृत्व कौशल को प्रदर्शित करती हैं। वें अधिक संकेंद्रित रहती हैं और जब परियोजनायें करने में महिलायें नेतृत्व की भूमिका करती हैं, तो उन्हे कार्यांवित करने वाले पुरुषों के मुकाबले उनकी कार्यकुशलता बेहतर होती है।

एक और प्राथमिकता है युवजन; "मैंने उचित तरीके में रोटरेक्टर तथा इंटरेक्टर अधिष्ठापन का आयोजन करने के लिये कहा है, ताकि वें प्रेरित हो जाये। और मैं खुले दिल से सुझावों/प्रतिपुष्टि का स्वागत करता हूँ... आपसे भी, चाहे वह प्रतिकूल ही क्यों ना हो!"

भारत में रोटरी का भविष्य

भास्कर खुश हैं कि भारत, रोटरी संसार में बेहद अच्छी स्थिति में है। "हम ढाई से 4 अंचलों में विस्तृत हो रहे हैं। सो रो इं के 34 अंचलों मे से 4, भारत में होंगे। और अंचल 4,5 तथा 6 के कार्यभार को संभालने वाला अंतिम निदेशक मैं ही रहूँगा। RID मनोज केवल 6A का कार्यभार संभाल रहे थे, मैं 6B को भी संभाल रहा हूँ, जिसमें पाकीस्तान, बाँगला देश, मलेशीया, थाईलैंड, सिंगापूर, कंबोडीया तथा मायनमार आदि शामिल है। दो साल बाद यें देश अंचल 7 में चले जायेंगे।"

भास्कर और माला, मंडल 5330, यूएसए, की एक टीम, जब वे भारत में NID में भाग लेने आए थे की मेजबानी अपने घर में करते हुए।

लेकिन, उन्होने कुछ गंभीर लहजे में कहा, "हालाँकि दुनिया भर के रोटेरियनों में 10 प्रतिशत भारत में होने की वजह से हम वाकई सशक्त हैं, मैं यही कहूँगा कि भारतीय रोटेरियनों को और अधिक कार्य कुशल बनना है, ना केवल कार्य कुशलता बल्कि हमारी क्रियाशीलता और हमारी सहभागिता में भी सुधार ले आना है।"

सुधार ले आने के अवसरों के बारे में पूछने पर भास्कर ने कहा, "इन दिनों जहाँ कहीं मैं जाता हूँ मैं केवल रोटरी क्या है? और रोटरी क्यों? के बारे में ही बात करता हूँ। प्रधानत: यें ही सबसे ज्यादा जरुरी बात है। मैं उनसे कहता हूँ पहले संस्था के रूप में रोटरी को समझ लीजिये और फिर क्यों रोटरी? के सवाल का जवाब दीजिये। जब वें इन दो सरल सवालों का जवाब दे पायेंगे वें बेहतर रोटेरियन बन जायेंगे।"

सबसे आखिरी लेकिन उतना ही अहम सवाल जिसे सभी रोटेरियन पूछ रहे हैं: पोलियो के बाद अगला क्या है? इस बाबत में बोर्ड की राय क्या है? "खैर," भास्कर ने जवाब में कहा, "बोर्ड इस सवाल से पूरी तरह से वाकिफ है, लेकिन महसूस करता है कि पोलियो अभियान अब तक पूरा नहीं हुआ है और जब तक हम दुनिया को पूरी तरह से पोलियो मुक्त नहीं करा देते हमें पोलियो से अपना ध्यान नहीं हटाना चाहिये।"

एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

पोलियोप्लस में 'प्लस' क्या है?

डॉ. टी. जैकब जॉन

पोलियोप्लस में प्लस उन बीमारियों से भी बचाता है जिनका बचाव टीकाकरण से होता है जैसे डिप्थीरिया, खसरा, काली खाँसी आदि पोलियोप्लसमें प्लस' के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़िए यह आलेख

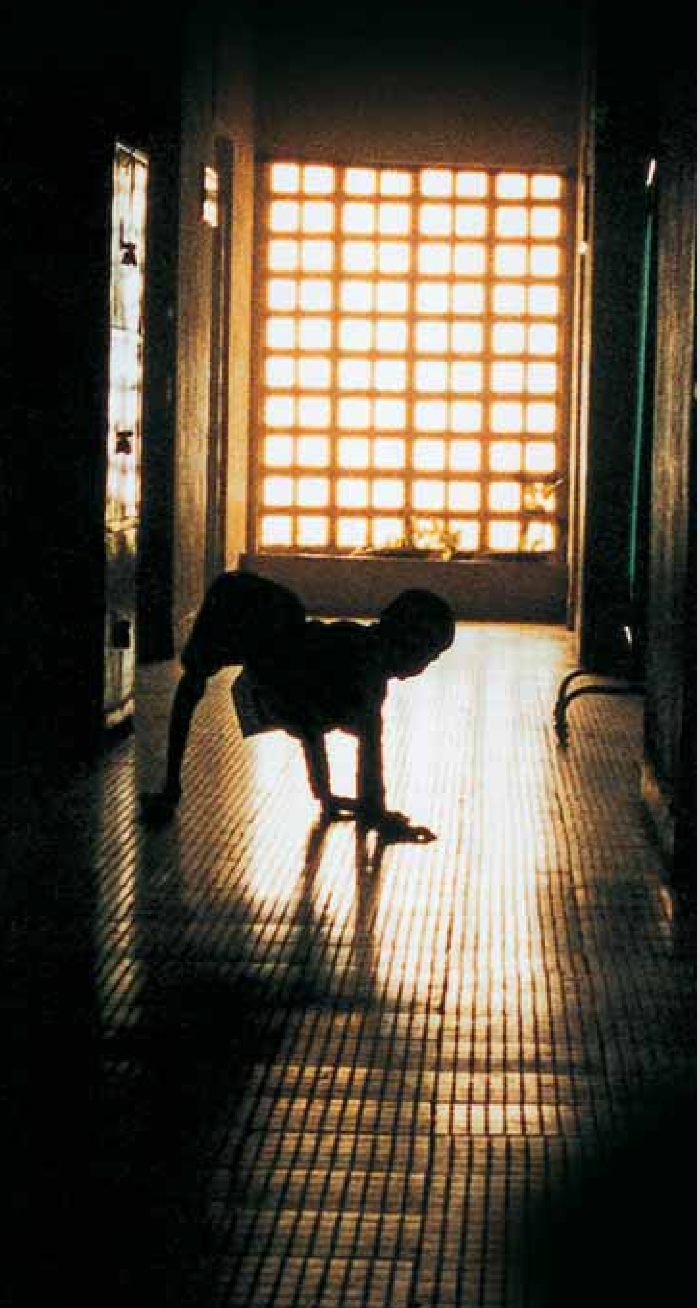

पोलियो उन्मूलन पर एक प्रगति-रिपोर्ट

हम सब जानते हैं कि रोटरी इन्टरनेशनल वैश्विक पोलियो उन्मूलन का प्रमुख हिमायती रहा है इसीलिए वैश्विक पोलियो उन्मूलन अभियान में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), यूनिसेफ (UNISEF) और यू एस सेन्टर्स फोर डीजीजेज कन्ट्रोल प्रिवेन्शन (CDC) के साथ रोटरी इन्टरनेशनल चौथा महत्वपूर्ण साझेदार बना। रोटरी के लिए पोलियो उन्मूलन' एक अनूठा और अभूतपूर्व अनुभव है। पोलियो उन्मूलन, इतिहास का सबसे लम्बा और अति महत्वाकांक्षी वैश्विक स्वास्थ्य कार्यक्रम है, जो अब लगभग सम्पूर्ण हो रहा है। तीन प्रकार के प्राकृतिक (या अत्यन्त खतरनाक) पोलियो वाइरस में, टाइप-2' वाइरस वर्ष 1999 में खत्म कर दिया गया था। टाइप-3' वाइरस नवम्बर, 2012 के बाद अभी तक कहीं भी नहीं देखा गया है। संभवतया उसे भी समाप्त कर दिया गया है, लेकिन हमे इसकी पुष्टि के लिए अभी कुछ समय और इंतजार करना होगा।

टाइप-1' पोलियो वाइरस अभी भी पाकिस्तान और अफघानिस्तान में विद्यमान है। भारत भी इसके आगमन की संभावनाओं के चलते इसकी चपेट में आ सकता है। इस जोखिम को खत्म करने के लिए हमें घनी आबादी वाले क्षेत्रों में टीकाकरण जारी रखना है। यद्यपि भारत में टाइप-1 पोलियो वाइरस जनवरी, 2011 में ही समाप्त कर दिया गया था, लेकिन फिर भी पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान अभी भी निरन्तर जारी है।

पोलियो उन्मूलन का दूसरा चरण

पोलियो उन्मूलन के दूसरे चरण को अंतिम लड़ाई'' (ENDGAME) भी कहा जाता है। दूसरा चरण, मुख्य रूप से टीके रूप में प्रयुक्त उस सजीव वाइरस को हटाने के लिए चलाया जा रहा है, जो ओरल पोलियो वैक्सीन (OPV) में रखा जाता है। इससे पोलियो-लकवा होने की संभावना रहती है, हालांकि ऐसा कभी-कभार ही होता है। अनुपातिक आधार पर फायदा देखें तो OPV ने उस समय बहुत ही अनुकूल कार्य किया जब खतरनाक (WILD) वाइरस के कारण पोलियो मरीजों की संख्या में भारी वृद्धि हो रही थी। एक बार खतरनाक (WILD) वाइरस का खात्मा हो जाए और इससे फायदे से ज्यादा जोखिम ना बड़ जाए इसलिए हमें OPV को हटा देना चाहिए।

जब टाइप-2 (WILD) वाइरस का प्रामाणिक रूप से खात्मा हो गया था, तब टाइप-2 वेक्सीन वाइरस को अप्रेल, 2016 में नाटकीय अंदाज में विश्वस्तर पर सम-सामयिक तरीके से हटा दिया गया था। अब हम केवल द्वि-संयोजक टीका (bivalent OPV-bOPV) देते है जिसमें टाइप-1 और टाइप-2 के वैक्सीन वाइरस होते हैं। विश्व स्तर पर जब टाइप-1 व टाइप-3 (WILD) वाइरस खत्म हो जायेंगे तो इव्च्ट' को भी हटा दिया जायेगा। जब वैक्सीन वाइरस हटा दिया जायेंगे तो एक प्रतिरक्षा-रिक्तता (immunity vaccum) पैदा हो जायेगी जो बहुत जोखिम वाली होगी, और इस स्थिति में पोलियो वाइरस की पुनर्वापसी के खतरे को रोकने के लिए इंजेक्शन में प्रयुक्त किये जाने वाले निष्क्रिय पोलियो वैक्सीन (IPV) का सुरक्षा कवच बनाना होगा।

भारत में राष्ट्रीय स्तर पर इंजेक्टेबल पोलियो वैक्सीन (IPV) का प्रारंभ भी कर दिया है। इस समय यह शरीर की त्वचा के भीतर 6 और 14 सप्ताह की आयु में दिया जाता है। लेकिन इस शेड्यूल में संशोधन किया जा सकता है।

पल्स पोलियो-पोलियोप्लस का अग्रदूत

पल्स इम्यूनाइजेशन' शब्द की खोज वेल्लोर (तमिलनाडु) में वर्ष 1981-83 में उस समय हुई जब रोटरी क्लब वेल्लोर और क्रिश्चियन-मेडिकल कॉलेज (CMC) द्वारा वेल्लोर को पोलियो मुक्त बनाने का कार्यक्रम हाथ में लिया गया। पूर्व रोटरी इंटरनेशनल अध्यक्ष क्लेम रेनॉफ ने 1982 में रोटरी कार्यकर्ताओं द्वारा वेल्लोर पल्स पोलियो इन्यूनाइजेशन के अन्तर्गत बच्चों को पोलियो दवा (OPV) पिलाते हुए देखने के लिए वेल्लोर की यात्रा की थी। आज प्लस पोलियो' सुपरिचित शब्द है। लेकिन हममे से कई नहीं जानते कि पोलियोप्लस' में प्लस क्या है? प्लस' का अर्थ पोलियो इन्यूनाइजेशन' में जुड़ने से है। इसे समझने के लिए हमें इतिहास में झांकना होगा और यह पता करना होगा कि रोटरी का जुाव किस तरह प्रमुख स्वास्थ्य परियोजनाओं के साथ हुआ्। परम्परागत रूप से, रोटरी द्वारा जो सेवा कार्य किये जाते है, उनमें पानी और स्वच्छता के साथ-साथ शिक्षा, आर्थिक विकास और सामाजिक विकास प्रमुख हैं। स्थानीय आवश्यकताओं के मध्यनजर कुछ मानव-कल्याण के कार्यक्रम जैसे चिकित्सा जाँच शिविर, आँखों के मोतियाबिंद के ऑपरेशन, पोलियो के कारण शरीर में आई विकृतियों को ठीक करने के लिए आर्थोपैडिक कैम्प आदि भी आयोजित किये जाते है। यह सभी कार्यक्रम क्लब और मंडल स्तर के है, विश्व-स्तर के नहीं है।

स्वास्थ्य(Health), भूख (Hunger), मानवीय (Humanity) - 3H कार्यक्रम

वर्ष 1978 में कनाडा के रोटरी सदस्यों ने कुछ धनराशि एकत्रित की और रोटरी क्लब मद्रास को खसरा (मीजल्स) के 78,000 टीके दिलाने हेतु रोटरी मैचिंग ग्रान्ट के लिए आवेदन किया। यह कार्यक्रम स्थिति को बदलने वाला था।

वर्ष 1978 में भारत सरकार ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा निर्मित टीकाकरण के विस्तारित कार्यक्रम (EPI) की शुरूआत की। इस एझख कार्यक्रम में BCG, DPT और OPV के टीके शामिल थे, लेकिन खसरे का टीका नहीं था। खसरा उस समय भारत में गंभीर बीमारी थी। खसरे से होने वाली मौतों के चलते ग्रामीण क्षेत्रों में तो 3 प्रतिशत से अधिक बच्चे 5 वर्ष की आयु तक भी नहीं पहुंच पाते थे। भारत को खसरे के टीकों की तुरन्त आवश्यकता थी।

हालांकि उस समय यह आम धारणा थी कि खसरा दैवीय प्रकोप'' है और इसी के चलते इस बात की आशंका थी कि ग्रामीण क्षेत्रों में लोग खसरे के टीके को ही नहीं बल्कि सभी EPI टीकों को अस्वीकार कर दें्।

रोटरी इन्टरनेशनल के पूर्व अध्यक्ष क्लेम रेनॉफ ने 1978 में रोटरी फाउण्डेशन की सिंगापुर में हुई मीटिंग में मुझे पहले दिन ही बता दिया था की कमेटी ने खसरा-टीकों के लिए प्रस्तावित कनाडा-मद्रास प्रोजेक्ट को अस्वीकार कर दिया है। यह बात उस रात क्लेम ने अपनी पत्नी को बताई कि यह इतना महत्वपूर्ण कार्य नहीं है जिसमें रोटरी को सहभागिता निभानी चाहिए्। क्लेम की पत्नी ने इस पर उनको झिकते हुए बताया कि जब उनके बच्चों को खसरा हुआ तो उन्हें बहुत परेशानी उठानी पड़ी। खसरा एक बहुत ही भयानक बीमारी है और कुछ रोटेरियन यदि बच्चों को इस बीमारी से बचाने के लिए कार्य करना चाहते है, तो रोटरी फाउण्डेशन को उनका उत्साहवर्द्धन करना चाहिए्।

अगले दिन इस बिन्दु को पुनः एजेन्डा में शामिल कर स्वीकृति प्रदान की गई्। इस कार्यक्रम को रेड मीजल्स प्रोजेक्ट' का नाम दिया गया और बाद में इसे 3H कार्यक्रम में लेकर पूरे तमिलनाडु को इसके अन्तर्गत कवर किया गया। रेड मीजल्स' प्रोजेक्ट तमिलनाडु में एक जबर्दस्त सफलतम कार्यक्रम था जिसे, रोटरी ने राज्य सरकार के स्वास्थ्य विभाग की सहभागिता के साथ संचालित किया। हालांकि उस समय देश में खसरे के टीके को लाइसेंस प्राप्त नहीं था लेकिन तत्कालीन मुख्यमंत्री एम.जी. रामचन्द्रन ने इसके उपयोग के लिए विशेष स्वीकृति प्राप्त की।

वर्ष 1979 में पूर्व रोटरी इन्टरनेशनल अध्यक्ष रेनॉफ ने 3H कार्यक्रम का प्रारूप तैयार किया, जिसके चलते कनाडा के रोटरी सदस्य 3H कार्यक्रम के तहत अधिक धनराशि जुटाने में कामयाब हुए। इन टीमों की बेहद मांग को देखते हुए इनकी संख्या भी 3.7 मिलियन कर दी गई। हमारी दादीअम्मायें हमें याद दिलाती हैं कि चेचक के टीके का लोगों ने जोरदार स्वागत किया, जबकि उस समय यह लोक मान्यता थी कि चेचक रोग देवी मरिअम्मन (उत्तर भारत में शीतला देवी) के प्रकोप से आता है। खसरे के टीके की अपार सफलता के चलते तमिलनाडु सरकार ने भारत सरकार को इसका लाइसेंस जारी करने के लिए प्रेरित किया साथ ही EPI में भी चरणबद्ध

बाएं से: डॉ जैकब जॉन, डॉ अल्बर्ट साबिन और PRIP कार्लोस कैनसेको (इवान्स्टन,1984)।

हमारी दादीअम्मायें हमें याद दिलाती है कि चेचक के टीके का लोगों द्वारा किस तरह स्वागत किया गया जबकि जन-मान्यता यह थी कि चेचक की बीमारी देवी मरिअम्मन और शीतला देवी के प्रकोप से आती है।

तरीके से 1985 से 1990 तक इस टीके को शामिल किया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO द्वारा स्वीकृत सभी तरह के टीकों को शामिल करते हुए EPI का नया नाम यूनिवर्सल इम्यूनाइजेशन प्रोग्राम' (UIP) दिया गया।

प्रथम 3H पोलियो इम्यूनाइजेशन कार्यक्रम फिलीपीन्स में आरंभ किया गया, जिसमें गर्भवती महिलाओं को पोलियो टीके साथ टिटनेस के टीके लगाए गए। इसके जरिए बच्चों में टीके से रोकी जाने वाली बीमारियों जैसे खसरा, पोलियो और टीटनेस से बचने की प्रतिरोधक क्षमता विकसित की गई। इस तरह टीकाकरण स्वतः ही रोटरी की प्राथमिकता बन गया।

'पोलियो २००५'और 'पोलियोप्लस कमेट'

रोटरी इन्टरनेशल के पूर्व अध्यक्ष रेनॉफ और दूसरे रोटरी नेता वर्ष 2005 में आने वाले रोटरी शताब्दी वर्ष को मनाने के लिए एक वृहद् कार्यक्रम हाथ में लेना चाहते थे। वे स्वास्थ्य से सम्बन्धित कार्यक्रम का शुभारंभ करना चाहते थे और उन्होंने इसे अमली जामा पहनाते हुए विश्व के बच्चों को पोलियो मुक्त विश्व का उपहार' देने का विचार रखा। उनकी इस परिकल्पना को रोटरी के शीर्ष नेतृत्व ने स्वीकार कर लिया और इस तरह वर्ष 1984 में पोलियो 2005 कमेटी' का गठन किया गया।

पोलियो 2005 कमेटी' की अध्यक्षता पीडीजी डॉ. जॉन सर्वर को दी गई। रोटरी इन्टरनेशनल के अध्यक्ष डॉ. कारलोस कैनसेको इसके सदस्य थे और OPV के रचियता डॉ. अल्बर्ट साबिन को विशेष आमंत्रित सदस्य बनाया गया। पूर्व अध्यक्ष रेनॉफ का आभारी हूँ कि मुझे भी इस कमेटी में शामिल किया गया। कमेटी में चर्चा दो बिन्दुओं पर थी। प्रथम, क्या रोटरी द्वारा दुनिया के कम और मध्यम आय वाले देशों के सभी बच्चों को अकेले अपने स्तर पर ही OPV उपलब्ध करवाये जाने चाहिए अथवा विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और यूनिसेफ जैसे बड़े संगठनों के साथ जुड़कर विश्वस्तर पर EPI को सहयोग देना चाहिए। डॉ. साबिन ने मजबूती से अपना पक्ष रखते हुए कहा कि रोटरी के अकेले ही पूरी दुनिया में पोलियो इम्यूनाइजेशन का कार्य करना चाहिए। दूसरा, रोटरी को पूरी दुनिया के 5 वर्ष तक के बच्चों को अगले 5 वर्ष तक लगातार पोलियो की खुराक पिलाने के लिए कितना धन एकत्रित करना चाहिए?

अंतिम निर्णय यह हुआ कि रोटरी पूरी दुनिया के बच्चों की पोलियो से प्रतिरक्षा के लिए अग्रिम भूमिका निभायेगा, लेकिन अपरोक्ष रूप से EPI को भी सहयोग देगा। हमने कभी नहीं चाहा कि पोलियो से बचने वाले बच्चे डिप्थीरिया, खसरा और काली खाँसी जैसी टीकारोधी बीमारियां मौत का शिकार बनें। इसी क्रम में उक्त दृष्टिकोण के मध्यनजर कमेटी का नाम बदलकर पोलियोप्लस कमेटी' रखा गया और 2005 में आरंभ होने वाला वैश्विक रोटरी शताब्दी प्रोजेक्ट पोलियोप्लस' के नाम से जाना गया। प्लस' का मतलब बच्चों को टीके से बचाई जाने वाली सभी बीमारियों से सुरक्षित रखने हेतु रोटरी का सहयोग।

प्रारंभिक स्तर पर इसके लिए अनुमानित धनराशि 120 मिलियन डालर की आवश्यकता थी। रोटरी के इतिहास में पहली बार गैर-रोटेरियन और द्विपक्षीय दानदाता एजेंसियों को दान के लिए अपील की गई। वर्ष 1985 में दान की राशि ने 240 मिलियन डॉलर को पार कर लिया। रोटरी अब बाल स्वास्थ्य के क्षेत्र में

The UIP immunisation schedule

Age	Vaccines
Soon after birth	BCG, bOPV, hepatitis B vaccine (HBV)
6 weeks	bOPV, Pentavalent vaccine (DPT, HBV and Haemophilus influenzae b vaccine), IPV, Rotavirus vaccine, Pneumococcal Conjugate vaccine (PCV)
10 weeks	bOPV, Rotavirus vaccine, Pentavalent vaccine
14 weeks	bOPV, Rotavirus vaccine, IPV, Pentavalent vaccine, PCV
9 months	Measles-Rubella vaccine (MR), PCV
15-18 months	Pentavalent vaccine, MR

PRIP एम ए टी कैपरस भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह की सराहना करते हुवे। 1987 में पोलियोप्लस के लिए धन और जन जागरूकता बढ़ाने के लिए ग्यानी जेल सिंह ने एक वॉकेथोन का शुभारंभ किया । राष्ट्रपति सिंह ने PRIP कैपरस को 1,000 डॉलर का व्यक्तिगत योगदान दिया।

अग्रणी भूमिका निभाने के लिए चर्चा में थी। विशेष कर उन देशों में जहां पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्युदर अस्वीकार्य रूप से काफी अधिक थी।

पोलियोप्लस तथा वैश्विक पोलियो उन्ममूलन

ईमानदारी से कहें तो पोलिया प्लस कमेटी वास्तविक रूप से वैश्विक पोलियो उन्मूलन के लिए नहीं सोच रही थी। यह विचार 1998 में आया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने पूरी दुनिया को छह थकज क्षेत्रों में बांटा। जिसके अनुसार दक्षिण पूर्व एशिया, पश्चिमी प्रशांत महासागरीय अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप और पूर्व भूमध्यसागरीय क्षेत्र थे। अमेरिका क्षेत्र का प्रबंधन पेन अमेरिका हैल्थ ऑरगेनाईजेशन (PAHO) के अन्तर्गत था। पोलियोप्लस कमेटी द्वारा विश्व के विभिन्न देशों में पाँच वर्ष के बच्चों की संख्या के अनुपातिक आधार पर अनुदान देने के निर्णय को ज्यादा समय व्यतीत नहीं हुआ, तभी PAHO ने 1985 में एक फैसला करते हुए यह लक्ष्य निर्धारित किया कि वह वर्ष 1990 तक अमेरिका को पूर्णतः पोलियो मुक्त कर देगा और उसने पोलियो उन्मूलन के अभियान को तेजी से आरंभ करने के लिए अनुदान भी हासिल कर लिया।

PHO के कदम और प्रगति से प्रेरित होकर WHO ने वैश्विक पोलियो उन्मूलन का एक कार्यक्रम का प्रस्ताव तैयार किया इस प्रस्ताव को वर्ष 1988 में विश्व स्वास्थ्य एसेम्बली में पारित किया गया। इस एसेम्बली में पूरी दुनिया के स्वास्थ्य मंत्री शामिल होते हैं, और इसमें लिए गए निर्णय को सभी देशों को मानना बाध्य होता है। तभी थकज को विश्व स्तर पर पोलिया उन्मूलन अभियान की देखरेख के लिए एक इकाई अपने मुख्यालय में स्थापित करने के लिए पोलियोप्लस' से अनुदान राशि प्राप्त हुई।

यह प्रसिद्ध भावनात्मक वाक्य कितना संतोषप्रद है अब और पोलियो नहीं, धन्यवाद रोटरी''- No more Polio, Thank you Rotary. आज मेडिकल छात्रों को पोलियो से पीति बच्चों की तस्वीरें दिखाई जाती है - वास्तव में पोलियोग्रस्त बालक अब भूतकाल की बात बन गई है।

अब प्लस' पर ध्यान देने का समय

जैसा वर्ष 1984 में डर था, पोलियो विकलांगता से बचाये गए बच्चे आज भी मौत का शिकार हो रहे हैं, हालांकि उनकी संख्या डिप्थीरिया, काली खांसी, खसरा और अन्य टीकारोधी बीमारियों से कम है। भारत में यूनिवर्सल इम्यूनाइजेशन प्रोग्राम' (UIP) को भारत सरकार द्वारा पूर्ण रूप से आर्थिक सहायता व प्रबंधकीय सहयोग दिया जाता है, वही इसका संचालन राज्य सरकारें करती हैं। फिर भी इसमें आंशिक सफलता प्राप्त हो रही है। एक वर्ष की आयु तक के बच्चों को पूर्ण रूप से टीकाकृत करने का राष्ट्रीय औसत आज भी लम्बे समय से 80 प्रतिशत से नीचे बना हुआ है। जबकि तमाम हालातों के बावजूद सभी बच्चों को टीकाकरण का समान लाभ देते हुए यह औसत 95 प्रतिशत से ऊपर लाने की आवश्यकता है। पूर्ण रूप से टीकाकरण से धनी देशों के बच्चों की तरह जीवन रक्षा, स्वास्थ्य का बचाव, अधिकतम शिक्षा प्राप्त करना, शारीरिक विकास आदि अनेक लाभ है।

आज मेडिकल छात्रों को पोलियो से पीति बच्चों की तस्वीरें दिखाई जाती है – वास्तव में पोलियोग्रस्त बालक अब भूतकाल की बात हो गई है।

PRIP एम ए टी कैपरस शरले व्हीटक्रॉफ्ट के साथ, शरले ने पोलिओप्लुस अभियान के लिए 1986 के रो ई साउथवेस्ट रीजनल कांफ्रेंस में 250,000 डॉलर के दान की घोषणा की थी ।

हम बोते बहुत हैं, लेकिन पूरी फसल नहीं काट पाते। हम सभी टीकारोधी बीमारियों से बच्चों को बचाने के लिए पर्याप्त रूप से निवेश करते है लेकिन आधारभूत सुविधाओं, कोल्ड चैन, स्टाफ और टीकों में समानुपातिक आधार पर लाभ नहीं उठा पाते। अभी भी कुछ गड़बड़ है। लोगों की समझ और टीकाकरण के लाभ में काफी दूरी है। पोलियोप्लस अनुभव के चलते यूनिवर्सल इम्यूनाइजेशन' (UIP) को पूर्ण सफलता दिलाने के लिए रोटरी कार्यकर्ता जन शिक्षण और सामाजिक जागरूकता' में पारंगत है।

भारत में रोटरी के लिए एक अवसर और जिम्मेदारी

जैसा ऊपर देखा गया, भारत में टीकारोधी बीमारियों से बच्चों को बचाने के लिए एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम चल रहा है। हम भारत के सभी रोटरी सदस्यों के पास एक शानदार अवसर है कि हम सरकार के साथ मिलकर टीकाकरण का प्रचार-प्रसार कर आगे बायें ताकि हम हमारे बच्चों को बीमारियों से बचाकर उन्हें उत्तम स्वास्थ्य प्रदान कर सकें।

बीमारियों से बचाव की स्थिति में बच्चों की स्कूलों में उपस्थिति बढ़ती है और उनका शैक्षणिक स्तर भी सुधरता है। इससे भविष्य में ज्यादा रोजगार मिलने और आय में वृद्धि होने का लाभ मिलता है। परिवारों को भी टीकारोधी बीमारियों से ग्रसित बच्चों पर ज्यादा खर्च नहीं करना पड़ेगा और वे पैसे बचा सकेंगे। हम जानते है कि समाज में काम कैसे किया जाता है, हम जन स्वास्थ्य शिक्षा' और सामाजिक जागरूकता' के बारे में समझते हैं।

पोलियोप्लस' में प्लस' आज भी एक बड़ा एजेन्डा है। टीकाकरण के माध्यम से हम शिक्षा और सामाजिक विकास के लिए सेवा कार्य कर पायेंगे। मैं रोटरी के दूरदर्शी नेतृत्व जैसे क्लैम रेनॉल्फ और कार्लोस केनसेको को धन्यवाद देता हूँ।

लेखक, रोटरी क्लब वेल्लोर के पूर्व अध्यक्ष हैं, एक व्हाईरोलोगिस्ट है, और रोटरी अंतरराष्ट्रीय के पोलियोप्लस समिति के संस्थापक सदस्य भी हैं

पानी को पवर्त पर लेकर जाना

जयश्री

ताराभाई घोलप कहती है, "यह एक ऐसे स्वपन के समान है जिससे मैं जागना नहीं चाहती हूँ। इस गाँव में एक वधु के रूप में आने के बाद 50 वर्षों में पहली बार अपने दरवाजें पर पानी को देखकर अपनी खुशियों और कृतज्ञता का वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं थे।''

सिताभाई वाडेकर कहती है, मफ्इससे पहले, हमें पहाडी से उतर कर नीचे जाना पड़ता था, सिर पर मटका रखे हुए अपनी कलाईयों से उन्हें सँभालते हुए किसी तरह से हाफंते हुए पानी लेकर चढ़ना पड़ता था। इससे हमारे संपूर्ण शरीर में दर्द होने लगता था, और हमारी सारी उर्जा समाप्त होने के कारण और हम थक और श्रांत-क्लांत हो जाती थी और हमारे लिए घरेलू कार्यों को करना असंभव था।फ्फ परंतु अब वह अपने घर के निकट लगे हुए नल से अपना मटका भर कर खुश है। और अब, उनकी बेटी अपने अध्ययन पर अधिक समय और उर्जा का व्यय कर सकती है।

ये महिलाएं महाराष्ट्र में सह्याद्री श्रृंखला पर स्थित ओहोली, एक 400-वर्ष पुराने गाँव की निवासी है। यह गाँव अपने मंदिर के लिए अधिक प्रतिष्ठित है जहां किशोरावस्था में छत्रपति शिवाजी ने मराठों के लिए एक अलग राज्य स्थापित करने की सौगंध खाई थी। यहाँ 121 घरों के 600 ग्रामीणों के लिए जीवन कठिन था क्योंकि पानी के लिए कोई पाइप नहीं था और महिलाओं और लडकियों को पहाडी के आधार पर स्थित पानी के स्रोत से अपने दैनिक उपयोग के लिए पानी लाने के लिए लंबी दूरी की चढ़ाई करनी पड़ती थी। पानी की कमी के कारण, कृषि और पशुपालन पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, बच्चें स्कूल नहीं जा सके और महिलाएं अक्सर बीमार पड़ती थी। मंडल 3132, रोटरी क्लब वाई के पूर्व

एक परिवार अपने घर के आगे लगाए गए नल से पानी इकट्ठा करता हुवा।

दाएं : ग्रामीणों ने रोटेरियन स्वाती हर्केल (बाएं से चौथी) और पी डी जी मीना पटेल मंडल 6650 (दाएं से दूसरी) के लिए एक हात से बानी रजाई प्रस्तुत की ।

अध्यक्ष स्वाती हर्केल ने कहा, "पानी की कमी का डोमिनोज प्रभाव इतना अधिक था कि गांव मिट्टी, पशुधन या फसलों को नहीं बनाए रख सका, इसलिए बच्चों के लिए कोई दूध या दुग्ध उत्पाद उपलब्ध नहीं हो सका, इस कारण बच्चों को कुपोषण और थकावट जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा।"

स्वाति के नेतृत्व में क्लब के सदस्यों की एक यात्रा ने स्थिति को बेहतर ढंग से परिवर्तित कर दिया। उन्होंने अपने संसाधनों को एक साथ रखा, जल के लिए परियोजना तैयार की और वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन किया। क्लब ने मंडल 6650, ओहियो के पूर्व गवर्नर और जिला फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. मीना पटेल से संपर्क किया, जिन्होंने समुदाय की जरूरतों का आकलन किया और सिर्फ आठ घंटों में अपनी स्वीकृति प्रदान की।

रोटरी के आने से पहले बच्चे तलहटी से पानी लाया करते थे।

इस परियोजना की कुल लागत लगभग 33,000 डॉलर थी; स्थानीय समुदाय ने श्रमदान किया। यह परियोजना तीन चरणों में पूरी हुई थी।

पहले चरण में पहाडी की तलहटी में जल स्रोत के पास एक कुआं खोदा गया था। दूसरे चरण में, कुएं से पानी को पहाडी के तलहटी में स्थित एक जलाशय में लाने के लिए पाइप लाइनें बिछाई गई। अंतिम चरण में, गांवों के दरवाजे तक पानी लाने के लिए गांव में पाइप लाइनें बिछाई गई। यह पूरी परियोजना पांच महीनों में पूरी हुई थी। इस अमूल्य उपहार से खुश, ग्रामीणों ने स्वाति और मीना को उपहार में हाथों से बुना रजाई दिया, जो कि उगते हुए सूर्य का प्रतीक है, वे विशेष रूप से इस अवसर के लिए अमेरिका से आए थे।

पानी की उपलब्धता ने ग्रामीणों के लिए एक महान उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया है क्योंकि राज्य सरकार ने 60 पक्के घरों के निर्माण को मंजूरी दे दी है।

स्वाति कहती हैं, "फअब जब लोगों को पानी मिलता है, हम उन्हें औषधीय और फल देने वाले पौधों के बीज और पौधे उपलब्ध करा रहे हैं ताकि वे अपनी भूमि को आय-सृजन के लिए उपयोग कर सकें।" क्लब के रोट्रैक्ट्स क्लब के स्वयंसेवक उनकी खेती में सहायता करेंगे।

वह कहती है, रोटरियनों ने बच्चों को साइकिल भी उपलब्ध कराया है जिसका उपयोग बच्चें 4 किमी दूर टिटेगढ गांव में स्थित स्कूल आने-जाने के लिए करते है। उन्होंने गांव के प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के मध्य शैक्षिक टेबलेट भी वितरित किया हैं, उस स्कूल में "तख तक कक्षाएंफ हैं, लेकिन उन्हें पढ़ाने के लिए सिर्फ दो शिक्षक हैं। टैब्स शेष छात्रों को पाठ उपलब्ध कराएगा, जब शिक्षक किसी अन्य कार्य में व्यस्त रहेंगे।"

रोटरी क्लब वाई ने एकीकृत ग्राम विकास योजना के अंतर्गत आंगनवाडी के लिए वॉटर प्यूरीफायर उपलब्ध कराया है जबकि घरों को गैस स्टोव उपलब्ध कराया है और विभिन्न प्रकार के विकासात्मक कार्यों को शुरू किया है। ■

हमें क्लबों में गुणवत्ता चाहिए, ना की संख्या

जयश्री

चलिए अगले वर्ष के लिए अपना ध्यान संख्या से गुणवत्ता की ओर केन्द्रित करें। हमें हमारी सदस्यता के लिए सम्मानित किया जाता है। चलिए तो फिर संगठन को ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले रोटरियनों, अच्छे नेतृत्वकर्ताओं की तरह भी सम्मानित हो। चलिए आगे बड़े और पिछले पाँच वर्षों में हासिल की गई उपलब्धि को बनाए रखने में क्लबों को मजबूती प्रदान करें।"

इन प्रेरणात्मक शब्दों के साथ, आरआईडीई सी.भास्कर ने चेन्नई में आयोजित क्षेत्रीय नेतृत्व सम्मेलन को शुरू किया। यह ज़ोन 4, 5, 6A और 6B के सात क्षेत्रीय नेतृत्वकर्ताओं - आरपीआईसी राजादुरै जी. माइकल और थाईलैंड के आरपीआईसी चैरत प्रसेरत्लम (ज़ोन 6B), आरसी एच. राजेन्द्र राय और अशोक गुप्ता, ईएमजीए अशोक पंजवानी और ईएमजीए के. पी. नागेश एवं आरआरएफसी अविनाश पोटदार - के लिए भाग लेने वाली एवं विचारावेश कार्यशाला थी। गुणवत्तापूर्ण रोटरियनों एवं अधिक महिला सदस्यों के आगमन, और रोटरेक्टरों एवं इंटरैक्टरों की बेहतर नियुक्ति ने सभा के रंग को जमाया।

भास्कर ने क्षेत्रीय नेतृत्वकर्ताओं से उनके प्रतिनिधियों से घनिष्ठता बेहतर करने पर ज़ोर दिया क्योंकि अगले स्तर पर जाने के लिए उनकी अनुशंसा महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने कहा, "जब तक वे प्रदर्शन नहीं करेंगे, तब तक आप अच्छे परिणाम नहीं ला सकते।"

वर्तमान क्लबों को मजबूत बनाकर और कमज़ोर क्लबों में अधिक सदस्यता को जोकर या उनका मज़बूत क्लबों के साथ विलय करके सदस्यता द्वारा क्लबों को मज़बूत करने पर ज़ोर होगा। भावी गवर्नरों के लिए मंडल बैठकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम होना होगा। उन्होंने कहा, "सभी निर्वाचित गवर्नरों को प्रशिक्षित करना चाहते है। आरसी, आरपीआईसी और आरआरएफसी या उनके सहायकों, को सदस्यता, सार्वजनिक छवि, अनुदान प्रबंधन और टीआरएफ को योगदान देने जैसे विषयों पर सत्रों के लिए आवश्यक रूप से स्रोत वक्ता होना होगा।"

जब राय ने टिप्पणी की कि अधिकांश क्षेत्रीय नेतृत्वकर्ताओं को पीईटीएस/एसईटीएस या मंडल सभा में आमंत्रित नहीं किया गया था, भास्कर ने कहा, कुछ डीजीई अपनी पसंद के लोगों को बुलाते है और कुछ मंडलों में, प्रशिक्षण 30-45 मिनट तक चलता है! ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें प्रशिक्षण की महत्ता की समझ नहीं है। हमें अगले बैच में इसे सुधारने की आवश्यकता है।

सदस्यता समूहों की शुरुआत करने के.नागेश के सुझाव का स्वागत करते हुए, जैसा कि मंडल 3190 में किया गया था, भास्कर ने कहा कि "ऐसे दो समूहों - क्रिकेट और संगीत - को प्रत्येक मंडल में स्थापित किया जायेगा, जबकि ज़ोन ६बी में संगीत और गोल्फ सदस्यता हो सकती है क्योंकि वहाँ क्रिकेट प्रसिद्द नहीं है। एक विशाल क्रिकेट

बाएं से: EMGAs अशोक पंजवानी और के. पी. नागेश, RC अशोक गुप्ता, RIDE सी भास्कर,RC एच. राजेंद्र राय, RPIC राजादुराई जी माइकल, RRFC अविनाश आर पोतदार और RPIC चेरेट प्रस्थतुलम (जोन 6 B)।

प्रतिस्पर्धा, "रोटरी प्रीमियर लीग, आईपीएल की तर्ज पर, को इस वर्ष के अंत तक अखिल भारतीय स्तर पर संचालित की जाएगी। आईपीएल के जैसे ही खिलायिों की नीलामी की जाएगी, और इकठ्ठा हुए अनुदान को सामुदायिक परियोजनाओं के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।"

उन्होंने गवर्नरों से आग्रह किया कि वे प्रेसिडेंट की विवरणिका की अनुवाद की गयी प्रति को भावी प्रेसिडेंटों को वितरित करें ताकि यह क्षेत्रीय भाषा में उनके लिए उपयोगी होगी। उन्होंने कहा, जबकि कुछ गवर्नर इसे गंभीरता से लेते हुए प्रतीत नहीं हो रहे है, बांग्ला प्रति की बांग्लादेश के प्रेसिडेंटों में बहुत धूम है।

स्थानीय समुदाय की आवश्यकतायें

भास्कर ने स्थानीय समुदाय की ज़रूरतों को प्राथमिकता देने के लिए क्लबों से अनुरोध किया। यदि हम स्थानीय मुद्दों पर से ध्यान खोते है, तो समुदाय में हमारी छवि धूमिल हो जाएगी। क्लबों को एक नीचे-से-ऊपर की पहुँच अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, उन्होंने कहा कि ऊपर-नीचे पहुँच का खतरा यह था कि क्लब अंत में कुछ भी उपयुक्त या समुदाय की वास्तविक ज़रुरत के मुताबिक नहीं करते थे। शुरुआत में रोटरी क्लब समुदाय की ज़रूरतों पर ध्यान देने एवं उनकी पूर्ती करने के लिए बनाये गए थे। आपको क्लब प्रेसिडेंटों के दिमाग में इस परिवर्तन को लाना है। और परियोजनाओं' को केवल रिकॉर्ड स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित मत कीजिये।

रोटरेक्ट और इंटरैक्ट क्लब

भास्कर ने समन्वयकों से रोटरेक्ट और इंटरैक्ट क्लबों को नवीनीकृत करने एवं उन्हें अधिक संगठित करने का आग्रह किया। "उनमें मार्गदर्शन की कमी है। गवर्नरों को क्लब स्तर पर रोटरेक्टर-बने-रोटरियन को अध्यक्ष नियुक्त करने का सुझाव दीजिये; रोटरेक्टर उनसे बेहतर तरीके से जुंगे।" रोटरेक्टरों को रोटरियन बनने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, राय ने न्यूनतम उम्र सीमा को 30 से 35 करने का सुझाव दिया, क्योंकि "वे तब आर्थिक रूप से सशक्त होंगे, जिससे कि उनका रोटरी में पारगमन सरल होगा।" डीआरआर को प्रशिक्षित करने के लिए रोटरी के ज़ोन इंस्टिट्यूट की तर्ज पर एक संभाग संस्थान के संगठन के सुझाव का स्वागत किया गया।

इंटरैक्ट क्लबों की प्रत्यक्ष परियोजनाओं में कमी पर बल देते हुए, भास्कर ने 'स्वच्छ भारत' विषय वस्तु को और हाथों की धुलाई को उनकी आगामी वर्षो की मुख्य परियोजना होने का सुझाव दिया।

रोटरी में महिलाओं के लिए, 21 प्रतिशत के वैश्विक औसत के मुकाबले, भारत में केवल 7 प्रतिशत महिला सदस्य है। गेटेड समुदायों में रोटरी क्लबों की स्थापना, महिलाओं की सक्रिय भूमिका में नियुक्ति और अधिक महिलाओं को नियुक्त करने के लिए मंडल/क्लब स्तर पर विशेष सम्मान जैसे कुछ सुझाव थे।

प्रसेर्त्लुम ने कहा कि उनके मंडल 3350 में 43 प्रतिशत महिला रोटरियन है। "लोग अक्सर रोटरी और लाटरी' को लेकर भ्रमित हो जाते है और सोचते है कि महिलाओं को शामिल करने से एक क्लब कमज़ोर हो जाएगा; मगर हमारी सार्वजनिक छवि दल द्वारा मजबूत ब्रांड रोटरी को बावा देने के कारण, हर साल मेरे क्लब से करीब पाँच महिलाएं जुड़ती है।"

टीआरएफ अनुदान

बे उपहारों और एकेएस अनुदानों को आकर्षित करने के लिए, पंजवानी ने अक्षय निधि दान और सीएसआर अध्यक्षों को व्यवस्थित ढंग से प्रशिक्षित करने का सुझाव दिया। भास्कर ने आगे कहा कि इन नेतृत्वकर्ताओं को आदर्श पात्रता कसौटी पर खरा उतरना चाहिए और ईएमजीए एवं आरआरएफसी की भूमिकाओं को स्पष्ट परिभाषित किया जाना चाहिए ताकि अनुलिपिकरण ना हो। टीआरएफ के अनुदानों को बावा देने के लिए टीआरएफ और सीएसआर रात्रिभोज अन्य प्रचार संबंधी योजनायें थी जिसका सुझाव दिया गया था।

जब राय ने कहा कि 'माय रोटरी' के अंतर्गत पंजीकृत रोटरीयन बहुत गरीब थे, भास्कर ने समझाया की प्रदर्शन एवं अनुस्थापन की कमी वेबसाइट के अल्प उपयोग के मुख्य कारण है। वह चकित थे कि कितने पूर्व गवर्नरों का 'माय रोटरी' के अंतर्गत पंजीकरण हुआ है।

रोटरी समाचार चैनल

एक उत्कृष्ट रोटरी समाचार चैनल के सृजन से विविध मानव कल्याण परियोजनाओं की झलकियों का प्रदर्शन, रोटरी जिंदगियां बदलती है', विषय पर एक संक्षिप्त फिल्म प्रतियोगिता जो छात्रों और आम लोगों के लिए खुली हो, रोटरी के समर्थन में फ़रवरी में एफएम बैंड का उपयोग और रोटरी की सालगिरह का उत्सव मनाने के लिए देशव्यापी मैराथन कार्यक्रम का आयोजन, बे दानदाताओं को प्रस्तुत करते हुए क्रियाशील लोग' होर्डिंग जिसका तरंगनुमा प्रभाव होगा, आरपीआईसी राजादुरै माइकल द्वारा दिए गए कुछ सुझाव थे ताकि रोटरी की प्रत्यक्षता को बेहतर किया जा सके।

भास्कर ने स्वयंसेवकों के दल का सुझाव दिया ताकि वे वैश्विक अनुदान परियोजनाओं के पूर्ण होने के बाद की प्रारंभिक जांच कर सके "केवल इतना सुनिश्चित करने के लिए कि हमारी व्यवस्था सही ढंग से चल रही है।" वे अपनी रिपोर्ट मुझे सौपेंगे। अगर चीज़ें सही ढंग से नही चली तो मंडल को जिम्मेदार ठहराया जायेगा।

'रोटरी सदस्यता पुस्तिका' जिसका संकलन सहायक रोटरी समन्वयक अजय काला द्वारा किया गया था का विमोचन सम्मेलन में भास्कर द्वारा किया गया।■

दिल्ली के SSB कार्यालय में।

बाधायें चूर-चूर हुई

रशीदा भगत

अर्द्धसैनिक बल की भारत की प्रथम महिला प्रमुख अर्चना रामासुन्दरम ने अपने बिंदास साक्षात्कार में पुलिस का मतलब केवल शारीरिक ताकत'' जैसे कई मिथकों पर किया प्रहार ...

उनकी रूचि, नृत्य, अभिनय और वाद-विवाद में थी। वह एक पारम्परिक पुलिस अधिकारी के लिए फिट' भी नहीं थी, न तो मजबूत और बलिष्ठ थी ना ही उनमें पुरूषोचित्त गुण थे। इसलिए प्रारंभ में उनकी भारतीय पुलिस सेवा' (IPS) में जाने की बिल्कुल इच्छा नहीं थी, लेकिन उनके पिता ने उन्हें इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया और नतीजा यह आया की आज उन्हें करीब 78,000 सुरक्षा दल वाले अर्द्धसैनिक बल सीमा सुरक्षा बल' (SSB) की भारत की प्रथम आई.पी.एस. महिला प्रमुख बनने का गौरव प्राप्त हुआ्।

आइये मुलाकात करते हैं, 1980 के बैच की तमिलनाडु कैडर की भारतीय पुलिस सेवा (IPS) अधिकारी अर्चना रामासुन्दरम से, जिन्हें हाल ही इंडिया टुडे' ने वर्ष की सर्वाधिक प्रेरक महिला'' के अवॉर्ड से नवाज़ा है। अर्चना का जन्म दिल्ली में हुआ, पर पिता के राजस्थान न्यायिक सेवा में जाने के कारण उनकी शिक्षा जयपुर में हुई, जहाँ उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य और अर्थशास्त्र में पोस्ट ग्रेजुएट किया। भारतीय पुलिस सेवा के साथ-साथ अर्चना का चयन भारतीय आर्थिकीय और सांख्यिकी सर्विस' में भी हुआ था, उनकी प्राथमिकता भी यही थी, लेकिन अपने पिता की सलाह पर उन्हें मजबूरन आई.पी.एस. चुनना पड़ा।

दूसरा झटका, उनके लिए तमिलनाडु काडर आवंटित होना था। उन्होंने बताया यह एक ऐसा राज्य था जिसके बारे में मैने केवल किताबों में पढ़ा था। मैं बहुत घबरा गई थी, मुझे वहाँ की भाषा भी नहीं आती थी, एक बार तो मैने नौकरी छोड़ने का मन भी बना लिया था'' वे डटी रही और आज 36 वर्ष बाद वे उसी तमिलनाडु राज्य से देश के उत्कृष्ट आई.पी.एस. अधिकारियों में से एक बेहतरीन अधिकारी के रूप में उभर कर सामने आई है।

प्रारंभिक कैरियर

अर्चना की पहली नियुक्ति मदुरै में हुई्। उन्होंने तमिल सीखी और अपने कार्यस्थान और उन लोगों को पसन्द करना शुरू किया जिन्होंने एक महिला के प्रति विशिष्ट सम्मान दर्शाया। वर्ष 1984 में उनका विवाह भारतीय प्रशासनिक सेवा (IS) के अधिकारी एस. रामासुन्दरम् से हुआ्। सलेम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (SP) के कार्यकाल के पश्चात 1985 में वे पुलिस अधीक्षक (SP) के रूप में पदोन्नत होकर वेल्लोर चली गई्।

उन्होंने बताया परिवार को बार-बार स्थान परिवर्तन की परेशानी से बचाने के लिए मैने कम महत्व वाले पदों जैसे पुलिस अधीक्षक, प्रर्वतन निषेध विंग (SP) आदि पर कार्य किया, क्योंकि उस समय हमारा बा बेटा बहुत छोटा था।

लेकिन कम-पसन्द ड्यूटी वाले प्रर्वतन निषेध विंग (PEW) ने अर्चना को महिला की दुर्दशा का अर्न्तज्ञान करा दिया। वे बताती हैं, जब मैं प्रवर्तन अपराधियों के ठिकानों पर छापा मारने जाती थी, तो देखती थी कि वहाँ महिलाओं को केवल इसीलिए गिरफ्तार कर लिया जाता था, क्योंकि वे उन अपराधियों की पत्नियाँ होती थी और तेजी से भाग नहीं सकती थीं। मैं इन गिरफ्तार महिलाओं को छोड़ देती थी। इसके लिए मुझे अपने जूनियर अधिकारियों

एक महिला के रूप में मैने कभी भेदभाव का सामना नहीं किया, लेकिन लैंगिक पूर्वाग्रह वहां हमेशा रहा है। उदाहरण के लिए मुझे पुलिस अधीक्षक (SP) के रूप में नीलगिरी जिला दिया गया, जिसे शान्त जिला माना जाता है।

अपने कुत्ते लियो और सिम्बा के साथ घर पर।

की नाराज़गी को भी नज़र अंदाज करना पड़ा, क्योंकि इससे उनकी उपलब्धियों के आंकड़ों में कमी आती थी।'' वहां अक्सर चर्चा होती जब भी अम्मा छापा मारने आती हैं, हम कुछ केस खो देते हैं।''

निश्चित रूप से एक पुलिस अधिकारी में एक महिला ही थी, जो इस तरह के निर्णय ले सकती है। मेरा मानना है कुछ हद तक यह लैंगिक हो सकता है लेकिन इतना जरूर है कि किसी भी अच्छे इंसान को इस बारे में सोचना चाहिए। आखिर ऐसी महिलायें जेल में अपने दिन इसलिए क्यों काटें, क्योंकि उन्होंने इन अपराधियों से विवाह किया हैं?'' हमारी व्यवस्था ही ऐसी है कि महिलाओं का बहुत कुछ उनके पतियों से जुा हुआ है।''

लैंगिक अवसाद

हमने आगे पुलिस के पुरूष अधिकारियों के अपनी उन महिला सहकर्मियों के प्रति नजरिये पर चर्चा की, जो उस ज़माने में बहुत कम संख्या में थी। अपने आत्म विश्लेषण के आधार पर अर्चना ने जोर देकर कहा एक महिला के रूप में मुझे किसी किसी तरह के भेदभाव का सामना नहीं करना पा लेकिन लैंगिक पूर्वाग्रह वहाँ हमेशा है। एक पुलिस अधीक्षक (SP) के रूप में मुझे नीलगिरी इसलिए भेजा गया क्योंकि उसे शांत जिला (Light District) माना जाता था। और आज, निश्चित रूप से स्थितियाँ बदल गई है। आज सर्विस में बहुत महिला अधिकारी आ गई हैं और उन्हें लम्बे समय तक उपेक्षित नहीं रखा जा सकता। उनको अच्छी जगहों पर नियुक्तियाँ देनी पड़ती हैं। हाल ही गया (बिहार) को दुष्कर जिला' (Tough District) मानते हुए वहां नक्सली उपद्रवियों को काबू में लाने के लिए सीमा सुरक्षा बल (SP) को तैनात किया गया है। वहाँ पुलिस अधीक्षक एक महिला है। ऐसा 20 वर्ष पहले नहीं होता था।

मैने पूछा, तो क्या वे अपना बचाव करने की कोशिश कर रहे थे? अर्चना ने दृता से कहा नहीं यह उनकी सोच और प्रवृत्ति है कि महिलायें बिगी हुई कानून व्यवस्था को नियंत्रित नहीं कर सकती। आज की इस विकसित अवस्था में भी मान्यता यह है कि पुलिस का कार्य केवल शारीरिक शक्ति पर आधारित है। हालांकि जैसा आजकल आन्दोलनों में हिंसक व्यवहार होता जा रहा है, उनको देखते हुए कुछ ताकत' की भी आवश्यकता होती है। मैने हाल की एक साक्षात्कार में कहा भी है कि पुलिस बल 'नाजुक प्रियजनों' का स्थान नहीं है। लेकिन निरीक्षणात्मक

एक नजर में

फिटनेस: मैं जैसी हूँ उससे भी ज्यादा फिट रहना चाहती हूँ। प्रतिदिन 30-45 मिनट योग करती हूँ और घूमती हूँ।

संगीत : मुझे संगीत पसन्द है, लेकिन भारतीय संगीत हल्का फुल्का, हमारे जमाने के हिन्दी गीत।

सिनेमा

बहुत कम देखती हूँ, मेरी सदा बहार पसंदीदा फिल्म तीसरी कसम' है। इसे बहुत ज्यादा पहचान तो नहीं मिली, लेकिन यह हम सब की कहानी है। इस फिल्म का एक-एक फ्रेम' उत्कृष्ट है।

भोजन

मैं शाकाहारी हूँ और बहुत सादा खाना खाती हूँ .... दाल रोटी। मुझे आलू बहुत पसन्द है जो फिटनेस' के लिए अच्छे नहीं है।

कुकिंग

मैं खाना बना सकती हूँ, लेकिन घर पर नहीं बनाती। मेरे पिताजी भी सर्विस में थे, इसलिए घर पर हमेशा स्टाफ रहता था लेकिन, जब मैं अमेरिका में थी, तो खाना मैने ही बनाया। जब मेरे पास समय होता है, तब मैं खाना बनाना पसन्द करती हूँ, लेकिन कढ़ाई-बुनाई मुझे पसन्द नहीं है। मैने अपने पति को कहा कि जब मैं रिटायर हो जाऊँगी तब रोजाना अलग-अलग डिश' बनाऊँगी। उन्होंने मुझे डरते हुए देखा।

फ़सल त्योहार के लिए पोंगल तैयार करती हुयी।

स्वाध्याय

मुझे कथा-साहित्य, ऐतिहासिक विषय-वस्तु, पसन्द है, लेकिन पढ़ने का समय नहीं मिलता। हमारे पास पुस्तकों का विशाल संग्रह है, लेकिन इन्हें पढ़ने के लिए सेवानिवृत्ति का इंतजार कर रहे हैं।

वर्तमान महिला पुलिस अधिकारी

चीजें सुधर रही है। आज की जूनियर महिला पुलिस अधिकारी (IPS) ज्यादा आत्मविश्वासी हैं। महिलायें सिस्टम' के साथ एडजस्ट' करें यह जमाना गया। अब वे चाहती हैं कि 'सिस्टम' उन्हें 'एडजस्ट' करे। अच्छी बात यह है कि आज उनकी संख्या बढ़ रही है और अब 'सिस्टम' उन्हें अच्छे पदों पर नियुक्ति देने में उदासीनता बरतने की स्थिति में नहीं रहेगा, और तब उन्हें उनकी योग्यता बिना किसी लैंगिक भेदभाव के आगे ले जायेगी।

स्तर पर नेतृत्व क्षमता का होना आवश्यक है, और शारीरिक शक्ति से ज्यादा आपके अन्दर कुछ' मजबूत होना चाहिए ... साहस और आंतरिक शक्ति।''

नीलगिरी के बाद अर्चना चैन्नई लौटी। वर्ष 1989-91 में दोनों पति पत्नी दो वर्ष के अध्ययन अवकाश पर अमरीका गये। वहाँ अर्चना ने साउथ कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से अपराध विज्ञान में मास्टर्स' किया। उन्होंने बताया वहाँ विभिन्न विषयों का प्रबंध, समाधान, अवधारणा और फोकस हमारे देश से अलग है और ज्यादा वैज्ञानिक है।''

वापसी पर उन्हें सतर्कता और भ्रष्टाचार निरोधक विभाग के पुलिस अधीक्षक (SP) जैसे महत्वपूर्ण विभाग में नियुक्त किया गया। बाद में उप महा निरीक्षक (DIG) मुख्यालय पर पदोन्नति हुई। ''मैने जब उनकी विविध नियुक्तियों और मिलेजुले कैरियर पर टिप्पणी की तो उन्होंने चट से जवाब दिया, ठीक है, इसका बहुत ही उदार-जवाब है महिलायें अक्सर पारिवारिक कारणों से बहुत की कम महत्व की नियुक्तियाँ चुनती हैं। पुरूष ज्यादा बेहद कानून-व्यवस्था वाली नियुक्तियों को पसन्द करते हैं जिन्हें ज्यादा प्रतिष्ठित और ताम-झाम वाला माना जाता है।''

चमक-दमक और अभिनन्दन

परिणामतः एक महिला के रूप में आपको बहुत खराब समझौतों के साथ निभाना पड़ता है आप किसी चर्चित पद पर नहीं हैं, इसके बावजूद आप का परिश्रम कर रहे हैं।'' अपनी उप महानीरिक्षक (DIG) मुख्यालय की नियुक्ति का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि यदि आप मुझसे पूछोगे कि कुछ

(ऊपर से दक्षिणावर्त) आतंकवादियों द्वारा मारे जाने वाले एक काडर के शवधार को कंधा देते हुए; उत्तर पूर्व के बच्चों के साथ; बेटे प्रवीर और कार्तिकेयन और पति एस रामासुंदरम के साथ घर पर; 1991 में यूनिवर्सिटी ऑफ़ सदर्न कैलिफ़ोर्निया से मास्टर ऑफ़ साइंस इन क्रिमिनोलॉजी डिग्री प्राप्त करते हुए ; 1973 में राज्य के शीर्ष पद के रूप में एक पुरस्कार प्राप्त करती हुयी; वेल्लोर में SP के रूप में; SSB प्रमुख के रूप में कर्तव्य पर; हेमा मालिनी से इंडिया टुडे पुरस्कार प्राप्त करती हुयी; प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के साथ ।

प्रभावशाली कार्य किया है तो मैं जरा सी भी कोई विशेष काम नहीं बता सकती, लेकिन मैने बहुत कड़ा परिश्रम किया था। कार्मिक कल्याण योजना ने बहुत समय लिया मेरी गर्दन में तेज दर्द रहने लगा। वे कहते है कि आप पूरे वक्त फाइलों पर झुकी रहती हैं, और आपको इस तरह के कार्यो से कोई पहचान भी नहीं मिलती है। व्यवस्था भी आपका शोषण करती है। मत भूलो कि मुख्यालयों के पदों पर कोई तामझाम और दिखावा नहीं है, और पुलिस में तामझाम और दिखावा बहुत जरूरी है।'' मेरी तरफ इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि ''जब हम ऑफिस में आ रहे थे तब बाहर की तरफ आपने खुद ने बहुत सारी तस्वीरें उतारी हैं।''

और उनका यह ऑफिस आकर्षक, प्रभावशाली, पॉवर को प्रतिबिम्बित करते, शानदार भवन में है, जहाँ उनके प्रवेश करने पर लाल और सुनहरी रंगों की टोपी पहने जवान बहुत खूबसूरती से सलामी दे

रहे हैं, भारत के तिरंगे के साथ लाल रंग का सीमा सुरक्षा बल का विशाल ध्वज, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को बधाई देती अर्चना की तस्वीरें ... वहाँ वह सारा तामझाम है, जिसके बारे में अर्चना ने बताया।

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के महानिदेशक के रूप में अपनी पूर्ववर्ती कार्य स्थल से वर्तमान पद की तुलना करते हुए वे मुस्कुरा उठी। उन्होंने कहा जब मैं वहाँ गई, स्टाफ में बहुत कम लोग थे, यहाँ तक कि सी.बी.आई. में भी इस तरह का लम्बा चौड़ा तामझाम नहीं होता, जबकि सीबीआई से लोग आकर्षित और प्रभावित होते है। कानून और व्यवस्था के क्षेत्र में लोगों की मदद के लिए आपके पास अवसर और क्षमता दोनों होती है, लेकिन दूसरे कार्य क्षेत्रों में, जैसे जन कल्याण, प्रशिक्षण आदि में आप किसी की बहुत ज्यादा सहायता नहीं कर पाते हैं।''

विचारों में खोये-खोये उन्होंने आगे कहा आज मैं अपने 36 वर्ष के कैरियर के पश्चात सेवानिवृत्ति होने वाली हूँ ... पाँच वर्ष बाद मेरे विचारों में और खुलापन आ जायेगा, लेकिन फिर भी एक महिला के रूप में हम भी इसी तरह की आसान पोस्टिंग पसन्द करते हैं क्योंकि हमारी अपनी मजबूरियाँ होती हैं। आप यह बिल्कुल नहीं चाहेंगे कि कोई आपको आधी रात को ड्यूटी के लिए बुलाये ... क्योंकि आपके बच्चे छोटे हैं और उन्हें माँ की देखभाल की जरूरत है। और, अक्सर देखा गया है कि जो चीजे आँखों से ओझल होती है, वे दिमाग से भी गायब हो जाती है'' एक उदाहरण देते हुए अर्चना ने बताया कि ''डी.आई.जी. हैडक्वार्टर के पद पर दो वर्ष काम करने के दौरान उन्होंने जब महानिदेशक से मुलाकात कर फील्ड पोस्टिंग का निवेदन किया, तो उन्होंने कहा तुम्हारे पति तो यहाँ है ... कैसी बेकार औरत है'' का भाव महसूस कराना चाहती हो, अर्चना ने इस पर कहा कि इन बातों से मुझे कोई मतलब नहीं है, मैं कुछ समय बाहर रह लूंगी, लेकिन यह मेरे रिकार्ड में अंकित होगा। इस पर महानिदेशक ने मुझे डी.आई. जी. सीबी-सीआईडी के पद पर नियुक्ति दी, लेकिन दुबारा वो ही मानसिकता वहाँ भी थी।''

अर्चना को राजनेताओं के आगे नहीं झुकने की भी बहुत कीमत चुकानी पड़ी। वेल्लोर में 1998 में डी.आई.जी. रहते हुए एक स्थानीय नेता के साथ हुई झप के चलते एक वर्ष की कम अवधि में ही उनका तबादला कर दिया गया। जब वे डी.आई. जी., नागरिक आपूर्ति (सिविल सफाई) के पद पर कार्यरत थी, तब उन्होंने पुलिस महानिदेशक से कहा सर यहाँ बहुत भ्रष्ट लोग है, मुझे नहीं पता क्या करना चाहिए? मुझे डी.आई.जी. प्रशिक्षण के रिक्त पद पर लगा दीजिए। वे अपनी कुर्सी से लगभग गिर पड़े और बोले अर्चना, ऐसा पहली बार हो रहा है जब कोई प्रशिक्षण' के पद पर जाने की इच्छा जता रहा है।' अर्चना ने बताया कि प्रशिक्षण' का कार्य उन्हें सदा से पसन्द रहा है।

सी.बी.आई. का अच्छा कार्यकाल

वर्ष 1999 में अर्चना को एक तरह से पुरस्कार के रूप में डी.आई.जी. सीबीआई के पद पर नियुक्ति मिली, जहाँ उन्होंने कारपोरेट घोटालों जैसे कई मामलों को खुलासा किया। वर्ष 2002 में उन्हें पदोन्नत कर सी.बी.आई. की आर्थिक अपराध शाखा (EOW) में संयुक्त निदेशक के पद पर भेजा गया। जहाँ उन्होंने विशेष रूप से कुख्यात तैलगी फर्जी स्टाम्प केस को प्रभावशाली तरीके से संभाला। उन्होंने बताया, यह बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य था, इसमें खूब आनन्द आया और हम उस रैकेट' को उजागर करने में कामयाब हो सके। वर्ष 1999 से 2006 तक का यह कार्यकाल बहुत उल्लेखनीय था और मुझे आज भी मेरी टीम के एक-एक सदस्य का नाम याद है।

फरवरी, 2014 में उनको नियुक्ति सी.बी.आई. के अतिरिक्त निदेशक के रूप में हुई, लेकिन तमिलनाडु सरकार ने उन्हें कार्यमुक्त नहीं किया। उन्होंने इस पद पर मई, 2014 में केवल इसलिए कार्य ग्रहण किया ताकि अनुशासनहीनता और निलम्बन के प्रकरण का मुकाबला कर सकें। इस मामले को बाद में केन्द्र सरकार और न्यायालय ने सुलझाया। लेकिन इन केस की छाप आज भी उनके दिलोदिमाग पर है। मेरा मानना था कि मेरे जीवन में इस तरह का कोई अध्याय नहीं जुड़े, लेकिन दुर्भाग्यवश मैं कुछ गलत फहमियों का शिकार हो गई। मैने यह स्वीकार कर

ऊटी में शहीदों के दिवस पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करती हुयी।

लिया है जीवन सदैव अपने अनुकूल नहीं रहता, और आप जब इस हकीकत को स्वीकार कर लेते हैं, तो जीना बहुत आसान हो जाता है।

सीमा सुरक्षा बल का कार्यक्रम

अर्चना फरवरी, 2016 में सीमा सुरक्षा बल (SSB) की महानिदेशक बनीं। पूर्व में इसका नाम स्पेशल सर्विस ब्यूरो था। यह एक अनूठा संगठन है, जिसकी स्थापना 1963 में हुई। करीब 78000 सदस्यों की इस मजबूत फोर्स की 2001 में केवल 25 बटालियन थीं, जो बकर आज 67 हो गई हैं। देश की सीमा के 6 अग्रिम मोर्चो और सात राज्यों (उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल, आसाम, अरूणाचल प्रदेश और सिक्किम) में तैनात यह फोर्स नेपाल और भूटान की सीमाओं की भी रक्षा करता है।

अर्चना बताती हैं, ''यह बहुत ही मुश्किल लेकिन रोचक जिम्मेदारी है।'' उन्होंने बताया, सीमा सुरक्षा बल सीमा-पार अपराधों जैसे मानव-तस्करी और नशीले पदार्थो का अवैध व्यापार, वन्य जीवों तथा वन-उपजों की स्मगलिंग आदि पर नियंत्रण करने का कार्य करता है। इस बल का अपना अनौपचारिक सूचना-तंत्र है। अभियान पर जाने के लिए अधिकृत और अनाधिकृत दोनों रास्ते काम में लिए जाते हैं। और चूंकि ये हमारे मित्रवत पड़ौसी है, अतः हमें संयम और सख्ती से कार्य करना होता है।''

देश में सीमा सुरक्षा बल की करीब 634 चौकियाँ और कार्यस्थल हैं, और अर्चना ने जवानों के लिए ट्रेनिंग के विशिष्ट कार्यक्रमों की शुरूआत की है। उन्होंने बताया - जो जवान दूरदराज के क्षेत्र में तैनात हैं और उनकी देखभाल करना हमारी प्राथमिकता है।'' इनकी शिकायतों के निराकरण की मॉनिटरिंग के लिए मैने अपने कार्यालय में एक प्रकोष्ठ की स्थापना की है। हाल ही सीमा सुरक्षा बल ने नेशनल स्किल डवलपमेंट कारपोशन के साथ एक सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके जरिए जवानों और उनके परिजनों के कौशल को विकसित किया जायेगा। परिवार मेरे साथ अच्छे से जुड़े हुए है क्योंकि पहली बार महानिदेशक और सीमा सुरक्षा बल वाइव्स वेलफेयर एसोसिएशन का अध्यक्ष एक ही महिला है।''

सीमा सुरक्षा बल नक्सली उपद्रवी क्षेत्रों में भी सक्रिय है, और जम्मू कश्मीर में उपद्रवियों से भी मुकाबला करता है। हाल ही अर्चना ने आतंकवादी हमले में शहीद हुए अपनी फोर्स के एक जवान के ताबूत को अपने कंधों पर उठाया, उनकी इस तस्वीर को मीडिया में खूब प्रचार-प्रसार मिला। लेकिन, अर्चना अपनी मौजूदा जिम्मेदारी में जिस कार्य को सर्वाधिक पसन्द करती है वह है सिविक एक्शन कार्यक्रम। ''हमारे पास कल्याणकारी कार्यक्रमों के लिए बजट है और हम चिकित्सा शिविर, प्रशिक्षण तथा अन्य कार्यक्रम जैसे आत्मविश्वास-निर्माण आदि आयोजित करते हैं।''

सीमा सुरक्षा बल ने हाल ही 533 लोगों को मानव-तस्करी और बाल-श्रम से बचाया है। अर्चना बताती है कि हम गैर सरकारी संस्थाओं (NGO) के साथ काम करते हैं और ऐसे पीड़ित हमारे क्षेत्र में मिलते हैं तो हम उन्हें बचा लेते हैं।''

तमिलनाडु में सी.आई.डी. की अपराध शाखा के अतिरिक्त महानिदेशक पद पर कार्य करने के दौरान मानव तस्करी को रोकने के लिए कार्य करना अर्चना का जुनून रहा है। उन्होंने राज्य में मानव-तस्करी विरोधी इकाइयों का गठन किया। बाल-अधिकारों के लिए काम करना भी उनकी रूचि का विषय है, और उन्हें उम्मीद है कि वे रिटायर होने के बाद इस क्षेत्र में भी काम करेंगी।

अर्चना केन्द्र सरकार के प्रति आभारी है कि उन्हें भारत के सर्वश्रेष्ठ अर्द्धसैनिक बलों में से एक सीमा सुरक्षा बल के प्रमुख का दायित्व मिला। उनका कहना है हालांकि मेरा मानना है कि यह जिम्मेदारी मेरे जेन्डर, वरिष्ठता और सेवा के रिकॉर्ड को देखते हुए कम है।'

और अंत में उन्होंने कहा: मुझे बहुत अच्छा लगता है कि मैने कॉच के उस आवरण को तोड़ा है, यह जो भविष्य में मेरी जूनियर आई.पी.एस. महिला अधिकारियों को इस तरह के ऊँचे पदों पर जाना आसान कर देगा।''

चत्र: विशेष व्यवस्था
और रशीदा भगत
एन कृष्णामूर्ति द्वारा रूपरेखा

महिलायें माँगे; बूढे कतराये!

रशीदा भगत

जब कि कर्नाटक में एक छोटे से गाँव में रहने वाली 11-वर्षीय लडकी के. पी.सुचित्रा, अपने जोशीले अभियान के जरिये गाँव के सारे घरों में शौचालय बनवाये जाने तथा खुले खेतों में लडकियों का मल त्याग करने के खतरों, के बारे में जोर देकर असरदार काम कर रही है, रोटरी क्लब मद्रास, मंडल 3230 एक बिलकुल विपरीत मानसिकता का प्रतिरोध कर रहा है।

कभी चेन्नै का एक प्रधान क्लब जो भारत में पहली बार खसरा और पोलियो टीकों को ले आने में अग्र में था, रोटरी क्लब मद्रास एक तरह की मंदी से बाहर आकर कुछ सालों से सामुदायिक कल्याण कार्यक्रमों में काफी सक्रिय हो गया है।

पिछले कुछ सालों से, क्लब चेन्नै के पास के कुछ गाँवों में लगातार अनेक सामुदायिक सेवायें कार्यांवित करते आ रहा है; इनमें मुख्य गतिविधि है जल एवं स्वच्छता तथा जल संरक्षण। क्लब के 2015-16 वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय निदेशक सुंदरेसन् रवि ने बतलाया कि क्लब का उद्देश्य है इन गाँवों को 2016-17 रोटरी वर्ष के दौरान खुले में ''मल त्याग करने'' (ODF) से मुक्त बनाना। और 2014-15 के दौरान जब कि अमरम्पेडु में 100 शौचालय बनवाये गये 2015-16 के दौरान कीमलूर गाँव में 107 शौचालय बनाये गये। ''इन दोनों गाँवों में 90 प्रतिशत से ज्यादा लाभार्थी शौचालयों का इस्तेमाल कर रहे हैं। अब उनकी सेहत और सफाई से जुडी आदतें काफी बेहतर हो चुकी है।'' पेरीयपुलीयुर गाँव में 175 अतिरिक्त शौचालय बनवाये गये हैं जब कि पैयनूर गाँव में 205 शौचालय बनवाये गये।

रोटरी क्लब मद्रास के 2015-16 वर्ष के अध्यक्ष ए. एस. वेंकट रमणी का कहना है कि इस तरह के बाँध काम तथा इतर काम शुरू करने से पहले ''हम पहले गाँववालों के बीच जागृति पैदा करते हैं। शौचालय बनाना आसान है लेकिन लोगों की मानसिकता को बदलना आसान नहीं होता।''

रवि ने कहा, ''पहले हमें शौचालयों की जरुरत को पैदा करना होता है; उनके मन में इस बात को बिठाना होता है कि शौचालय उनके दैनिक जीवन का अहम हिस्सा है। फिर वें खुद आकर हमसे गुजारिश करने लगते है; वें खुद इसके लिये गुजारिश ना करें तो उन्हे ऐसा कुछ देना फिजुल होगा जिसका वें कभी उपयोग ही नहीं करने वाले हो। लेकिन एक बार आप उनके दिमाग में यह बात बिठा दें तो आसानी से उनके 'बर्ताव में बदलाव' आ जायेगा जो जरुरी है।''

रोचक बात यह है कि, इस तरह के 'बर्ताव में बदलाव' को ले आते समय यें रोटेरियन, गाँवों की आबादी को विभाजित कर लेते हैं जहाँ वें चार भिन्न वर्गों में काम कर रहे हैं। अठारह साल से कम उम्र के बच्चे, तीस साल की उम्र तक के युवा बालिग, 30-60 वर्ष का आयु वर्ग तथा 60 साल से अधिक उम्र वर्ग। ''पहले तीन वर्ग, खासकर महिलायें, अपने बर्ताव को तेजी से बदल लेते हैं। ज्यादातर देहाती महिलाओं के घरों में शौचालय नहीं होते और जाहिर है वें दिन के दौरान खुली जगहों में मल-मूत्र त्यागने में संकोच करती है; इस वजह से उनके मूत्र मार्ग में हर तरह का संक्रामण हो जाता है। और फिर वें लैंगिक उत्पीडन का भी आसानी से शिकार हो जाती है। वें ही सबसे पहले शौचालयों की माँग करने वाली होती हैं। लेकिन बूढे मर्दों की, यानि जो 60 साल से ज्यादा उम्र के हो, आदतों में बदलाव ले आना बेहद मुश्किल है,'' रवि ने कहा।

अनिच्छुक बूढे मर्द

रोटरी क्लब मद्रास ऐसी परियोजनायें करता है जो गाँवों को जऊक्र बनाने को सुनिश्चित करता है। सो यह सुनिश्चित करने यें रोटेरियन इतने कुशल तरीके से काम कर रहे हैं कि गाँवों में बनवाये गये शौचालयों का वाकई इस्तेमाल

रोटरी नगर में रोटरी क्लब मद्रास द्वारा चलाए जा रहे सामुदायिक केंद्र में महिलाएं सिलाई और कढ़ाई का प्रशिक्षण प्रप्थ करती हुयी।

PRIP के आर रवीन्द्रन गुम्मिडिपूंडी मंडल के एक गांव को खुले में मलत्याग से मुक्त' घोषित करते हुए । (बाएं से) क्लब अध्यक्ष डॉ येन वी अरुलमोल्हि वर्मन, पूर्व अध्यक्ष ए एस वेंकट रमणी, क्लब के अंतराष्ट्रीय डायरेक्टर सुंदरेशन रवि, डॉ पी श्रीनिवासन, डी जी गण नटराजन नागोजी (3230), एच आर आनंत (3190) और उमा वर्मन ।

किया जा रहा है और लगभग 1200 की आबादी में से उन्होने 16 गाँववालों की पहचान की है, सभी बुजुर्ग मर्द जो शौचालयों का इस्तेमाल करने से मनाह करते हैं। ''हमने उनके नाम दर्ज कराये है और हम उन्हे कलक्टर के कार्यालय में ले जाते हैं जहाँ हमारे निवेदन पर स्वास्थ्य विभाग के लोग सफाई और आरोग्य के फायदों के बारे में उन्हे समझाते हैं और यह भी बतलाते हैं कि किस तरह शौचालयों का इस्तेमाल करने से वायु संक्रामित, जल संक्रामित और भूमी संक्रामित बीमारियों की रोकथाम की जा सकती है,'' रवि ने कहा।

और इतने सारे प्रयासों के बाद, इन 16 में से केवल 3 बुजुर्गों ने शौचालय का उपयोग करना शुरू किया है। ''बाकी के लोगों का कहना है कि सालों से वें खुली जगह में मल त्याग करते आ रहे हैं और अब अपनी आदतों को बदल नहीं सकते!''

रोटरी क्लब मद्रास के वर्तमान अध्यक्ष डॉ अरुलमोल्हि वर्मन का कहना है कि शौचालयों का उपयोग करने के बारे में लगातार गाँववालों को जागृत करने के संदेश पहुँचाने, क्लब 'नलंदाना' नामक गै स सं के साथ काम कर रहा है, जो शौचालयों का उपयोग करने की जरुरत पर जागृति पैदा करने नुक्कड नाटिकायें पेश करती है। ''इस गै स सं को इसलिये चुना गया था क्यों कि बेहतर स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिये शौचालयों का उपयोग करने के बारे में जागृति पैदा करने में वें अनुभवी हैं। सरकार 20 सालों से शौचालय बना रहा है लेकिन यदि आप लोगों के बर्ताव में बदलाव नहीं ले आयें और उन्हे शौचालयों का उपयोग करने पर राजी नहीं करायें, तो अनेक घरों में उन्हे भंडार घर बना दिया जाता है।''

उनका कहना है कि इस संस्था के जरिये तीन चरणों में बर्ताव में बदलाव लाया जाता है – पहले शौचालय बनाने से पहले, अगले उसके निर्माण के दौरान और शौचालय को पूरा करने के बाद।

> बूढे मर्दों की, यानि जो 60 साल से ज्यादा उम्र के हो, आदतों में बदलाव ले आना बेहद मुश्किल है।

रमणी ने कहा कि तब के डीजी सी आर राजू के सुझाव पर मियादी उपहार के रूप में दी गयी प्रत्येक 30,000 डॉलर की दान राशी को ग्लोबल ग्रैंट में परिवर्तित कर दिया गया। ''और काफी समय के शाँति काल के बाद हमारे क्लब को टीआरएफ से 160,000 डॉलर का अनुदान मिला और चूँकि हमारे पास पिछले साल के शेष 20,000 डॉलर भी थे, हम दोनों गाँवों में 206 शौचालय बनवाने के लिये 180,000 डॉलर का उपयोग कर रहे हैं।''

काफी पहले, रोटेरियन मार्कन देसाई ने गुम्मीडीपुँडी में अपनी 14 एकड की जमीन दी और ''हमने और 20 एकड जमीन दी, सो कुल 34 एकड से हम गरीब लडकों के आवास कलोनी की सहायता करते हैं; यें लडके वहीं पर ठहरते हैं और स्कूल जाते हैं। उनके पूर्वाधिकारी एस एन श्रीकाँत से शुरू करते हुये उनके क्लब ने गुम्मीडीपूँडी में 175 के आसपास शौचालय बनाये, जिससे शौचालयों की कुल संख्या 400 हो गयी है।

इसके अलावा, लडकों के आवासीय प्राँगण में 30 लाख रु की लागत पर दो बडे कुयें बनवाये गये है या गहरे कर दिये गये है, जहाँ गाँववाले भी आ-जा सकते हैं, ''क्यों कि मेरी कार्यावधि के दौरान विषयवस्तु थी जल संरक्षण। चालीस फीट की चौडाई तथा 22 फीट की गहराई के इन कुओं में पानी ऊँचे दर्जे का है और पुरवठा प्रचुर है; इस पानी से इस वर्ष के अकाल के समय 22 गाँवों को सम्मिलित करने वाले समूचे पंचायत के लिये पानी की जरुरत को पूरा कर दिया जा सकेगा।''

रवि ने आगे कहा, कुछ गाँव ट्रैक्टरों से पानी लेते है, ''लेकिन हम उन्हे केवल पीने के लिये पानी देते हैं, सिंचाई के लिये नहीं।''

निरंतरता

रोटरी क्लब मद्रास द्वारा शुरू की गयी परियोजनाओं के बाबत में सबसे ज्यादा प्रोत्साहजनक बात है उसकी निरंतरता। जैसा कि वर्मन कहते हैं ''रोटरी 1 जुलाई से शुरू होकर 30 जून को खत्म नहीं होती। हमे समुदाय कल्याण की खातिर इन परियोजनाओं

गांव में एक सांस्कृतिक प्रदर्शन के ज़रिये बच्चे स्वच्छता पर जागरूकता फैलाते हुए।

को जारी रखना है। सो, आगामी सालों में भी शौचालय बनाना और आदतों में बदलाव ले आना जारी रहेगा। मैं अगले साल के आगंता अध्यक्ष पी एन मोहन के लिये निधि इकठ्ठा कर रहा हूँ और अगले साल हम 250 और शौचालय बनाने की उम्मीद करते हैं।''

रोटरी नगर

रोटरी क्लब मद्रास द्वारा चलाई जा रही एक और निरंतर परियोजना है रोटरी नगर, ''और हम देश की आजादी के समय से ही, इसे चेन्नै के क्वीन मैरीज कालिज के पीछे एक छोटी सी बस्ती में करते आ रहे हैं,'' रमणी ने कहा। लेकिन अनेक समस्याओं की वजह से कुछ सालों के लिये परियोजना को लगभग बंद कर देने की नौबत आ गयी थी, लेकिन अब इन्हे सुलझाया गया है और इस साल, वर्मन का कहना है परियोजना को 'काफी बढ़ावा' मिलता हुआ दिखायी दिया। शाम को बस्ती के बच्चों के लिये स्कूल में कक्षा में सीखे सबकों के अलावा खास कक्षायें भी चलायी जाती है। ''इस बार हमारे पास 215 बच्चों के लिये पंजीयन किया गया जो हमेशा के मुकाबले ज्यादा है। हमने बी एड और एम एड किये 9 नियमित स्कूली शिक्षकों को नियुक्त किया है; हम उन्हे .वेतन देते हैं और तीन पालियों में कक्षायें चलायी जा रही है क्यों कि बच्चों की संख्या ज्यादा है।'' स्कूली परिक्षाओं में नतीजे अच्छे निकले है; अब इस केंद्र में CCTV कैमरायें रखी गयी है और 'बयोमीट्रीक' हाजिरी प्रणाली का भी पालन किया जा रहा है। ''इस ट्यूशन केंद्र में अब दूरस्थ स्थान की निगरानी करना संभव है जहाँ 'ब्रॉड ब्रैंड' के जरिये संपर्क किया जा सकता है,'' उन्होने कहा।

जब ये बच्चे स्कूल से 4:30 बजे आ जाते हैं, उन्हे फल, *सुंडल* (मटर, कश्मीरी चना आदि को उबालकर, बघार देकर बनाया गया अल्पाहार) या *चिक्की* जैसे पोषक तत्वों से पूर्ण आहार दिया जाता है। ''इरादा यह है कि इन बच्चों में सीखने की आदत डाली जाये और अब जब कि काबिल शिक्षक यहाँ पढा रहे हैं तो पालक भी दिलचस्पी दिखलाने लगे हैं। कक्षायें दो घंटे के हिसाब से दो गुटों में चलायी जाती है। लडके, लडकियाँ दोनों को अनुपूरक शिक्षण प्रदान किया जाता है।

दिन के दौरान महिलाओं के लिये सिलाई कक्षायें चलायी जाती है; ''अब यहाँ बेहद ज्यादा दाखिले देखे जा रहे हैं; अब 200 से ज्यादा आवेदकों को प्रतीक्षा सूची में रखा गया हैं; यहाँ के 40 प्रशिक्षार्थीयों को रोटेरियन रंजीत बख़्शी के परिधान फैक्टरी का दौरा कराया गया। वहाँ इनमे से सोलह प्रशिक्षार्थीयों ने आवेदन भेजा है; कई अपने घरों में से सिलाई का काम कर रही है और कुछ लघु उद्यमी बन गयी हैं।

एक उदार नियोजक

अब महिलाओं के लिये कंप्यूटर कक्षायें भी आयोजित की जा रही है। रमणी ने साधारण मध्यम वर्गीय परिवार से आयी एक महिला की मर्मस्पर्शी कहानी का बयान किया। ''उनके पास एक 20 वर्षीय लडकी लक्ष्मी घर काम करने के लिये रखी गयी थी और उन्होने सोचा यह लडकी तो हमेशा के लिये घर काम करने वाली नौकरानी बनकर नहीं रहने वाली है। सो उसने इस केंद्र के बारे में जाना और उसे कंप्यूटर कक्षा में दाखिल करा दिया।''

लेकिन क्यों कि उन्हे लगा कि इस लडकी को अकेले कक्षाओं में भेजना खतरे से खाली नहीं है, तो उन्होने खुद भी दाखिला ले लिया और दोनों ने मिलकर कंप्युटर में बुनियादी साक्षरता हासिल की! लक्ष्मी ने ''वाकई बखूबी कंप्यूटर सीख लिया और उसे एक अल्पकालिक नौकरी मिल गयी जिससे उसने रु4000 की अतिरिक्त कमाई कर ली,'' रमणी ने कहा।

चेन्नै के निकट सेलैयूर में, रोटरी क्लब मद्रास की 20,000 वर्ग फीट की सुविधा के साथ अपनी एक जमीन थी। अब वहाँ उन्नति नामक गै स सं के साथ मिलकर हाई स्कूल की पढाई को बीच में ही छोडकर जाने वालों को कौशल सिखलाया जाता है। ''हमने व्यवहार कुशलता में 50 ऐसे लडकों को प्रशिक्षित किया है और वें सभी, छोटे कार्यालयों में, फोटो कॉपियाँ निकालना आदि काम कर रहे हैं।'' बडे-बडे सिनेमा घरों में पॉप कॉर्न, सॉफ्ट ड्रिंक्स् और इतर खाने की चीजें बेचने के लिये लडके-लडकियों की जरुरत रहती है और क्लब ऐसे युवक-युवतियों को प्रशिक्षित कर रहा है। ■

TEJAS

HOME SMART HOME

Control the lights, set the temperature, start your entertainment or have a peek at the door, all this from the comfort of one touch on your smart device.

www.tejasinnovative.com

f in Toll free : 1800 102 1762

कारपोरेशन स्कूल के विद्यार्थी जर्मनी की यात्रा पर

केटीपी राधिका और **किरण ज़ेहरा**

इस साल जून में आठ दिन के लिए, चेन्नई के कैनाल रोड पर स्थित कारपोरेशन स्कूल का कक्षा 7वीं का 14 वर्षीय छात्र पुष्पराज, अपने पिता को सब्जी का ठेला लगाने या अपनी माँ को हैण्ड पंप से पानी लाने में मदद नहीं कर पायेगा। वह आठ दिनों के लिए जर्मनी की यात्रा पर रहेगा। रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट (आरसीएमई), मंडल 3230, द्वारा आयोजित वार्षिक 'विंग्स टू फ्लाई' प्रतियोगिता ने ''इस असंभव सपने को मेरे लिए संभव बनाया है,'' वह कहता है।

पुष्पराज द्वारा पहनकर खेले जा रहे नए एडीडास के जूते की तरफ इशारा करते हुए, उनके प्रधानाध्यापक जे. धनम्मल गर्व से कहते है, ''मेरे विद्यार्थी ने नंगे पैर प्रतियोगिता जीती। उसके माता-पिता उसे नए जूते दिलाने में असमर्थ है। अब उसके पास रोटरी द्वारा दी गयी पंखों की जोी है और उस परिवार द्वारा उपहार स्वरुप दिए गए जूते है जहाँ उसकी माँ घरेलू काम करती है।''

एन भारती, एम पार्थिबान और मदन कुमार।

किरण ज़ेहरा

पुष्पराज एवं सात अन्य कारपोरेशन स्कूल के विद्यार्थियों की कहानी ''किसी परियों की कहानी से कम नहीं है। इस प्रतियोगिता का लक्ष्य सरकारी स्कूलों की मदद उनकी संख्या बढ़ाने में और उन्हें मूल्यों की शिक्षा पर संवेदनशील बनाने का है,'' क्लब के अध्यक्ष के. अनंत कहते है।

वर्ष 2015 में मंडल की व्यावसायिक सेवा के हिस्से के रूप में कुछ कारपोरेशन स्कूलों में क्लब द्वारा संचालित जो एक छोटी गतिविधि के रूप में शुरू हुआ, ''अब वह हमारी सबसे बड़ी परियोजना में तब्दील हो गया है, सहभागिता, परिकल्पना एवं सामग्री के संदर्भ में,'' रोटरियन नीलकांतन कहते है, साथ में कहते हुए कि ''पीडीजी सी.आर. राजू अपने कार्यकाल के दौरान इसे एक बड़ी मंडल परियोजना के रूप में संगठित कर सकते थे, आठ बच्चों को मलेशिया भेज सकते थे और उसी वर्ष उसे भुला सकते थे। परन्तु वह निरंतरता सुनिश्चित करना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने आरसीएमई को चुना ताकि वह इसे उनकी एक निरंतर परियोजना के रूप में ले सके।''

परन्तु यह आसान नहीं था; ''मुझे एक कारपोरेशन स्कूल में तीन घंटे तक इंतज़ार करना पड़ा प्रधानअध्यापक को केवल प्रतियोगिता की विवरणिका देने के लिए,'' रोटरियन मंसूर अहमद

आरसीएमइ के रोटेरियंस के साथ इस साल के विजेता और गोएथ इंस्टीट्यूट के अधिकारी।

कहते है, जिन्होंने परियोजना अध्यक्ष मगेश पट्टाभिरमन के साथ चेन्नई के कारपोरेशन स्कूलों का लगभग हर दिन दौरा किया एक सवाल का जवाब बार-बार देने के लिए 'इसमें रोटरी का या आपका क्या फायदा है?' हफ़्तों तक खुशामदी करने के बाद इसे हरी झंडी मिली।

कुछ कारपोरेशन स्कूलों के प्रधान इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने से हिचकिचा रहे थे क्योंकि ''उन्हें उनके सुविधा क्षेत्र से बाहर प्रदर्शन करना था और यह स्कूल की दिनचर्या या पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं था,'' पट्टाभिरमन कहते है। ''निष्पक्ष सहभागिता और परिणामों को सुनिश्चित किया जाना था और हम अरुचि या पक्षपात को रास्ते में नहीं आने दे सकते थे।'' 70 हिस्सेदार स्कूलों में से प्रत्येक ने पहले दौर को उनके स्कूलों में संपन्न किया और 100 से अधिक वायएमसीए कॉलेज के रोटरेक्टरों ने इसका निरीक्षण किया। 380 सेमिफिनाल के खिलायिों में से, वरिष्ठ और कनिष्ठ स्तरों के लिए 32 खिलायिों ने मुकाबला किया और आठ ने मलेशिया जाने का टिकट हासिल किया।

तस्वीरों में अच्छे से तैयार हुए एवं प्रसन्नता से जगमगाते हुए, बच्चों के पास ना ही पर्याप्त कपड़े थे, ना ही जूते और तो और मलेशिया तक सामान ले जाने के लिए बैग भी नहीं था। ''जब वे चुने गए, और हमनें उनसे उनके सबसे अच्छे कपड़ो को बांधने के लिए कहा, तो उन्होंने जवाब दिया, 'हम अपनी स्कूल की वर्दी पहनेंगे, हम उसमें बहुत आरामदेह महसूस करते है।' फिर हमें समझ आया कि वे अपनी स्कूल की वर्दी के पीछे अपनी गरीबी छुपा रहे थे,'' रोटरियन वी. ए. रामेश कहते है।

एन. भारती, कक्षा 12वीं की छात्रा, एवं अन्य चयनित बच्चों को मलेशिया जाने के लिए खरीददारी पर ले गए। वह याद करती है, ''मैं पहली बार बी दुकानों में गयी थी और रोटरियन वासुदा मैम ने हमें हमारी इच्छा की सभी चीज़ें दिलवायी।''

फिर पासपोर्ट की बाधा सामने आयी, जो बेशक, किसी भी बच्चे के पास नहीं था। और, उसे हासिल करने के लिए, उनमें से बहुत से बच्चों के पास निवास का प्रमाण नहीं था; ना ही राशन या आधार कार्ड और एक के पास तो जन्म प्रमाण पत्र भी नहीं था, पट्टाभिरमन कहते है। ''पासपोर्ट कार्यालय एवं कारपोरेशन कार्यालय के मध्य कुछ हफ़्तों की मशक्कत के बाद, हमनें सात बच्चों के पासपोर्ट की व्यवस्था कर ली। परन्तु एक बच्चा जिसे उसके पिता ने छो दिया था और जिसके पास कोई पहचान प्रमाण नहीं था, उसकी मदद नहीं की जा सकी। हमनें यह सोचकर एक महीने के लिए यात्रा स्थगित कर दी कि हम कुछ कर सकेंगे, परन्तु वह व्यर्थ रहा।''

मलेशिया की ओर

सात विजेता, एक कारपोरेशन अधिकारी, एक कारपोरेशन स्कूल से एक प्रधानाध्यापक और छह रोटरियनों का पीडीजी सीती सुबैध, मंडल 3300, ने कुआलालंपुर हवाईअड्डे पर अभिवादन किया। भारती, जो एक आईएएस अफसर बनना चाहती है, कहती है, ''पेट्रोना ट्विन टावर झुक सकता है। मैं इतना भौचक्का रह गयी कि मैं चीखते हुए पीछे भागी।'' एक बात जो उसने इस यात्रा पर सीखी वह थी कि ''अपने देश को स्वच्छ रखो। कुआलालंपुर में तो कूेदान भी अच्छे से व्यवस्थित थे।''

एक स्थानीय तमिल माध्यम स्कूल में उनके दौरे को याद करते हुए, कारपोरेशन कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सैदापेट की शिवकामी (13) कहती है, ''वे भाषाओं को मिश्रित नहीं करते है। उदाहरण के लिए, तमिल और मलय को अंग्रेजी के साथ मिश्रित नहीं किया जाता जैसे हमारी

कहानीकार जीवा रघुनाथ द्वारा प्रशिक्षण सत्र।

मलेशिया में पिछले साल के विजेता।

तंग्लिश...मुझे उनकी संस्कृति पसंद आयी, विशेषरूप से सम्मान जो वे हर भाषा को देते है। प्रत्येक बच्चे को 350 मलेशियाई रिंगिट मलेशिया में खर्च करने के लिए दिए थे, और वे कोई यादगार चीज़ या चॉकलेट खरीदना चाहते थे।

गोएथ-इंस्टिट्यूट का जुड़ना

गीता वेदरमन, गोएथ इंस्टिट्यूट मैक्स मुलर भवन की संयोजक कहती है कि वह बच्चों के पूर्ण आदर में थी। ''केवल तीन मिनट में बच्चों ने एक थिरुकुरल प्रस्तुत किया, समस्या पर चर्चा की और शहर में पानी की कमी का एक समाधान ढूंढ निकाला।'' इसकी शुरुआत से ही संस्थान चेन्नई में जल संरक्षण की समस्या को संबोधित कर रहा है।

इसने फाइनल के खिलायिों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जहाँ कहानी वक्ता जीवा रघुनाथन ने इन बच्चों के वक्तृत्व कौशल को निखारा। संस्थान जर्मनी यात्रा में मदद कर रहा है, और विजेताओं के लिए जर्मन बोलने का एक क्रेश कोर्स भी करवा रहा है, और नन्हे पर्यटकों की बर्लिन और हैमबर्ग के अच्छे दर्शन के लिए मदद भी करेगा।

इसके दूसरे वर्ष में, परियोजना ने छात्रों एवं शिक्षकों दोनों को उत्साहित किया। धनम्मल, एक प्रधानाध्यापक, कहती है, ''हम बहुत प्रसन्न है कि हमारे दो बच्चे जर्मनी जा रहे है।'' एस. उमामहेश्वरी, एक कैनाल रोड स्कूल की शिक्षिका जिन्होंने पुष्पराज और हरिप्रिया (इस वर्ष के विजेता) को प्रशिक्षित किया अफ़सोस करती है कि पूर्व में उन्होंने इस कार्यक्रम को गंभीरता से नहीं लिया, और कहती है, ''हमारे अधिकांश बच्चे अत्यंत गरीब पृष्ठभूमि से है। मैं अपने बच्चों से यह तक नहीं पूछती कि उन्होंने उनका नाशता किया या नहीं; क्योंकि यदि वे ना कहेंगे तो हम उन्हें वह प्रदान नहीं कर सकते। परन्तु रोटरी के कारण, ये बच्चे अब विदेश जाने के सपने देख रहे है।'' अपने आंसू पोछते हुए, वह आगे कहती है, ''मेरे बच्चे एक कंप्यूटर जितने होशियार है। पुष्पराज से उसके भाषण से पहले एक शब्द, वाक्य या एक अनुच्छेद को बदलने के लिए कहिये, और वह ऐसा बिना परेशानी के करता है।''

एक विदेश यात्रा का जश्न तो मनना चाहिए! इसलिए शेनॉय नगर कारपोरेशन स्कूल के बच्चों के मध्य मिठाइयाँ बांटी गयी। ''हमें इसका उत्सव मनाना था, यह लगातार दूसरा वर्ष है जब हमारा स्कूल विजेता बना और इस वर्ष हमारे दो बच्चे जर्मनी जायेंगे,'' सेल्वाकुमारी कहती है, वह शिक्षिका जिन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए की मेहनत की कि एम. पार्थिबन और मधन कुमार कनिष्ठ वर्ग के विजेता बने।

चूंकि इस वर्ष की प्रतियोगिता का विषय जल संरक्षण था, बच्चों के चेन्नई के जल स्त्रोतों के बारे में ज्ञान एक मनोहर आश्चर्य के रूप में सामने आया। पार्थिबन कहता है, ''मेरे दादा ने मुझे पूरे शहर में बांस की नाव से घूमने की कहानी सुनाई थी और यह भी कि चेन्नई में अनेक झीलें है। मैंने अपने भाषण में उनकी कहानी का इस्तेमाल किया।''

चमकीली आँखों वला मधन कुमार, जो एक पुरातत्वविद बनना चाहता है और कोउम नदी को साफ करना चाहता है, एक अनाथ है, परन्तु जर्मनी की उनकी आगामी यात्रा को लेकर बहुत उत्तेजित है। ''मेरे दोस्तों ने मुझे उनके लिए जर्मनी से चॉकलेट लाने के लिए 20 रुपये दिए है, परन्तु मैं जानता हूँ कि इतना पैसा पर्याप्त नहीं है,'' वह हँसता है। पार्थिबन कहता है, ''जब हमारे स्कूल का नाम लिया गया, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं विजेता बनूँगा। मेरे अप्पा, जो एक टैक्सी चालक है ने तब विश्वास किया जब मैंने उन्हें प्रमाणपत्र दिखाया।'' दोनों ही लड़के अच्छे दोस्त है परन्तु वे चिंतित है क्योंकि उन्हें शायद हवाई जहाज में विंडो सीट नहीं मिलेगी!

पट्टाभिरमन की चिंताएं थीं अलग है। ''आपके पास कोई राशन कार्ड या आधार कार्ड है?'' वह पूछता है क्योंकि उन्होने पहले से ही पासपोर्ट पर काम करना शुरू कर दिया है।'' पिछला वर्ष एक सबक था।'' अगले वर्ष 'विंग्स टू फ्लाई' लन्दन के लिए उड़ान भरेगा। इन बच्चों का कठिन परिश्रम, ख़ुशी, जोश और विश्वास ने रोटरियनों को और अधिक करने के लिए प्रेरित किया है। कक्षा 8वीं की नित्याश्री, जो फाइनल में हार गयी थी, ज़रा भी हतोत्साहित नहीं है। वह ख़ुशी से कहती है, ''मैं लन्दन जाऊंगी और मैंने पहले से ही प्रतियोगिता की तैयारी शुरू कर दी है।'' ■

मुद्रा के मूल्य का निर्धारण

टी सी ए श्रीनिवासा राघवन

अगर दुनिया पर महिलाओं का शासन होता, तो क्या मुद्रा का विनिमय दर मजबूत राष्ट्रीय ताकत का प्रतीक होता? अर्थात, यदि महिलाओं के हाथ में प्रभार होता तो क्या देश मजबूत मुद्रा को राष्ट्रीय शक्ति के समतुल्य मानते?

यह कोई तुच्छ सवाल नही है। पूरी 20वीं सदी के दौरान, और आज भी जब हम 21वीं सदी में काफी आगे बढ़ चुके है, बहुत से लोग, विशेषरूप से राजनेता, सोचते है कि एक मजबूत मुद्रा इस बात का सूचक है कि देश कितना अच्छा कर रहा है। यह एक अत्यंत सरल तथ्य की समझ की कमी को दर्शाता है कि विनिमय दर और कुछ नहीं बल्कि किसी दूसरे देश की मुद्रा के संदर्भ में व्यक्त की गयी किसी देश की मुद्रा की कीमत है।

इसके बारे में इससे अधिक कुछ और नहीं है। विनिमय दर का कोई अन्य महत्व नहीं है, विशेषरूप से राजनैतिक। यदि ऐसा होता, तो एक देश को गाजर, फलियों एवं टमाटर के उच्च दामों पर भी गर्व होता।

अर्थात यह प्रश्न जायज है: कैसे किसी मुद्रा का मूल्य' निर्धारित किया जाता है? उत्तर बहुत ही सरल है: इसका मूल्य ठीक उसी तरह निर्धारित किया जाता है जैसे अन्य चीजों का किया जाता है: मांग और आपूर्ति के प्रभाव द्वारा।

इसलिए विनिमय दर देश की मुद्रा की मांग का मापक है: जितनी अधिक मांग होगी, उदाहरण के लिए, रुपये की, उतनी अधिक उसकी कीमत होगी, उदाहरण के लिए, डॉलर, के संदर्भ में।

इसके विपरीत भी सही है। अगर कोई रुपया खरीदना नहीं चाहता, जैसे की 1966 और 1991 में हुआ था, तो इसकी कीमत कम होगी - आपके द्वारा खरीदे गए प्रत्येक डॉलर के लिए आपको अधिक रुपये देने होंगे। या, दूसरे शब्दों में, विदेशियों द्वारा भारत में लाये गए प्रत्येक डॉलर के बदले उन्हें अधिक रुपये मिलेंगे।

ऐसा हमेशा से नहीं था। 1971 तक, दुनिया में अस्थायी के बजाय स्थायी विनिमय दर थी। सरकारों ने उनकी समझ द्वारा उचित दरों को तय किया था। इसलिए एक समय था जब एक डॉलर केवल रु 5 का था। परन्तु इसका मतलब यह नहीं था कि रुपया मजबूत था या इसकी बहुत अधिक वैश्विक मांग थी।

1971 में, यह सब परिवर्तित हुआ और दुनिया में अस्थायी विनिमय दर लागू हुई। इसलिए आज एक डॉलर लगभग रु 65 के आसपास है। परन्तु एक दशक से भी कम समय पहले यह केवल रु 40 का था। इसके कुछ माह पहले यह रु 45 का हुआ करता था। पिछले वर्ष रुपया गिरकर लगभग 69 रुपये प्रति डॉलर के स्तर तक पहुँच गया था।

अन्य शब्दों में, डॉलर के संदर्भ में रुपये की कीमत परिवर्तनशील हो गयी थी। और परिवर्तनशीलता इसकी मांग पर निर्भर थी। तो पूछे जाने के लिए वास्तविक सवाल है कि कौन सा कारक इसकी मांग को निर्धारित करता है। और उत्तर अनेक कारक है।

वास्तविक अर्थव्यवस्था की ताकत एक कारक है। अन्य देशों के मुकाबले भारतीय अर्थव्यवस्था अभी अत्यंत मजबूत है और इसलिए विदेशी यहाँ निवेश करना चाहते है। इसके कारण रुपये की मांग बड़ी है।

निवेश करने के विकल्पों की अनुपस्थिति एक अन्य कारण है। आज शेयर बाज़ार में भारत निवेशकों को सबसे अधिक लाभ देता है, इसलिए वे यहाँ भी लगा रहे है। अगर चीज़ें ख़राब होना शुरू होती है, जैसे कि 2012-14 में हुई थी, वे उतनी ही सरलता से वापस चले जायेंगे और रुपया कमजोर' होना शुरू हो जायेगा।

रुपये की मांग और डॉलर की आपूर्ति बहुत कुछ अर्थव्यवस्था के वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत होने पर भी निर्भर होती है। 15 वर्ष पूर्व तक, भारत अधिक एकीकृत नहीं था और इसका केवल 15 प्रतिशत उत्पादन ही वैश्विक प्रकृति का था। आज यह आंका लगभग 50 प्रतिशत तक पहुँच गया है जिसका मतलब है कि दुनिया के अन्य हिस्सों में जो भी होता है उसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर गहरा असर होता है और इसलिए विनिमय दर पर भी। दूसरे शब्दों में, अनिश्चितता कई गुना ब गयी है।

इस प्रकार से हम वर्ष 1971 से पूर्व की पूर्ण विनिमय दर निश्चितता की दुनिया से निकलकर अब पूर्ण अनिश्चितता वाली दुनिया में पहुँच गए है। जो डॉलर खरीदना चाहते है वे कभी भी आवश्वस्त नहीं हो सकते कि एक डॉलर के लिए वे कितना भुगतान करेंगे। और जो डॉलर बेचना चाहते है वे कभी भी आश्वस्त नहीं हो सकते कि बेचने पर उन्हें कितना प्राप्त होगा। इसने देशों के प्रबंधन और तो और कंपनियों के लिए भी एक बी समस्या खड़ी कर दी है।

विदेशी विनिमय बाज़ार में सट्टा लगाने वाले ही ऐसे लोग है जिन्हें इस परिवर्तन से लाभ हुआ है। वे ऐसा दैनिक स्तर पर करते है और समस्या को बदतर बनाते है। ■

निरक्षरता का उपचार करने के लिए टेबलेट

वी मुथुकुमारण

आठ वर्षीय दीक्षा अपने पडोस के लोगों के मध्य अत्यंत लाडली है। वह एक फैशनेबल MKD टैबलेट की सहायता से पुणे के पास अपने गांव में अशिक्षित लोगों को पढाती है। एक बार MoU पर हस्ताक्षर हो जाने के उपरांत, महाराष्ट्र सरकार राज्य में 10,000 सरकारी स्कूलों में उनकी बहु-प्रशंसित चघऊ टेबलेट के वितरण परियोजना में क्लब प्रमुख भागीदार के रूप में कार्य करेगी। टैबलेट, रोटरी क्लब पूना नार्थ, मंडल 3131 के 89 वर्षीय रोटेरियन कुलबीर डोड के मस्तिष्क की उपज है।

डोड को अपनी सामुदायिक विवेक ने एक औद्योगिक इंजीनियर के रूप में अपनी उच्च वेतन वाली नौकरी छोड़ने और वर्ष 1990 के अंत में पुणे में बसने के लिए उत्प्रेरित किया। क्लब के पूर्व अध्यक्ष और MKD ट्रस्ट के एक ट्रस्टी कुमार शिनगार कहते है, 1970-80 के दशक में, वह अमेरिका में नवीनतम ऑडियो विजुअल गैजेट्स के माध्यम से शिक्षा को बढावा दे रहा था। पुणे में बसने के बाद, उन्होंने अपनी निजी क्षमताओं के बल पर अपनी शिक्षा आउटरीच की शुरूआत की और उनके ट्रस्ट द्वारा वित्त पोषित किया गया, जिसकी स्थापना उन्होंने की थी।

वर्ष 1992 में, डोड रोटरी से जुड़ गए और 'कुल साक्षरता' के अपने स्वप्न का साकार करने के लिए, उन्होंने 1998 में MKD टैबलेट परियोजना पर कार्य करना शुरू किया। ''आरंभ में, साक्षरता का प्रसार करने वाले उनके टैब्लेट प्रोजेक्ट को बहुत ही निराशाजनक समर्थन प्राप्त हुआ। निराश होकर, उन्होंने रोटरी को छोड़ने मन बना लिया था। शिनगारे याद करते हुए कहते हैं। इ। मीरा कुलबीर डोड MKD ट्रस्ट का गठन वर्ष 2014 में किया गया था, जिसने पुणे और उसके आसपास के सरकारी स्कूलों में मुफ्त, कॉम्पैक्ट टैबलेट्स वितरित किया। शुरुआत में, आदिवासी लोग टेबलेट को छूने से डरते थे क्योंकि यह अवधारणा उनके लिए नई थी।

त्रिपक्षीय अनुबंध

MKD ट्रस्ट, RID 3131 और रोटरीक्लब पूना नॉर्थ के बीच एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किया गया, ज यह परियोजना बच्चों, वयस्कों, छात्रों, शिक्षकों और छत्र्इ्री को 'आधुनिक तकनीके के माध्यम से सिखाने' की अवधारणा के आधार पर निरक्षरता को समाप्त करने के लिए MKD टेबलेट का नवीन उपयोग करने के लिए प्रेरित करती है।

इसके अलावा, ट्रस्ट ने साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए MKD टैबलेट प्रोडक्शन एन्डॉवमेंट फंड के अंतर्गत 100,000 डॉलर का एक कॉर्पस स्थापित करने के उद्देश्य से ढठ्क्र के साथ एंडॉमेंट गिफ्ट एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किया हैं।

डोड एक AKS सदस्य बनने के लिए तैयार है, जो कि 60,000 डॉलर तक के चिन्ह से कम है। उन्होंने ट्र्म गिफ्ट में तीन बार योगदान दिया है, जो कुल मिलाकर 90,000 डॉलर के आकड़े के निकट है। शिनगारे कहते हैं, 'वह पूरे भारत में अपनी अवधारणा को दोहराना चाहते हैं।

अब तक, सरकारी सॉफ्टवेयर से लैस 1,200 टैबलेट्स का वितरण सरकारी स्कूलों में किया गया है। प्रत्येक चघऊगैजेट का लगभग 60 घंटे तक उपयोग किया जा सकता है और यदि कोई व्यक्ति एक घंटे तक उपयोग कर, दो महीनों में संपूर्ण साक्षर (पढ़ना, लिखना और गिनती करने की क्षमता) बन सकता है। छात्र टेबलेट को घर ले जा सकता है, यहां तक कि इसका उपयोग अपने माता-पिता को पढाने के लिए कर सकता है और उसे एक साल के बाद कक्षा शिक्षक को वापस दे सकता है, जो उसका/उसकी प्रगति का आकलन कर सकते है।

बच्चे MKD टेबलेट्स के ज़रिये पढ़ाई करते हुए।

बच्चे MKD टेबलेट्स की मदद से वयस्कों को सिखाते हुए।

सभी टैबलेट TCS द्वारा विकसित 'अक्षरधारा' नामक एनिमेटेड पाठों से लैस हैं और यह 12 अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध है। क्लब ने लगभग 30 NGOs और कॉरपोरेट ट्रस्टों के साथ टेबलेट के वितरण और जमीनी स्तर पर टेबलेट के प्रभावी उपयोग के लिए 150 शिक्षक प्रशिक्षण के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर किया है।

इसकी सफलता के बाद, हिंदी और मलयालम सॉफ्टवेयर के साथ इन गैजेट को शुरू करने के लिए राजस्थान, दिल्ली और केरल सरकारों से अनुरोध प्राप्त हुआ हैं।

अधिक जानकारी के लिए, कुमार शिनगार से ई-मेल: kumar@kumarenterprises.com या फोन नंबर: 98231 88900 पर संपर्क करें।■

रोट्रैक्टर्स के लिए आमोद-प्रमोद का समय

वी मुथुकुमारन

मजेदार खेलों के साथ शिक्षण सत्रों के एक विवेकपूर्ण समिश्रण ने चार-दिवसीय रोट्रैक्ट जोन इंस्टीट्यूट 2017 को उल्लेखनीय बना दिया, जिसका शीर्षक था "The One", और जिसकी मेजबानी मंडल 3230 द्वारा दक्षिण एशिया के 25 मंडलों से आए DRR इलेक्ट, नामितों और नियुक्त मंडल सचिवों के लिए की गई थी। PRID शेखर मेहता और DG नटराजन नागोजी ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की और PDRR रामकुमार राजू, DRR (मंडल 3230) सुभद्रा मारिमुथु ने अपना हरसंभव योगदान दिया।

राजेश सुब्रमण्यन, भूतपूर्व DRR और रोटरी के अध्यक्ष, दक्षिण एशिया मल्टी मंडल सूचना कार्यालय (RSAMDIO) ने कहा कि, ''नेतृत्व, टीम प्रबंधन और प्रशिक्षण के सत्रों की श्रृंखला, इन सभी युवा व भविष्य के DRRs के मन-मस्तिष्क को प्रबुद्ध करने में बहुत लाभदायक सिद्ध होगी।'' समय और संसाधन प्रबंधन और अन्य कार्यात्मक पहलुओं के बारे में विस्तार से समझाया गया। मंडल 3232 के DGN बाबू पेराम, विदाई सत्र के मुख्य अतिथि थे।

शिक्षा परियोजना

इस वर्ष रोट्रैक्ट के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में रोटरी इंडिया साक्षरता मिशन (RILM) और RSAMDIO दोनों ने मिलकर दक्षिण एशिया में 1,000 पुस्तकालय स्थापित करने के लिए - शिक्षा-नामक एक परियोजना शुरू की है।

RILM के अध्यक्ष शेखर मेहता ने कहा कि, ''जब PDRR राजेश सुब्रमण्यम ने दक्षिण एशिया में 500 पुस्तकालय स्थापित करने का सुझाव दिया, तो मैंने उनसे कहा कि RILM 500 पुस्तकालयों की स्थापना करेगी।'' अभी तक, 61 पुस्तकालयों की स्थापना की जा चुकी है और रोट्रैक्टर्स अपने इलाकों में पुस्तक संग्रह के विशाल अभियान में व्यस्त है।

PDRRs राजेश सुब्रमनियन (बाएं से दूसरे, बैठे हुए), रामकुमार राजू (चरम बाएं), PDG ए सुब्रमण्यम, PRID शेखर मेहता, DRR सुभद्रा मरीमुथु, DGN बाबू परम और PDG राजा सीनिवासन इंस्टिट्यूट में।

मुंबई रेलवे के शौचालयों को सुसज्जित करना

रशीदा भगत

मई में एक गर्म और उमस भरे दिन, मुंबई के उपनगरीय रेल नेटवर्क के पश्चिमी रेलवे सेगमेंट पर एलफिन्स्टन रोड स्टेशन की ओर एक भीड़भाड़ वाले फुटपाथ, जो इस तीव्र गमी में कभी समाप्त नहीं होता प्रतीत होता है, से होकर बढ़ते समय, मुझे मंडल 3141 के DG गोपाल राय मण्डानिया के तेज चाल के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा।

वह स्टेशन पर एक शौचालय पुनर्निर्माण परियोजना का उद्घाटन करने के लिए जा रहे हैं, जिसका कार्यान्वयन रोटरी क्लब मुंबई कांदिवली(RCBK) द्वारा $90,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान के माध्यम से किया जा रहा है जिसके अंतर्गत इस मेट्रो शहर के 11 रेलवे स्टेशनों पर शौचालयों का पुनरुद्धार किया जाएगा। ''यह मुंबई की जीवन रेखा है, और इस नेटवर्क के माध्यम 75 लाख से अधिक यात्री प्रतिदिन यात्रा करते हैं और इस कारण से हमने अनुभव किया कि इनमें से कुछ स्टेशनों पर स्वच्छ, बदबू-रहित शौचालय उपलब्ध कराना इस शहर की वास्तविक सेवा होगी, जिसे हम सभी बहुत अधिक प्यार करते ह,'' DG मण्डानिया कहते हैं।

हम शीघ्रता से प्लेटफार्म पर पहुँचते हैं, जहां ट्रेनें आ रही है और प्रस्थान कर रही है, सैकडों यात्रियों इधर-उधर आ-जा रहे है। रोटरीक्लब बॉम्बे कंडीवली के अध्यक्ष सुनील कुमार पहले से ही वहां प्रतीक्षा कर रहे है, और उनके हाथों में एक छोटा हथौडा हैं, जिससे टॉयलेट ब्लॉक के एक हिस्से को प्रतीकात्मक रूप से काटा जाएगा, ताकि इसका पुनर्निर्माण शुरू किया जा सके। परियोजना का उद्घाटन करने के लिए कुछ नारियल और पूजा सामग्री का उपयोग कर एक छोटी पूजा की जाती है। क्लब के सदस्य, अपर्णा गरुड, प्रभारी आर्किटेक्ट, बताती हैं कि महिलाओं और पुरूषों दोनों ही शौचालयों का पुनर्निर्माण किया जा रहा है। ''हमने देखा कि कुछ मामलों में अंदर स्थान का उचित प्रकार से उपयोग नहीं किया गया है, दूसरों में बहुत सारे मूत्रालय हैं और पर्याप्त नहीं धोने वाला शौचगृह नहीं हैं, विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों के लिए पश्चिमी शैली का शौचगृह। स्वच्छता के कारणों से, बहुत से लोग भारतीय शौचालयों को पसंद करते हैं, इसलिए हम दोनों की स्थापना कर रहे हैं। इसके साथ ही हम विकलांगों के लिए शौचालय की मरम्मत भी कर रहे है।''

कुमार कहते है कि उन्होंने इस वैश्विक अनुदान के लिए रोटरीक्लब नॉर्थ डाउन, मंडल 1160, यूके के साथ मिलकर काम किया है, और मंडनिया कहते हैं कि निधि का एक भाग DDF से प्राप्त हुआ है।

उन्होंने स्टेशन मास्टर रवि को नारियल को तोड़ने के लिए आमंत्रित किया, कहा कि, ''आखिरकार, वह यहां के वास्तिवक बॉस है'', मांधानिया ने कहा कि रोटरी लोगो सभी टॉयलेट ब्लॉक पर उत्कीर्ण किया जाएगा और यह कार्य जून के मध्य तक पूरा हो जाएगा। ''रोटरी की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने के लिए एक परियोजना कार्यान्वित करने के लिए इस तरह प्रकार के चहल-पहल भरे स्थान से बेहतर जगह और क्या होगा,'' वह मुस्कुराते हुए कहते है।

प्रत्येक शौचालय पर रु 5 लाख खर्च किया जाएगा ''परंतु अधिक महत्वपूर्ण यह तथ्य है कि रोटरी को आगामी तीन वर्षों तक शौचालयों के रखरखाव करने की अनुमति दी गई है और हम रखरखाव की देखभाल करने के लिए अपने पर्यवेक्षकों

मैं इन ट्रेनों से भी यात्रा करता हूँ और मुझे गंदी स्थितियों का पता है... अक्सर आपको ऐसा महसूस होगा कि आप शौचालय का उपयोग ही नहीं कर कर रहे हैं।

DG गोपाल राय मण्डानिया, मंडल 3141

दायें से : डीजी गोपाल मंधिया, स्टेशन मास्टर रवि और RCBK अध्यक्ष सुनील कुमार।

को नियुक्त करेंगे, जो बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि हम सिर्फ नवीकरण पर पैसा खर्च कर आगे नहीं बढ़ सकते हैं।'' इसके अलावा, वे कहते हैं, किसी भी मामूली नुकसान की मरम्मती रोटरी द्वारा की जाएगी।

इस परियोजना का चयन क्यों किया गया, इस सवाल का उत्तर देते हुए DG कहते है, ''एक तो इसका उद्देश्य सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाना है और दूसरे मैं इन ट्रेनों से भी यात्रा करता हूँ और मुझे गंदी स्थितियों का पता है... अक्सर आपको ऐसा महसूस होगा कि आप शौचालय का उपयोग ही नहीं कर कर रहे हैं।''

इस वैश्विक अनुदान परियोजना के अतिरिक्त, ''हम मध्य रेलवे के 22 स्टेशनों पर शौचालयों का निर्माण-जीणीद्धार करने जा रहे हैं, और यह कार्य मुंबई में विभिन्न क्लबों द्वारा किया जा रहा है। इस परियोजना की सबसे खास बात यह है कि 24 घंटों के भीतर, मैं 22 शौचालयों के लिए क्लबों से अनुमति प्राप्त करने में सक्षम था, और वह भी वर्ष के अंत में, जब निधि की उपलब्धता बहुत कम रही है। हमारे क्लब के सदस्यों की उदारता और समझ अद्भुत है।''

इनमें से सात स्टेशनों पर, प्रत्येक स्टेशन पर रु 15 लाख की लागत से पूरी तरह नए शौचालय ब्लॉक का निर्माण किया जा रहा है, और उनको आधुनिक डिजाइन मानदंडों के आधार पर सुंदर बनाया जाएगा, इसके मुख्य दल के सदस्य वीरेन्द्र विज है।

बेशक RI/TRF कर्मचारियों बहुत सारे प्रश्न पूछ्ते हैं, जो उनका कार्य हैं, परंतु उनकी मानसिकता और दृष्टिकोण बहुत सकारात्मक हैं।बेशक वे बहुत सारे प्रश्न पूछ्ते हैं, जो उनका कार्य हैं, परंतु उनकी मानसिकता और दृष्टिकोण बहुत सकारात्मक हैं।

मानधानिया कहते हैं कि इन 22 टॉयलेट ब्लॉक का निर्माण CSR निधि और रोटरियनों द्वारा दिए गये व्यक्तिगत दान के सहयोग से किया जा रहा है और इस कार्य को 30 जून से पहले पूरा कर लिया जाएगा।

तो क्या रेलवे से आवश्यक अनुमति प्राप्त करना आसान था?

मंदानिया मुस्कुराते हुए कहते है: ''बिल्कुल नहीं; MoU पर हस्ताक्षर करने के लिए हमें बहुत संघर्ष करना पड़ा। इस परियोजना को पिछले वर्ष ही निष्पादित करने का निर्णय लिया गया था, परंतु हम अवरोधों को आसानी ने नहीं तोड.सके। तब हम शीर्ष अधिकारियों से मिले और स्वीकृति प्रदान किया गया। जब आप कुछ करना चाहते हैं तो आपको सरकार के साथ काम करने का एक भिन्न रास्ता अख्तियार करना होगा!''

उन्होंने आगे कहा कि WinS के अंतर्गत, 500 शौचालय ब्लॉक का निर्माण पनवेल जिले में और अनेकों शौचालय ब्लॉक का निर्माण मुंबई की मलिन बस्तियों में किया गया है। ''इस वर्ष हमारे मंडल 3141 को कुल 25 वैश्विक अनुदान और टर्म उपहार दिया गया हैं।''

वैश्विक अनुदान प्राप्त करने में RI/TRF कर्मचारियों की मदद और तत्परता की सराहना करते हुए, मांधानिया कहते हैं, ''बेशक वे बहुत सारे प्रश्न पूछते हैं, जो उनका कार्य हैं, परंतु उनकी मानसिकता और दृष्टिकोण बहुत सकारात्मक हैं। बेशक वे बहुत सारे प्रश्न पूछते हैं, जो उनका कार्य हैं, परंतु उनकी मानसिकता और दृष्टिकोण बहुत सकारात्मक हैं।''■

बोर्ड ने नए जोन स्ट्रक्चर को अंगीकार किया है

रोटरी इंटरनेशनल के डायरेक्टर के बोर्ड ने जनवरी में आयोजित बैठक में रोटरी क्लब के लिए एक जोन स्ट्रक्चर को अंगीकार किया।

रोटरी के उप-नियमों के अनुसार, बोर्ड को आठ वर्षों की अवधि के उपरांत सभी 34 रोटरी जोन की एक व्यापक समीक्षा अवश्य करनी चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक जोन में रोटरियनों की संख्या लगभग समान रहें। इससे पहले बोर्ड ने वर्ष 2008 में जोन की समीक्षा की थी।

एशिया, यूरोप/अफ्रीका और अमेरिका के लिए रिजोनिंग प्रस्तावों को विकसित करने के उद्देश्य से, बोर्ड ने पहले तीन रिजनल कार्यसमूहों के गठन की स्वीकृति प्रदान की थी। इन कार्यसमूहों में रीजन के प्रत्येक जोन से एक प्रतिनिधि (या तो एक मौजूदा निर्देशक, नवागंतुक निर्देशक या इससे पहले के पूर्वती निर्देशक) शामिल होता हैं। रिजनल कार्यसमूह ने रोटरी उपाध्यक्ष माइकल घ. मैकगोवर्न की अध्यक्षता वाले जोन रिव्यू कमेटी के समक्ष अपना प्रस्ताव पेश किया, जिन्होंने बोर्ड के विचारार्थ उन्हें एक एकल विश्वव्यापी योजना में समेकित किया।

रोटरी अध्यक्ष जॉन एफ जर्म कहते हैं, 'मेरे विचार में रिजनल कार्यसमूह ने बहुत अच्छा काम किया है। रिजोनिंग हमेशा कुछ रोटारियन के लिए एक भावनात्मक विषय है, लेकिन कार्यसमूहों और बोर्ड ने सभी संबंधित पक्षों के प्रति निष्पक्ष रहने का प्रयास करते हुए साहसपूर्वक काम किया है।'

बोर्ड जून की अपनी बैठक में जोन से संबंधित अन्य मुद्दों जैसे सेक्शनिंग, पेयरिंग और निदेशकों के चुनाव के रोटेशन पर विचार करेगा।यदि आपके पास कोई प्रश्न हैं, तो *zones@rotary.org* को एक ईमेल भेजें।

स्रोत: ध रोटरीयन

आइये, दुनिया को अपने काम की कीमत बतायें

रशीदा भगत

रोटरी इन्टरनेशनल प्रेसीडेंट इलेक्ट इयान राय्सली ने आने वाले वर्ष में प्रांतपालों (डिस्ट्रिक्ट गवर्नर्स) को सूचनाओं की गणना दो हिस्से में करने का आग्रह किया है, जो दुनिया को सामूहिकता के सिद्धान्त और रोटरी कार्यकर्ताओं द्वारा वैश्विक स्तर पर की जाने वाली लोकोपकारी सेवाओं की पहचान करा सके।

उन्होंने यह उद्गार जयपुर में सम्पन्न डिस्ट्रिक्ट 3054 व 3060 की मल्टी डिस्ट्रिक्ट प्रेसीडेंट इलेक्ट ट्रेनिंग सेमिनार (MDPETS) और सेक्रेटरी इलेक्ट ट्रेनिंग सेमिनार (SETS) संकल्प'' का उद्घाटन करते हुए प्रकट किए। रोटरी इन्टरनेशनल के अध्यक्ष (इलेक्ट) ने कहा सामान्य तौर पर दानदाता संगठन' अपनी वार्षिक रिपोर्ट में उस वर्ष किये गए सेवा कार्यो को सूचीबद्ध करते है, कितने सुविधाहीन लोगों की सहायता की, उन पर कितना पैसा खर्च किया आदि। यह दानदाताओं को एक सुखद अहसास देता है और उन्हें और अधिक दान देने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन समस्या यह है कि हम यह सब रोटरी में नहीं कर सकते, क्योंकि हम करीब 35300 अलग-अलग क्लब हैं, और जब विभिन्न क्लब कई तरह के सेवा-कार्यक्रम करते हैं तो कोई भी इन सेवा कार्यक्रमों के मूल्यों की एक साथ गणना नहीं करता कि सारे क्लबों ने मिलकर कुल कितना कार्य किया।

राय्सली ने कहा कि इसलिए मैने सभी डिस्ट्रिक्ट गवर्नरों से कहा है कि वे क्लबों को इस बात के लिए प्रेरित करें कि वें जो भी राशि सेवा के कार्यक्रमों पर खर्च करें, वह स्थानीय करन्सी में करें। साथ ही, रोटरी क्लब के सदस्यों, उनको परिवारजनों और रोट्रेक्टर्स ने रोटरी के लिए जो भी समय सेवा-कार्यो में दिया है, उसकी भी गणना करें। उन्होंने बताया कि रोटरी एक संचार-योजना लागू करने जा रहा है और मुझे उम्मीद है कि जून 2018 के बाद हम पूरी दुनिया को इन दोनों आंकड़ों के जरिए यह बता सकेंगे कि रोटरी ने जो सेवा-कार्य किये हैं, उनका मूल्य क्या है, और मेरा विश्वास है कि दुनिया यह जानकर अचंभित हो जायेगी कि रोटरी द्वारा वास्तव में किया क्या जाता है?

आने वाले वर्ष के क्लब अध्यक्षों और सचिवों के विभिन्न सालाना कार्यक्रमों में उचित प्रशिक्षण दिए जाने के महत्व को रेखांकित करते हुए राय्सली ने कहा ''इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम उनमें नेतृत्व के गुण और टीम-भावना की महत्ता को प्रकट करते

ऊपर: एमडी PETS में आने वाले अध्यक्षों और सचिवों का एक हिस्सा।

नीचे: (दाएं से) डीजीइ गण रुचिर जानी, मौलीन पटेल, RIPE इयान राय्सली, जूलियट राय्सली, पीडीजी अशोक गुप्ता, सोहांगी जानी और सोनल पटेल।

हैं।'' इसमें कोई विवाद नहीं हो सकता कि हम अकेले जितना अच्छा करने की उम्मीद करते हैं, उसे कहीं ज्यादा अच्छा एक साथ मिलकर कर सकते हैं... और यह क्लब, डिस्ट्रिक्ट, जोन और अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर पूर्णरूप से सत्य है।

एक पर्यावरण के प्रति संवेदनशील व्यक्ति के रूप में उन्होंने धरती को हरा भरा बनाने पर जोर दिया। ''मेरा मानना है कि वह समय बहुत दूर जा चुका है जब हम पर्यावरण स्थिरता' को रोटरी की चिन्ता के रूप में खारिज कर दें। यह प्रत्येक व्यक्ति की चिन्ता है और मैं सभी रोटरी क्लबों से अनुरोध करता हूँ 1 जुलाई से 22 अप्रेल, 2018 (जो कि पृथ्वी दिवस है) तक प्रत्येक सदस्य कम से कम एक पेड़ अवश्य लगायें। और इस तरह 1.2 मिलियन पेड़ पृथ्वी पर हरियाली में वृद्धि करेगा और रोटरी सदस्यों को इस बात की याद दिलायेगा कि यह न केवल धरती पर रहने वाले लोगों के प्रति बल्कि इस धरती के प्रति भी हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।''

रोटरी इन्टरनेशनल निदेशक मनोज देसाई ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के चैयरमेन डॉ. अशोक गुप्ता को इस आयोजन को जयपुर में आयोजित करने की बधाई दी और उनकी उस संगठनात्मक प्रतिभा की सराहना की, जिसकी बानगी गत वर्ष जयपुर में आयोजित जोन इंस्टीट्यूटट में दिखाई दी।

उन्होंने कहा कि उनकी कड़ी मेहनत से डिस्ट्रिक्ट गवर्नर (DG), डिस्ट्रिक्ट गवर्नर इलेक्ट (DGE) और डिस्ट्रिक्ट गवर्नर नामिनी (DGN) इस तरह की की जो बैठकें प्रत्येक डिस्ट्रिक्ट में हो रही है उसका भारी लाभ मिला है और अप्रेल तक कोई भी चुनाव सम्बन्धी शिकायत प्राप्त नहीं हुई है और 17 डिस्ट्रिक्टों में चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए। उन्होंने प्रत्येक क्लब और डिस्ट्रिक्ट के रणनीति-प्लान (STRATEGIC) के महत्व को रेखांकित किया और क्लब अध्यक्षों से आग्रह किया कि वे अपने क्लब की गतिविधियाँ 'रोटरी सेन्ट्रल' पर अपलोड करें अन्यथा आप जो भी अच्छा कर रहे हैं, उसका दुनिया में कोई रिकॉर्ड नहीं रहेगा।

देसाई ने कहा कि इस क्षेत्र में 1.47 लाख रोटेरियन की भारी संख्या है और यह रोटरी फाउण्डेशन में भी बहुत ही अच्छा योगदान देता है। उन्होंने वर्तमान डिस्ट्रिक्ट गवर्नरों को याद दिलाया कि वे फाउण्डेशन के इस शताब्दी वर्ष में 26.5 मिलियन डॉलर का लक्ष्य हासिल करना सुनिश्चित करें।

पीडीजी डॉ. अशोक गुप्ता के IIS विश्वविद्यालय ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया था, उन्होंने सभी आने वाले वर्ष के अध्यक्षों और सचिवों का स्वागत करते हुए कहा कि बहुत सारे रोटेरियन यहाँ तक की कई क्लब अध्यक्ष भी रोटरी के विश्व नेताओं से मिलने का स्वप्न नहीं देखते। ऐसी किस्मत वाले बहुत कम हैं जो क्षेत्रीय नेताओं से मिले हों और ऐसे तो बहुत ही कम है, जिन्होंने रोटरी इन्टरनेशनल के निदेशकों और पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्षों के भाषण सुन चुके हैं।

लेकिन आने वाले रोटरी इन्टरनेशनल अध्यक्ष से मिलना, हाथ मिलाना, उनके साथ फोटो सेशन करना और उनको सुनना यह एक लीडर के लिए कपोल-कल्पना है, हम बहुत ही भाग्यशाली है कि रोटरी इन्टरनेशनल प्रेसीडेंट राय्सली दो दिन हमारे साथ जयपुर में बितायेंगे। यह ऐतिहासिक क्षण है। उन्होंने क्लब के नेतृत्वकर्ताओं से प्रशिक्षण के इस कार्यक्रम को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए आग्रह किया, ताकि उनके रोटरी ज्ञान में अभिवृद्धि हो और समाज में अच्छे सेवा कार्य करें और लोगों के जीवन में सुधार ला सकें।

चित्र: रशीदा भगत

दरगाह शरीफ: सूफी जन्नत

अनुभा अग्रवाल

उर्स के दौरान सभी रास्तें अजमेर को जाते है।

अजमेर, राजस्थान का सबसे प्राचीन शहर, को उसका नाम अजय मेरू' से मिला था जिसका मतलब है अपराजेय पहायिा। अजमेर, जहाँ पहले के मुग़ल बादशाहों की अनेक आलीशान बादशाहत बनी और मिट गयी, वहीं सूफी संत ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिस्ती की दरगाह उर्फ़ ख्वाजा गरीब नवाज दरगाह उर्फ़ अजमेर की दरगाह शरीफ की पवित्रता एवं लोकप्रिय आकर्षण सदियों से पनपना ज़ारी रहा। दरगाह शरीफ हिन्दू-मुस्लिम संधि का एक उत्तम उदाहरण है जहाँ हर धर्म को मानने वाले तीर्थयात्री अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए आते है। ख्वाजा मोईनुद्दीन चिस्ती सूफीवाद में चिस्ती रीति के संस्थापक थे। दरगाह, जो 13वीं शताब्दी की शुरुआत में बनी थी, एक अंतर्राष्ट्रीय वक्फ है, दरगाह समिति द्वारा प्रबंधित एक इस्लामी अक्राम्यता, जिसके खादिम और दीवान सय्यद जैनुल एबदीन है जो ख्वाजा मोईनुद्दीन चिस्ती के वंशज है।

अजमेर में ख्वाजा साहब का मकबरा एक पुराना धार्मिक स्थल है जहाँ भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश एवं अन्य देशों से तीर्थयात्री अपनी मुरादों को पाने के लिए संत के मकबरे पर चादर चढ़ाने आते है।

उर्स महोत्सव

झील किनारे स्थित अजमेर शहर उर्स महोत्सव के दौरान जीवंत हो उठता है जो कि प्रत्येक वर्ष मार्च-अप्रैल में 6 रज़ाब पर आयोजित होता है। महोत्सव संत ख्वाजा चिस्ती की पुण्यतिथि का स्मरण करता है और छह दिनों तक उनके मकबरे के सामने रात-भर कव्वालियाँ गाकर उन्हें श्रद्धांजलि देता है। इस्लामिक चंद्र कैलेंडर के सातवें महीने में सालगिरह मनाई जाती है।

महोत्सव का शुभारम्भ दरगाह पर सज्जादा नशीं, चिस्तियों के उत्तराधिकारी प्रतिनिधि, द्वारा सफ़ेद झंडे को फहराकर किया जाता है। मकबरे को गुलाब-जल से धोया जाता है और काई किये गए रेशम के कपड़े

से ढाका जाता है। मोईनुद्दीन चिस्ती के कर्तव्य-बद्ध खादिमों द्वारा शिजरा पढ़ा जाता है, जिसके बाद फ़रियाद की जाती है।

तीर्थयात्री फूल, चादर, और पैसा, जिसे वे उनके सर पर उठाए रखते है, उस स्थान पर भेंट स्वरुप चड़ाते है जहाँ संत को दफ़नाया गया था। संत का मकबरा एक चांदी के चबूतरे से घिरा है जिसके प्रांगण के केंद्र में एक संगमरमर का गुंबज है।

इतिहास

इतिहास में देखते हुए, ख्वाजा चिस्ती मक्का मुकर्रम, मदीना मुनावर, बगदाद शरीफ, अस्फाहन, मुल्तान, लाहौर और दिल्ली होते हुए अजमेर आये थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन अजमेर में इस्लाम की शिक्षा देने एवं मानवता की सेवा करने में समर्पित किया था। उनकी 95 साल की उम्र में मृत्यु हुई थी और वह गरीब नवाज़ के नाम से प्रसिद्द थे, गरीबों के प्रति उनकी सहानुभूति के कारण। अकबर, जहाँगीर, और शहाजहाँ जैसे मुग़ल बादशाह उनके अनुयायी बने। बादशाह अकबर और उनकी रानी प्रत्येक वर्ष एक बेटे की कामना लिये प्रार्थना करने पैदल आगरा से अजमेर शरीफ जाते थे और उनकी कामना पूर्ण होने के पश्चात, अकबर ने दरगाह शरीफ के प्रांगण के दाहिने तरफ एक मस्जिद बनवायी जो अकबरी मस्जिद के नाम से प्रसिद्ह है। बादशाह शाहजहाँ ने भी प्रांगण में सफ़ेद संगमरमर की एक मस्जिद बनवायी जो शाहजहाँनी मस्जिद कहलाती है।

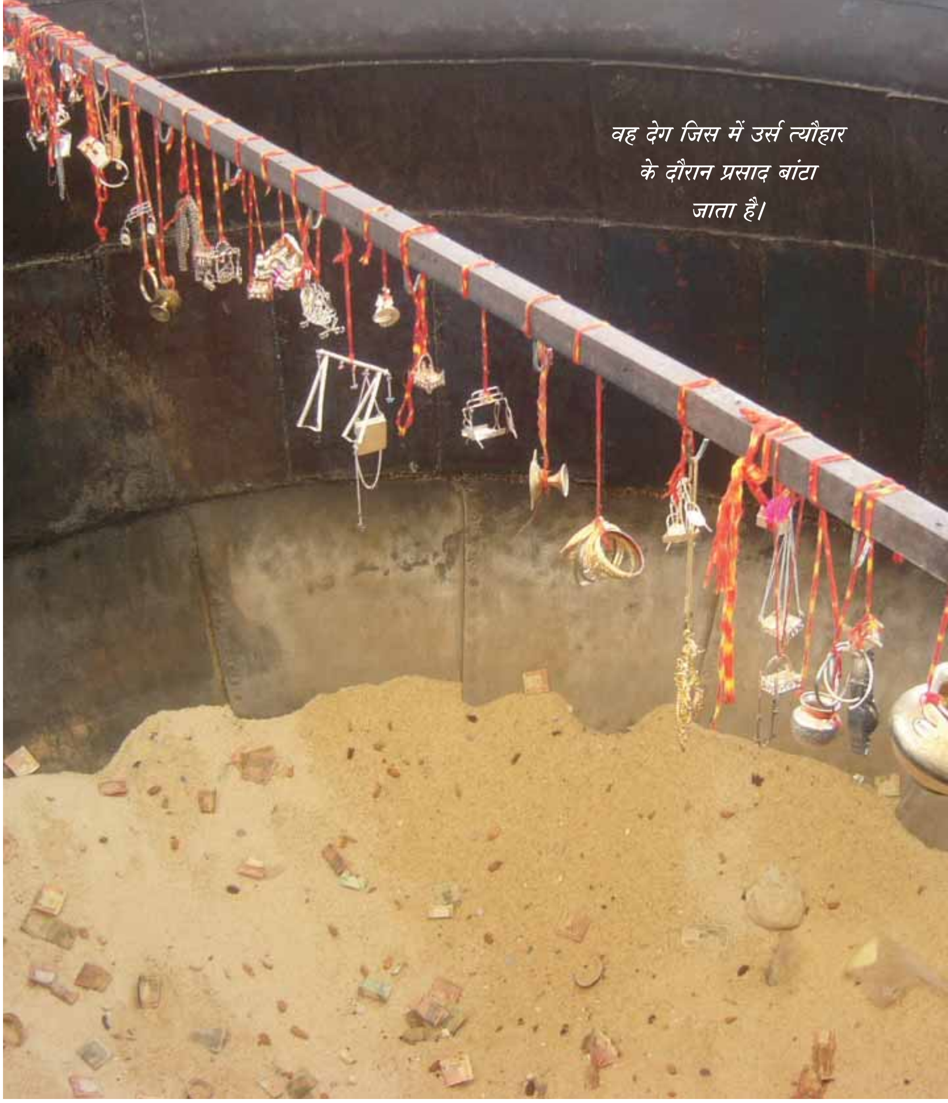

वह देग जिस में उर्स त्यौहार के दौरान प्रसाद बांटा जाता है।

उर्स त्यौहार के दौरान भक्त चादर की पेशकश देते हुए।

भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश एवं अन्य देशों से तीर्थयात्री अपनी मुरादों को पाने के लिए संत के मकबरे पर चादर चढ़ाने आते है।

दरगाह का भीमकाय प्रवेशद्वार वर्ष 1911 में हैदराबाद के निज़ाम द्वारा बनवाया गया था। प्रांगण में स्थापित दो विशाल डेगों को बादशाह अकबर और जहाँगीर द्वारा दान दिया गया था। उर्स के दौरान, चावल से बनाया गया *तब्बर्रुख*/ प्रसादी और खीर (पयासम) को इन दो बड़े बर्तनों में पकाया जाता है। एक और आकर्षक दस्तूर जो बादशाह अकबर के ज़माने से चला आ रहा वह है श्रद्धालुओं द्वारा इन बर्तनों में से गर्म पकाया हुआ तब्बर्रुख लूटने का।

11 अक्टूबर, 2007 को, दरगाह परिसर में एक दुखद घटना घटी। वह रमजान का पाक रोज़े का समय था और शाम की नमाज़ बस खत्म ही हुई थी। प्रांगण में भी उनका रोज़ा तोड़ने के लिए इकठ्ठा हुए थे। एक टिफ़िन कैरियर में रखा गया एक बम फट गया जिससे तीन लोगों की मृत्यु हुई और 17 घायल हुए।

यद्यपि यह घटना दुखद हो, फिर भी इस दुर्घटना ने श्रद्धालुओं के विश्वास को कम नहीं किया, जो पहले की तरह ही अपनी अटल आस्था के साथ बड़ी संख्या में अजमेर आते है और अपनी मुरादों को पातें है।■

Please pay your *Rotary News* Dues at the earliest

to enjoy uninterrupted supply. Please note that *Rotary News* subscription is mandatory and defaulting clubs can be suspended by RI.

List of defaulting clubs and the club dues details on our website ***www.rotarynewsonline.org***

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians : 12,37,483

Clubs : 35,610

Districts : 534

Rotaractors : 2,33,312*

Clubs : 10,144*

Interactors : 4,95,857*

Clubs : 21,559*

RCC members: 2,16,315*

RCC : 9,405*

* As on April 3, 2017

Membership in India, Sri Lanka, Pakistan, Bangladesh, Nepal, Bhutan and Maldives

As on May 1, 2017

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	109	4,497	189	55	221	171
5	2982	65	2,862	84	55	109	41
5	3000	119	5,298	442	241	539	112
4	3011	73	3,213	594	45	99	28
4	3012	86	3,636	770	62	114	55
5	3020	86	4,307	217	109	459	351
4	3030	99	5,486	695	71	265	156
4	3040	90	2,160	252	51	109	135
4	3051	66	2,506	194	47	146	335
4	3052	61	3,883	884	39	143	134
4	3053	68	2,724	416	16	35	93
4	3060	98	4,084	398	58	111	127
4	3070	108	3,181	277	66	152	54
4	3080	77	3,366	205	63	208	106
4	3090	80	2,126	75	33	36	122
4	3100*	72	1,728	70	10	72	146
6	3110	112	3,897	210	52	49	98
6	3120	74	3,001	288	36	50	50
4	3131	127	5,493	1,021	86	261	73
4	3132	98	4,156	421	59	153	121
4	3141	86	5,360	1,053	103	240	86
4	3142	78	2,996	425	60	180	65
5	3150	98	3,538	337	90	223	108
5	3160	66	2,332	105	20	44	81
5	3170	128	5,602	362	50	280	159
5	3181	71	3,225	214	28	168	102
5	3182	79	3,392	260	27	265	92
5	3190	147	5,783	693	132	336	48
5	3201	140	5,226	312	91	119	46
5	3202	131	5,056	248	92	419	40
5	3211	135	4,438	254	11	80	121
5	3212	96	3,921	204	106	256	126
5	3220	70	1,954	245	80	190	75
5	3230	147	6,284	544	168	456	311
6	3240	87	3,053	350	58	142	142
6	3250	98	3,720	618	35	198	173
6	3261	70	2,366	226	15	100	42
6	3262	87	3,156	367	41	71	73
6	3271	72	1,386	205	43	16	13
6	3272	136	2,718	449	36	36	36
6	3281	195	5,724	776	220	79	184
6	3282	128	3,662	273	124	33	40
6	3291	148	3,868	672	62	126	570
6	3292	115	4,475	676	112	106	105
	Total	**4,376**	**1,64,839**	**17,570**	**3,058**	**7,494**	**5,346**

**Non-districted*

Source: RI South Asia Office

स्त्री के सम्मान में आयोजित कार रैली

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी ई-क्लब, मंडल 3262 की अध्यक्षा, ठींप जयश्री मोहंती, रोटरी कलिंग महिलाओं के TSD (टाइम स्पीड डिस्टेंस) रैली के बारे में बात करते हुए कहती हैं कि, ''जब महिलाएं पुरुषों को ड्राइविंग लेन में ओवरटेक करती हैं तो वे इसे एक चुनौती के रूप में नहीं लेते हैं। अब वे इसे गंभीरता से ले रहे हैं और वैसे ही रोटरी भी हम महिलाओं को गियर को नियंत्रित करने का अवसर दे रही है।''

TSD प्रारूप से सभी महिलाओं प्रतिभागियों को परिचित कराने के लिए एक प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया, जिसके आधार पर विजेताओं का चयन किया गया।भुगनेश्वर में DG नारायण नायक और उनकी पत्नी ठींप सुनंदा नायक ने 100 किलोमीटर रैली को ध्वजा दिखाकर रवाना किया। रैली को पूरा करने के लिए एक निर्धारित मार्ग और एक समय सीमा का चयन किया गया था।

विजेताओं को रु 75,000 का नकद पुरस्कार दिया गया। सभी प्रतिभागियों को ट्राफियां और उपहार प्रदान किया गया। रोटरी में शामिल होने के लिए अधिक से अधिक महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए समापन समारोह में विभिन्न रोटरी परियोजनाओं को प्रदर्शित करता हुआ एक वीडियो क्लिप दिखाया गया। ■

मदुरै के युवाओं के लिए RYLA

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट, मंडल 3000, ने अलगर कोइल, मदुरै में पहाड़ी की ढाल पर अवस्थित महात्मा आवासीय विद्यालय में RYLA शिविर का आयोजन किया।12 कॉलेजों के 56 छात्रों ने कार्यक्रम के अंतर्गत एक व्यापक विषय, समझना-विश्वास करना-प्राप्त करना, के तहत गहन प्रशिक्षण मिला।

मदुरै कॉलेज के टी रामनाथन (21), जिसे 'Mr. RYLA' के सम्मान से विभूषित किया गया, कहता हैं, ''मुझे व्यक्तिगत रूप से सीखने को मिला कि व्यक्तिगत और टीम के लक्ष्यों के मध्य तालमेल कैसे बिठाया जाता हैं।''

दीपक, राष्ट्रीय साहसिक और नेतृत्व स्कूल (नेशनल एड्वेंचर एंड लीडरशिप स्कूल), कोयम्बटूर, से आए हुए एक सुविधाप्रदाता ने समूह की गतिशीलता की पेचीदगियों की एक झलक दी और बताया कि बेहतर परिणाम के लिए कैसे नेतृत्व के गुणों का प्रभावी उपयोग किया जा सकता है।

एक कैम्प फायर ने कालेज के छात्रों के लिए विभिन्न प्रकार के कलाओं के अपने कौशल के प्रदर्शन के लिए प्रवेश द्वार खोला और अलगर

कोइल पहाड़ियों पर ट्रेकिंग ने मजा और रोमांच का एक मिश्रण प्रस्तुत किया।

मनोदशा को संक्षेप में व्यक्त करते हुए, कृषि कॉलेज के च कलैवनी (23), जिन्हें 'Ms RYLA' का खिताब दिया गया, कहती है कि शिविर ने उसे टीम में काम करना सिखाया है और उसे आत्मविश्वास प्रदान किया है। उसने टीम के निर्माण प्रक्रिया में अपने विचारों को व्यक्त करने की प्रक्रिया भी सीखी है। पायलट संकाय टी रवि और RYLA अध्यक्ष रवि पार्थसारथी ने कार्यक्रम का संयोजन किया। PDG आर राजाराम के बिदाई सुझावों के साथ कार्यक्रम का सफल समापन संपन्न हुआ। ■

बाँधानी – सुंदर बिंदुओं का जादू

सबिता राधाकृष्ण

गुजरात के रंग, लोग, प्रचुर मात्रा में अनेक किस्म के कपडे आदि से मैं हमेशा मुग्ध हुये बिना नहीं रही हूँ। लाल बाँधानी ओढनियाँ, लहराते लहंगे, चाँदी के भारी जेवर, कानों में लटकती बालीयाँ पहनी युवतियों ने इन्हे एक तरह से 'फैशनेबुल' बना दिया। मर्दों को भी कम नहीं आँका जा सकता जो गहने, सुंदर तरीके से सिलाये गये पहरान, धोती, हाथ से सलीके से बनाये गये छोटे छोटे बिंदुओं वाली – आमतौर पर लाल रंग में – पहनते हैं।

मैं कारीगरों के साथ लडखडाती बसों में गयी हूँ; मैं उन्हे अचरज के साथ देखती रहती हूँ जो आपस में गपशप करते हुये बीच में गर्दन बाहर निकालकर झाँक झाँककर देखते रहते हैं कि कहीं उनके उतरने की जगह तो नहीं आ गयी। परंपरा के मुताबिक कढाई का हुनर माँ से बेटी को सौंप दिया जाता है और इस तरह बनाये गये रंगबिरंगी कपडों को दहेज में देने के लिये संजोकर रख दिया जाता है।

यहाँ बाँधानी ही प्रधान कला है लेकिन इस बात को निश्चित बतलाना संभव नहीं कि 'बाँधो और रंगो' (बंधेज की रंगाई) की यह कला गुजरात में कब से शुरू हुयी। मध्यकाल के जमाने में पाये गये रेशम के छोटे टुकडों को देखते हुये अंदाजा लगाया जा सकता है कि जैन साधुओं ने अपने हस्तलेखों और अपनी पेंटिंगों को संजोकर रखने के लिये रेशम का उपयोग किया होगा। बाँधानी की तकनीकियों को हस्त कलाकारों के उन समुदायों द्वारा गुजरात में स्थानाँतरित कर दिया गया जो सिंध से शायद 16वी सदी में यहाँ आये। बाँधानी के लिये जाम नगर एक प्रारंभिक रंगाई केंद्र रहा है क्यों कि रंजकों के रंगों की गहराई को यहाँ का पानी बाहर ले आ पाता है। कच्छ में बेहद सूक्ष्म डिजाईन तैयार किये जाते है जिन्हे रंगाई और विपणन के लिये भेजा जाता है। कपडों में कलाकारी दिखाने वाले कारीगरों का खत्री समुदाय, जिनमें

हिंदु और मुसलमान दोनों होते हैं, 17वी सदी से बाँधानी उत्पादन के अहम हिमायती रहे हैं। कहा जाता है खत्री समुदाय ने जुलाही का पेशा इसलिये अपनाया ताकि वें भगवान परशुराम के क्रोध से बच पाये जो भगवान विष्णु का अवतार थें और ब्राह्मणों के तीव्र रक्षक थें।

भुज और कच्छ दोनों एक जटिल प्रक्रिया को अपनाते हैं। पहले, कपडे को फीका कराया जाता

रेशम के छोटे टुकडों को देखते हुये अंदाजा लगाया जा सकता है कि जैन साधुओं ने अपने हस्तलेखों और अपनी पेंटिंगों को संजोकर रखने के लिये रेशम का उपयोग किया होगा।

है और विधिपूर्वक अनेक तहों में मोडकर रख दिया जाता है और मोडकर रखे गये कपडे के किनारों को सी लिया जाता है। रंगारी यानि रंग-विशेषज्ञ सबसे ऊपर वाले तह पर डिजाईन बनाता है। जली गैरिक मिट्टी और पानी को मिलाकर, एक डोरी पर पोतते हुये वें डिजाईन किये जाने वाली जगह को चिन्हित करने उस पर लकीर खींचते हैं। फिर वें डिजाईन पर लकडी के साचे को उसी रंग में डुबोकर

दाएं : अब्दुल जब्बार खत्री बंधिनी कपड़े को डिज़ाइन करते हुए।

नीचे : खत्री समूह द्वारा रुपंखित एक बंधिनी साड़ी।

छापते हैं। इसके बाद वें कपडे के उन हिस्सों को चुनते हैं जहाँ उसके स्वाभाविक, मिट्टी के रंग को ही रखना होता है। इन छोटे हिस्सों को एक नुकीली कील से ऊपर की ओर धकेला जाता है। इन उभरे हिस्सों को तारों से बाँधा जाता है और एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक इसी प्रक्रिया को अपनाया जाता है। केवल महिलायें और लडकियाँ ही बंधेज के इस सूक्ष्म काम को कर पाती है जिसे मुश्किल से ही पुरुष कारीगर कर पाते हैं। पहला रंगाया गया हिस्सा फीका होता है आम तौर पर पीला। जिन हिस्सों को पीला ही रखना होता है, उन्हे दोबारा बाँधना होता है जब कि कपडे के शेष हिस्सों को गहरे रंग में रंगाया जाता है। इस 'बाँधो और रंगो' वाली प्रक्रिया को जितने रंगों में जरुरी हो उतने रंगों के लिये दोहराया जाता है। इसी तकनीक को साडी के किनारे तथा पल्लू के लिये भी अपनाया जाता है। आजकल अंगोछों के लिये शीत रंजक और प्लास्टिक के पत्तर आसानी से उपलब्ध है जिसकी वजह से यह प्रक्रिया कुछ सरल हो जाती है, लेकिन सच्चाई यही है कि यह एक हस्तकला है जो उसे बेहद खूबसूरत बना देती है।

बाँधानी कपडे को अक्सर, बाँधे गये धागे को बिना हटाये ही बेचा जाता है और आज सिलवटदार कपडों का ही फैशन है। कपडा जितना ज्यादा महीन हो, डिजाईन उतना ही बढिया दिखेगा। जार्जट, मलमल, कोटा और हल्के रेशम के कपडों में बाँधानी बडी अच्छी लगती है। हालाँकि भारी रेशम का भी उपयोग किया जा सकता है जैसे सैटीन, गज्जी सिल्क आदि, इन पर बाँधिनी काम करना मुश्किल है। बाँधिनी का काम ओढनियों, पगडियों के कपडों पर, शॉल और स्कर्ट, टॉप्स्, कुर्तियों के कपडों पर भी किया जा सकता है।

अनेक प्रचलित वस्त्रों की भाँति, बाँधानी का अपना एक सामाजिक-धार्मिक महत्व है। सूती

अब्दुल जब्बार खत्री काम पर, टाई और डाई प्रक्रिया के लिए कपड़े तैयार करते हुए; दाएं: खोजा समुदाय द्वारा निर्मित लेहरिया डिजाइन।

या गज्जी सिल्क के कपडे में घर चोला या जरी चौकडा जिसे दुल्हन को उसके ससुराल वाले देते हैं, (ज्यादातर मारवाडी और जैन समुदाय में), तेज लाल रंग की, शादी की साडी है जिसमें चौरसों के बीच की गयी बाँधानी की सात आकृतियों में भारी जरी के चारखाने होते हैं। वैवाहिक रस्मों के दौरान दुल्हन इसे अपने सिर पर ओढती है। भाई की ओर से दी गयी भेंट वीरा भेंट भात का अपना एक विशेष महत्व है।

खोजा समुदाय अंतर्गथित, गोलाकार डिजाईन और लहरीया डिजाईन बनाते हैं जिसमें बाँधानी को लहरदार आडी-तिरछी आकृतियों में लाया जाता है। कच्छ के बाँधानी कारीगर तोता, हाथी,

पंछी, कमल, जेवर, महिलायें आदि के चौखटों में अनेक डिजाईनों को बाँध कर रखते हैं और जहाँ कहीं जरुरत हो हरा रंग मिला देते हैं। बावन बाग डिजाईनों के लिये आम तौर पर हरे और लाल रंग में बंधेज होते है जिसमें तिरछे होते है और हर एक चौकोर में विभिन्न डिजाईन बनाये जाते है जैसे चाकली चाकलो, हाथी, पुतली (गुडिया), मोर, पोपट (तोता), पाचाक (पाँच चक्का), पनीहारी (मटकी उठाने वाली आकृति), लहर, खारेक (जैसे अंगूर में)। कुछ ऊँचे वर्ग के लोग, गोटे लगाकर, अनेक तरह के किनारे सिलाकर तथा कढाई से इस कारीगरी और खूबसूरत बना देते हैं।

खत्री परिवार सदियों से पारंपरिक बाँधानी रंगकार है, जो पीढियों से भुज के खत्री चौक में रहते आ रहे है और जैसा कि होता है उन्हे मशीनों में तैयार किये गये मिलते जुलते मालों का सामना करना पडा जिन्हे काफी सस्ते दामों में बेचा जाता था जो इस हस्तकला की परंपरा के लिये खतरा बन गया। अब्दुल जब्बार खत्री ने, जिन्होने मुझे यह कहानी बतलायी, विवरित किया कि किस तरह उनके परदादा ने राज घराने के लिये पटाखे बनाना शुरू किया और फिर साइकिल की मरम्मत का काम शुरू किया, जब कि उनके पिता को बैंक में नौकरी मिल गयी। साथ ही साथ सरकार ने भी राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बाँधानी को बढावा देना शुरू किया।

जब्बार की कहानी शिक्षण के साथ साथ पारंपरिक कौशल सीखने की महत्ता की बढिया मिसाल है जो हर एक हस्तकला-कार्यकर्ता का सपना है। उन्होने, अपने भाई के साथ, परिवार के निपुणकों से सदियों पुरानी तकनीकियों का उपयोग करते हुये कपडे को बाँधकर, उसे रंगाने की सूक्ष्मता सीखी। जब्बार ने वाणिज्य (कॉमर्स) में स्नातक

जब्बार की कहानी शिक्षण के साथ साथ पारंपरिक कौशल सीखने की महत्ता की बढिया मिसाल है जो हर एक हस्तकला-कार्यकर्ता का सपना है।

घरचोला - मारवाड़ी / जैन दुल्हन की शादी की साड़ी ।

हासिल की और यह कारोबार तथा अर्थ शास्त्र की दुनिया को समझने में उनके लिये मददगार साबित हुआ। असली सुअवसर तब आया जब उन्हे शिबोरी वर्ल्ड नेटवर्क द्वारा आयोजित कार्यशाला में हिस्सा लेने के लिये नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाईन द्वारा आमंत्रित किया गया, जहाँ उन्हे ऊैर खपल., नामक अमरीकी कंपनी का परिचय मिला, जो परिधानों में विशेषता रखता है, जिनके प्रतिनिधियों ने खत्री परिवार के साथ बंधेज की रंगाई किये गये परिधानों के संग्रहण का काम किया।

अब्दुल जब्बार ने UNESCO से उत्कृष्टता की मोहर (Seal of Excellence) तथा World Craft Council Award of Excellence, (विश्व कला परिषद उत्कृष्टता पुरस्कार) Craft council of India (भारतीय कला परिषद) से शाँता प्रसाद पुरस्कार प्राप्त किया। वें सैंटा फै इंटरनैशनल फोक आर्ट मार्किट तक भी पहुँच गये और 2007 में यूके के विक्टोरीया एंड एलबर्ट म्यूजीयम में, वारविक विश्वविद्यालय द्वारा प्रायोजित पारंपरिक वस्त्रों पर एक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। मेरे लिये वह साडी बेहद मूल्यवान है जिसे मैंने उनसे मंगवाई थी; मध्य रात्री के आकाशी नीले रंग में आधुनिक, तारों से बखेरी गयी बाँधानी कोटा साडी जो अनोखी और आकर्षक थी।

खत्री परिवार ने SIDR क्राफ्ट के नाम के तहत तरुण ताहीलीयानी, अनीत अरोडा, एब्रहैम एंड ठाकूर, राजेश प्रताप सिंह, नीरू कुमार जैसे भारतीय फैशन डिजाईनरों तथा अंतर्राष्ट्रीय खरेददारों के साथ काम किया है।

इन कारीगरो के लिये चुनौति है लोक कलाकारों के रूप में अपनी छवि को बनाये रखना और साथ ही साथ कुछ नये उत्पादन ले आना जो समकालीन, उपयोज्य और वहनीय हो।

चित्र: सबिता राधाकृष्ण

एन कृष्णामूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी अंकलेश्वर टीआरएफ शताब्दी वर्ष समारोह का उत्सव मनाता है

टीम रोटरी न्यूज़

प्रतिबद्धता के साथ मानवता की सेवा करते हुए, रोटरी क्लब अंकलेश्वर, मंडल 3060, ने चार सामाजिक परियोजनाओं को टीआरएफ शताब्दी वर्ष समारोह को चिन्हित करने के लिए समर्पित किया। इस महा समारोह की अध्यक्षता रोई निदेशक मनोज देसाई ने की। EMGA अशोक पंजवानी ने इन वैश्विक अनुदान परियोजनाओं के सफलतापूर्वक कार्यान्वियन के लिए उनका समर्थन एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।

RID मनोज देसाई और शर्मिष्ठा ने जिटाली गांव में एक खाद का निर्माण किया। (बायें से) क्लब के अध्यक्ष सुनील व्यास, EMGA अशोक पंजवानी, डीजी पिंकी पटेल और मीरा पंजवानी।

साक्षरता

पहुँच में, जिसका शीर्षक 'दूसरा मौका' था, क्लब, जगायि उद्योगों एवं ओएनजीसी अंकलेश्वर एस्टेट की सहायता से, 18 से 40 वर्ष की आदिवासी महिलाओं तक पहुँचा जो किसी कारण से उनकी शिक्षा पूर्ण नहीं कर सकीं और उन्हें उनकी माध्यमिक शिक्षा को पूर्ण करने में उनकी मदद के लिए उन्हें शैक्षणिक एवं तार्किक सुविधाएं प्रदान की।

जब एक आदिवासी गाँव बोइद्रा की महिदा हीराबेन ने कहा कि वह अपने इलाके की ''अन्य लकियों को पाना एवं प्रेरित करना चाहती है,'' जिटाली गाँव की उसकी मित्र पठान सबीहा ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा को व्यक्त किया, हालाँकि उसे अपनी पाई पूरी करने के लिए उसके परिवार के के विरोध का सामना करना पड़ा।

''एक विशेषता जो हर महिलाओं में सामान्य थी वह थी कि उन्हें साहस एवं की मेहनत से सामाजिक बाधाओं को पार करना पड़ा। क्लब ने उन सभी को आश्वस्त किया है,'' क्लब के पूर्व अध्यक्ष जिनेन्द्र कोठरी ने कहा।

स्वच्छता

अगर सब कुछ योजना अनुसार हुआ तो जिटाली जल्द ही भरूच ज़िले का पहला खुले में शौच मुक्त गाँव बन जायेगा। इसके 'ग्राम कल्याण' परियोजना के अंतर्गत, क्लब, भरूच एनवायरो इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (BEIL) के सहयोग से, रु 86 लाख की लागत से इस गाँव में 478 शौचालय का निर्माण करवा रहा है। पहला चरण में 200 शौचालय निर्मित किये जा चुके है, जिनका उद्घाटन फरवरी में देसाई ने किया था।

अपशिष्ट प्रबंधन

श्रॉफ एस. आर. रोटरी इंस्टिट्यूट ऑफ़ केमिकल टेक्नोलॉजी और BEIL के सहयोग से क्लब ने जिटाली में ठोस अपशिष्ट (रसोईघर का अपशिष्ट) को खेती की खाद में परिवर्तित करने की पहल शुरू की, एक संवहनीय ढंग से।

फिरोज़ हसन सोलंकी, नवी नगरी गाँव के एक ग्रामीण ने कहा, ''हम ना केवल स्वयं इसे अपना रहे है बल्कि हमारे बच्चों को भी इसे अपनाने के लिए प्रशिक्षित कर रहे है एवं इसके लाभ को दूसरे गाँवों के ग्रामीणों के मध्य फैला रहे है ताकि वे भी एक स्वच्छ वातावरण का आनंद ले सकें।''

एक अन्य ग्रामीण अम्मार गोमान को गर्व है कि वह स्वच्छ भारत मिशन में सक्रियता से सम्मिलित है और वह रोटरी की अपशिष्ट प्रबंधन व्यवस्था को स्थापित करने के लिए धन्यवाद देता है।

100 चार-मार्ग परीक्षण फलक

क्लब ने चार-मार्ग परीक्षण फलकों को अंकलेश्वर एवं उसके आस-पास के 100 स्कूलों में वितरित किया ताकि रोटरी के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला जा सके एवं इसकी सार्वजनिक छवि में वृद्धि की जा सके।

इन परियोजनाओं के अलावा, रोटरियनों ने 100 महिलाओं को कोर्स पूर्ती के प्रमाण-पत्र भी प्रदान किये जिन्होंने रोटरी सशक्तिकरण केंद्र से व्यावसायिक शिक्षा पूर्ण की थी। कार्यक्रम ने मोबाइल शिक्षा वेन की भी तीसरी सालगिरह मनाई जिसे एक वैश्विक अनुदान के अंतर्गत शुरू किया गया था। ■

विश्व शांति के लिए आयोजित एक संगोष्ठी

के टी पी राधिका

पुणे में MAEER's के MIT कॉलेज में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रज्ञा और शांति संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर TRF अध्यक्ष पॉल नेटज़ेल ने कहा, 'विश्व शांति प्रबुद्ध जनता के विचारों के साथ घर से आरंभ होता है। विश्व शांति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, हमें अपने घरों और समुदायों में भी शांति स्थापित करना चाहिए।रोटरी क्लब पुणे शिवाजीनगर की मेजबानी में आयोजित इस दो दिवसीय कार्यक्रम का संचालन मंडल 3131 द्वारा किया गया।

नेटज़ेल आगे कहते है, 'रोटरी के DNA में शांति है। हम जमीनी स्तर पर प्रशिक्षण, समुदाय आधारित कार्यक्रमों, कूटनीति और शांति छात्रवृत्ति के माध्यम से शांति को प्रोत्साहित करते हैं। प्रत्येक बार जब आप रोटरी के छह फोकस क्षेत्रों में से किसी एक के लिए कार्य करते हैं, तो आप वास्तव में शांति के लिए कार्य कर रहे हैं।' जब दो देशों के रोटरियन अंतरराष्ट्रीय सेवा परियोजनाओं में एक-साथ मिलकर कार्य करते हैं, तो वे सांस्कृतिक भिन्नता और सीमाओं से परे, मानवता की भलाई के साथ काम करते हैं। एक्सचेंजे कार्यक्रम के अंतर्गत रोटरी प्रति वर्ष 9,000 छात्रों को भेजता है।

PDG चंदू अग्रवाल और डॉ C P एंटो, शांति चैनल के संस्थापक और कार्यकारी अध्यक्ष, नागालैंड, को रोटरी नेशनल पीस अवार्ड्स से सम्मानित किया गया।विश्व शांति केंद्र के माध्यम से शांति को बढ़ावा देने के लिए, MAEER's के MIT के संस्थापक डॉ विश्वनाथ कराड को "रोटरी वर्ल्ड पीस प्राइज" से सम्मानित किया गया। 'महत्वपूर्ण विकास' के बावजूद, संपूर्ण विश्व में व्यापक आतंकवाद और नरसंहार के कारण मन अशांत है। केवल विज्ञान और आध्यात्मिकता का एक संघ ही विश्व में सद्भाव स्थापित करने में सफल होगा; *वसुधैव कुटुंबकम* की भारतीय विचारधारा इसे प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी,' उन्होंने आगे कहा।

TRF चैर -इलेक्ट पॉल नेटज़ेल PDG चंदू अग्रवाल को सम्मानित करते हुए। चित्र में (बाएं से) रोटरी क्लब पुणे शिवाजीनगर के अध्यक्ष प्रदीप वाघ, DG प्रशांत देशमुख और PDG विनय कुलकर्णी भी शामिल हैं।

इस कार्यक्रम की संकल्पना ठींप प्रदीप वाघ ने की थी, जिसमें भारत, संयुक्त राज्य अमरीका, जर्मनी, नेपाल और ऑस्ट्रेलिया से आए हुए करीब 30 वक्ता ओं ने उपस्थित 700 प्रतिनिधि यों को संबोधित कियों।■

रिश्तों को मजबूत करना

टीम रोटरी न्यूज

यह एक परिवारिक मिलन के समान था। मध्य प्रदेश के आकर्षक खजुराहो में आयोजित मंडल सम्मेलन का उल्लेख करते हुए मंडल 3120 के डीडजि प्रमोद कुमार ने कहा कि," दो दिनों तक सामान्य गर्मजोशी और सौहार्द के माहौल का आनंद उठाते हुए रोटरियन एक-दूसरे से जुड़ें, तथा अपने विचारों और उपलब्धियों को साझा किया।

पीआरआईडी शेखर मेहता और राशी को डीजी प्रमोद कुमार और पत्नी प्रेमलता यादव ने RIPR पामेला अकिनस की उपस्थिति में सम्मानित किया।

DGN-मनोनीत (रोटरी क्लब वाराणसी ईस्ट के संजय अग्रवाल को बाद में विजेता घोषित किया गया) के चुनाव के लिए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग के आगमन के साथ, चुनाव प्रचार के लिए कोई दबाव नहीं था और इस कारण से रोटरियन अपना ध्यान सम्मेलन के मजेदार पक्ष पर केंद्रित कर सके। "पहली बार, हमें 600 की संख्या पर पंजीकरण को बंद करना पड़ा क्योंकि सम्मेलन में 74 में से 67 क्लबों का प्रतिनिधित्व किया गया था।"

कनेक्टिकट मंडल 6960 से RIPR पीडीडजि पामेला अकिंसऔर उनके पति रोटेरियन बैरी लेविंसन भी थे। कुमार ने कहा कि, "दर्शकों के साथ उनका जुड़ाव एक पाइडर बाँसुरीवाले के सम्मोहन प्रभाव के समान था।" उन्होंने एक वैश्विक अनुदान, जिसका उपयोग रेनुकूट में एक अस्पताल को सुसज्जित करने के लिए किया गया।

साक्षरता परियोजनाओं के संबंध में प्रतिनिधियों को नवीनतम सूचना प्रदान करते हुए, PRID शेखर मेहता ने कहा, "हम पोलियो के साथ जिस उत्साह से लड़ाई की, आइए उसी उत्साह के साथ हम निरक्षरता से लड़ें।" RPIC सैम पटिबंदला ने जानता के मध्य रोटरी की छवि को सुधारने के विधियों के बारे में बताया।■

Shekhar Mehta
Chair, RILM

Rotary India Literacy Mission

Literacy Focus

Aiming for Total Literacy & Quality Education

Just one click away from your Asha Kiran child

Have you seen the progress of the Asha Kiran child you sponsored? If not, then please visit *www.rotaryteach.org* and click on 'My Asha Kiran Child' tab to know about the progress of your sponsored child. Each of the approximately 27,000 donors have been tagged for long now.

RILM's call for volunteers for Asha Kiran

Have you downloaded the T-E-A-C-H App yet? If not, do it now. Go to Play Store and search for 'TEACH by RILM'. Once downloaded, go to 'Engage' on the home page and register yourself as a TEACH volunteer. Currently we need volunteers to train teachers of the Asha Kiran centres.

The training would focus on classroom management skills of teachers teaching Hindi, English, Bengali and Mathematics to the children enrolled in the Centre.

We need volunteers mostly from Bihar, West Bengal, Uttar Pradesh, Rajasthan, Odisha, Delhi and Madhya Pradesh.

Launch of Swabhimaan with the NGO model

Rotary India Literacy Mission (RILM) has embarked on a mission to make a difference in the lives of non-literate adults (15+ years) in India through its Adult Literacy Project — Swabhimaan: Dignity through Education.

Earlier these Swabhimaan centres were run independently by Rotarians. Innovation and volunteerism are at the core of the programme with locally devised incentives used to motivate adult non-literates to engage in a literacy programme and socially responsible volunteerism at every level.

However we wanted to see if Swabhimaan centres through the NGO model will yield any better results. So we have done a pilot in collaboration with two NGOs in West Bengal — Agradut Pally Unnayan Samity in Howrah and Sitarampur Vivekananda Seba Pratisthan in Magrahat.

What is an NGO model?

RILM will select and tie up with various NGOs who will in turn identify adult non-literates across India and enroll them for the functional literacy course at the Swabhimaan centres. The course spreads across four months, at the end of which the learner appears

An adult learner at Agradut Pally Unnayan Samity in Howrah.

for the NIOS examination which takes place every March and August. On clearing the examination, the beneficiaries are certified as functionally literate by the Government of India.

RILM's role

RILM's role would be to identify the partnering NGO, sign an MoU with the NGO and monitor the entire process.

One hundred learners have enrolled from each of these two NGOs and they are mostly women from BPL background and are engaged in seasonal farming. The NGOs focus on imparting functional literacy through the Swabhimaan centres and train teachers for mentoring and guiding the learners through the course; organise supplemental educational sessions to raise awareness about health, hygiene, sanitation and governmental schemes and strengthen the SHGs through the literacy course.

While the learners are in the age group 20–65 and members of SHGs in one NGO, in the other, they are in the age group 17–60 and are engaged in weaving zari work on sarees. They are more confident and are mostly self-reliant, taking care of the daily accounting and documentation of the SHGs or the zari weaving work they are engaged in. They help their siblings and children with studies at home and are enthusiastic to continue education, post the course completion.

All the learners had appeared for the NIOS examination on March 19 and are awaiting results.

A Swabhimaan centre of Sitarampur Vivekananda Seba Pratisthan.

1,000 municipal corporation teachers trained in Mumbai

Rotary International District 3141 organised a teacher training programme during April 15–27 for 1,000 BrihanMumbai Municipal Corporation teachers. The training was held for six hours for a batch of 100 teachers each day.

The teachers were trained on topics such as curriculum, pedagogy, enhancement of English language skills and life skills, student leadership, personality development, gender sensitivity and stress management.

There were four trainers and they conducted various activities and games to bring out the essence of each topic. The teachers were also provided with relevant reference materials. DG Gopal Mandhania, ZLC Balkrishna Inamdar, DLCC Sunil Mehra, Education Officer Mahesh Palkar, Deputy Education Officer Prakash Charate and District Trainer Mahendra Sawant attended the programme.

Six schools converted into Happy Schools with RILM Grant

Six schools in Maharashtra, Tamil Nadu and Haryana have been supported by RILM with grant from Euro Kids. Rotary Clubs of Pune Westside, Hosur Midtown, Rasipuram and Inner Wheel Club of Ambala had been involved in transforming these schools into Happy Schools.

To receive financial support, a Rotary Club has to apply for a grant online on our Rotary TEACH website. These grant applications were thoroughly reviewed and sanctioned at various levels such as the Rotary Club President, District Literacy Chair, District Governor, Happy School National Committee Members and the officials at the Rotary India literacy Mission.

A club seeking grant has to give quotations from specific vendors and list out other strategies of implementing the project. The application will be scrutinised and modified at various levels. RILM then reviews the proposal, assesses the costs involved and other details. The final payment, which is 50 per cent of the cost incurred by the clubs or Rs 2.5 lakh, whichever is lower, will be made after the receipt of the completed report from the club, along with utilisation certificates signed by a Chartered Engineer and Chartered Accountant.

No 'Bars' for Education

Chairman of Inner Wheel District 325 Deepti Sahay, along with Shweta Sinha, CLCC of Inner Wheel Club of Patna and Club President Priyanka Kumar, conducted an adult literacy programme for the inmates of Beyur Jail. There were 80 women and 15 children. Though they were initially skeptical about learning they later found the classes informative and engaging. While some of them enrolled for the adult literacy classes, others took up the vocational courses.■

एक बालाधिकार योद्धा

जी सिंह

अनोयारा खातून (20) जो पश्चिम बंगाल के उत्तरी 24 परगना जिले के संदेशखाली प्रखंड के छोटो अस्करा गाँव की रहने वाली है, एक ऐसे संसार का स्वप्न देखती है जहाँ प्रत्येक बच्चा अपना/अपनी अधिकारों से परिचित हो और उसकी रक्षा के लड़ने में सक्षम हो। उसे उसके गाँववासियों तथा मित्र उसे ''अपनी मलाला'' के नाम से संबोधित करते है। उसकी उपलब्धियाँ भी मलाला से थोड़ी भी कम नहीं है। इस वर्ष अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर, अनोयारा को महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में उसके कार्यों के लिए राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

कॉलेज के द्वितीय वर्ष की छात्रा, वह न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र का दो बार दौरा कर चुकी है, जहाँ उसने णछ महासभा में बालाधिकारों और लड़कियों की शिक्षा पर भाषण दिया, और उसे णछ के महासचिव बान की मून, माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक बिल तथा मेलिंडा गेस्ट्स से मिलकर अत्यंत प्रसन्नता हुई परंतु इसे इस बात का मलाल है कि वह मलाला यूसुफ़जई से नहीं मिल सकी, हालाँकि वह भी UN कार्यालय में थी।

अनोयारा संदेशखाली और मिनाखान प्रखंड के 80 गाँवों में लगभग 100 बाल समूहों को संचालित करती है जो बच्चों को उनके अधिकारों के बारे में जागरुक बनाने के लिए कार्य करती है और जहाँ कही एक बच्चे की तस्करी की जा रही होती है या बाल विवाह आयोजित किया जा रहा होता है, वहाँ पहुँच कर वह आवश्यक कार्यवाही करती है।

अनोयारा, तस्करी के 200 से अधिक प्रयासों को विफल करने में सफल रही हैं, और 300 से अधिक बच्चों को मुक्त करवाने और उन्हें उनके परिवार से मिलवाने में सफल रही है और स्कूल छोड़ चुके अनेक बच्चों को फिर से स्कूल में लाने में सफल रही हैं।

गाँव में अपने सामान्य घर के बाहर बैठी हुई, अनोयारा कहती है, कि वह एक ऐसे संसार का स्वप्न देखती है जहाँ सभी बच्चें अपने अधिकारों से परिचित हो और जानते हो कि उनके अधिकारों का उल्लंघन होने पर उन्हें सहायता के लिए किसके पास जाना चाहिए। ''मेरे लिए यह स्वप्न बहुत ही बड़ा है

मैं बेहतर तरीके से तस्करी किए जाने वाले बच्चों के दर्द को समझ सकती हूँ क्योंकि मैं भी उसकी शिकार रही हूँ।

अनोयारा खातून भारत के राष्ट्रपति प्रणाब मुखर्जी से नारी शक्ति पुरस्कार प्राप्त करती हुई।

अनोयारा, तस्करी के 200 से अधिक प्रयासों को विफल करने में सफल रही हैं, और 300 से अधिक बच्चों को मुक्त करवाने और उन्हें उनके परिवार से मिलवाने और स्कूल में लाने में सफल रही हैं।

अनोयारा (दायें ओर बैठी) न्यू यॉर्क के एक NGO ग्लोबल गोल्स के एक फुटबॉल अनुदान संचय समारोह में ।

क्योंकि मैं अपने कार्यो को अपने गाँव की सीमाओं के भीतर ही सीमित नहीं रखना नहीं चाहती हूँ। मैं इसे संपूर्ण विश्व में फैलाना चाहती हूँ। मेरे लिए अकेले इन सभी कार्यो को करना असंभव है क्योंकि मुझे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सैकड़ों हजारों बच्चों के मदद और सहयोग की आवश्यकता है।'' उसकी बाल समितियाँ गाँवों में सक्रिय है और प्रत्येक नए आगंतुक पर नजर रखती है। हर बार जब कोई नया आगंतुक गाँव में प्रवेश करता है, तो उसके गतिविधियों के बारे में खबर को सभी बाल-समूहों के मध्य प्रसारित किया जाता है, जो उस व्यक्ति की विशेष निगरानी करते हैं। किसी भी संदेहास्पद गतिविधि के बारे में ग्राम प्रधान को सूचित किया जाता है। ''इस प्रकार से, हमने सैकड़ों बच्चों की तस्करी को रोका हैं। किसी भी नए आगंतुक के हमारे कार्यकर्ताओं के सतर्क निगाहों से बचना कठिन हैं,'' वह गर्व की भावना से कहती हैं।

हालाँकि वह इस तथ्य को छिपाने का प्रयास करती है कि उसके गाँव की निर्धनता उसके कार्यो को चुनौतीपूर्ण बनाती है, ''हमें अक्सर परिवारों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है जो गरीबी के कारण अपने बच्चों को तस्करों के साथ भेजने को मजबूर होते है। उन तस्करों के चंगुल से बच्चों को बचाना अत्यंत कठिन हैं। ऐसे मामलों में, हम सरकार द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार के रोजगार की योजनाओं से जोड़ने का प्रयत्न करते हैं।''

उसके प्रखंड के बांग्लादेश की खुली सीमा के निकट होने से उसका कार्य और भी चुनौतिपूर्ण हो जाता है। ''संदेशखाली प्रखंड बांग्लादेश की सीमा से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह तस्करी के लिए अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र हैं। इस रूट के माध्यम से प्रतिवर्ष पश्चिम बंगाल और अन्य राज्यों में लड़कियों की तस्करी की जाती है। असंख्य धमकियों के बावजदू, हम तस्करों को पकड़ने और लड़कियों को बचाने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं। जब कभी के बच्चे को तस्करों के चंगुल से बचाया जाता है, तो हम एक भोज का आयोजन कर अपनी खुशी व्यक्त करते हैं।''

अनोयारा को उसके कार्यो के लिए अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। उसे वर्ष 2012 में अन्तराष्ट्रीय बाल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था, एक पुरस्कार जो अगले वर्ष मलाला को दिया गया। वर्ष 2013 में, उसने ब्रुसेल्स में आयोजित 'बचपन बचाओ' शैक्षणिक सम्मलेन में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। वर्ष 2014 में, पश्चिम बंगाल सरकार ने उसका सम्मान किया। एक अन्तराष्ट्रीय बाल-अधिकारी कार्यकर्ता के रूप में उसकी यात्रा अनेकों व्यवधानों और अड़चनों से भरी रही है। अनयोरा का जन्म 1996 में हुआ था और वह चार भाई-बहनों में सबसे छोटी है। जब वह केवल 5 वर्ष की थी तो उसके पिता का देहांत हो गया। उसकी माँ ने परिवार का पालन - पोषण करने के लिए एक स्कूल में रसोइये के रूप में काम करना शुरू किया परंतु जीवन फूलों की सेज नहीं थी। मात्र 12 वर्ष की आयु में, अनयोरा को एक घरेलू नौकर के रूप में तस्करी कर दिल्ली ले जाया गया जहाँ उसे जबर्दस्ती घरेलू काम करवाया जाने लगा। उसे घर वापस लौटने में एक वर्ष का समय लग गया।

वह मात्र 13 वर्ष की थी जब वह धगागिया सोशल वेलफेयर सोसाइटी द्वारा संचालित बहु-उद्देश्यी केंद्र के संपर्क में आई जो मानव तस्करी को रोकने के क्षेत्र में कार्यशील थी और उसने संस्था से जुड़ने का निश्चय किया। ''मैंने सोचा कि मैं बेहतर तरीके से तस्करी किए जाने वाले बच्चों के दर्द को समझ सकती हूँ क्योंकि मैं भी उसकी शिकार रही हूँ।''

परंतु ऐसा कहना बहुत आसान था परंतु करना उतना ही कठिन। उसे गाँववासियों की ओर से अनेकों प्रतिरोधों और दुर्वचनों का सामना करना पड़ा जो सोचते थे कि उसके प्रयासों के पीछे उसका कोई कुत्सित स्वार्थ छिपा है।

हालाँकि, अनोयारा अपने अतीत के बारे में बात नहीं करना चाहती है। ''अब वे दुखद दिन सुखद दिन में परिवर्तित हो चुका है। लोगों मेरी कार्यो के लिए मेरी प्रशंसा करते हैं और सारे संसार में मुझे ख्यति मिली हैं।'' जब मैंने उससे विवाह करने और अपना परिवार शुरू करने के बारे में पूछा तो उसने उत्तर दिया, ''बहुत अच्छा, मुझे इसके बारे में सूचने के बारे में कभी समय ही नहीं मिला।'' ■

सुपर एजर्स का उदय

भरत और शालन सवुर

एंटी-एजर्स को विदा कीजिये और सुपर-एजर्स का स्वागत कीजिये! यह आपके वर्ष, अनुभव, समझ, परख को सरलता पूर्वक, दमकते हुए एवं हंसते हुए लेने के बारे में है। सुपर-एजर्स प्यारे, स्वस्थ, चांदी जैसे बालों वाले वे लोग है जो अपने आसपास के वातावरण में खूबसूरती से घुल-मिल जाते है फिर भी अलग होते है क्योंकि वे उनके धैर्य, शांति एवं स्वीकृति में इतने संतुलित होते है कि वे ट्रैफिक के रुकने का इंतज़ार करते है या क्षितिज से आखिरी गाी के गायब होने का ताकि वे निश्चित क़दमों के साथ सक पार कर सके।

आप सभी के लिए मेरी प्रार्थना चाहे आपने 50 गर्मियाँ देखी हो या अनगिनत सर्दियाँ: चुस्त रहिये, स्वस्थ रहिये। अपने शरीर, दिमाग, आत्मा में सामंजस्य स्थापित होने दीजिये। एक सुपर-एजर बनिए। 79 वर्षीय स्तंभलेखक एवं टीवी प्रस्तुतकर्ता डॉक्टर मरियम स्टोपार्ड प्रेरित करती है: मेरे पूरे जीवन में, प्रत्येक दशक उसके पिछले दशक के मुकाबले बेहतर रहा है। जब *ध रियल मेरीगोल्ड होटल* की नयी बीबीसी1 श्रृंखला के लिए वृद्धजनों में से एक के रूप में यह जानने के लिए मैंने भारत की यात्रा की कि क्या वहाँ सेवा-निवृत्ति यूके से बेहतर है, मुझे समझ आया कि आपको यात्रा करने के लिए कितना चुस्त होना पता है।

प्रत्येक दशक पिछले दशक के मुकाबले बेहतर होने वाला है! यह विशाल है, जीवन के लिए यह उत्साह, इरादे का यह आलीशान कथन - प्रत्येक वर्ष को अधिक स्वस्थ, हर दशक को बेहतर बनाइये। बारिश आओ, धूप आओ, चुस्त हो जाआ और अधिक चुस्त। क्योंकि, मनोविज्ञान के विद्यार्थी एस्थर सुकिता और अश्विनी के. द्वारा किये गए एक अध्ययन के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के कारण तनाव, चिंता, अवसाद, अभिघात के बाद का तनाव विकार हो सकता है भले ही हमारी आयु कुछ भी हो।

अध्ययन ने मौसम के उतार-चाव को किसानों की आत्महत्या का एक बा कारण बताया है: कोई भी जलवायु परिवर्तन संबंधित आपदा सदमा पहुंचाएगी जिससे कि उनकी (किसानों की) सामान्य जीवन अवस्था प्रभावित होगी। इसके कारण अवसाद भी होता है जब वे सदमे का सामना नहीं कर पाते है, परिणामस्वरूप, उनका प्रदर्शन स्तर प्रभावित होता है। जब किसान नहीं जानते कि कैसे सामना किया जाये, तो वे आत्महत्या कर लेते है।

मौसम का सामना कीजिये

जलवायु परिवर्तन वरिष्ठ नागरिकों को भी प्रभावित करता है - दर्द, तकलीफों, अकन और कभी-कभी लगभग निःशक्तता द्वारा। और यह आघात अक्सर कम उत्साह, बेबसी और अवसाद की ओर ले जाता है। बेबसी उन भावनाओं की स्थितियों से जन्म लेती है जिनपर आपका कोई नियंत्रण नहीं होता। स्कूल में, हमें यह हौसला पैदा करने वाला गीत सिखाया गया था: "Whether the weather be hot/Or whether the weather be cold/ Whether the weather be fine/ Or whether the weather be not/We'll weather the weather/Whatever the weather/Whether we like it or not!"

यह इस समय का गान है। बेशक, हम जलवायु को नियंत्रित नहीं कर सकते। परन्तु हम इसका सामना कर सकते है इस बात से अवगत होकर कि जलवायु समय के साथ परिवर्तित होती है। अनजाने में इससे प्रभावित मत होइए, चौकन्ना रहिये, चुस्त रहिये, उन परिवर्तनों के लिए तैयार रहिये जो अचानक भी हो सकते है। जब ठण्ड पड़े तो गर्म कपड़ो के साथ, जब गर्मी पड़े तो पतले कपड़ो के साथ, नमी में सूखे पाउडर और तौलियों के साथ, शुष्क अवस्थाओं में पानी एवं क्रीम के साथ तैयार रहिये। तेजी से, उद्देश्यपूर्ण होकर, शक्तिशाली ढंग से एवं नियमित चलकर आप इसका सामना वस्तुतः शांत होकर कर सकते है। जब आप आगे बते है जिंदगी आसान हो जाती है। जैसा कि मेरी दादी अक्सर कहा करती थी, जब रक्त संचारित होता है, आनंद संचारित होता है। और जैसा कि एक चीनी कहावत नसीहत देती है: धीरे जाने से मत डरो, केवल ठहर जाने से डरो। अग्रसक्रिय बनिए। विचलित मत होइए, केवल जाग्रत होइए।

कैल्शियम लीजिये

उपचार की तरफ बढ़िये। रोज़ाना एक कैल्शियम टेबलेट लेकर दर्द का सामना कीजिये। और प्रत्येक दो सप्ताह में एक विटामिन ऊ३ की टेबलेट लीजिये। तीसरे दिन से, आप दर्द मुक्त होंगे। कृपया ध्यान दें - दर्द मनोदैहिक हो सकते है, महसूस होते है परन्तु उनके पीछे कोई शारीरिक कारण नहीं होता है। समझदारी नहीं कहती, ''आप बूढ़े है इसलिए यह दर्द देता है;'' यह प्रेरित करती है, ''मांसपेशियों की एंठन का शारीरिक-खिंचाव द्वारा समाधान कीजिये।'' यह फ़ुसफ़ुसाती है, ''दिमाग को इस रवैये के दर्द' से ऊपर उठने दीजिये।'' कोई चिकित्सीय तकनीक इसका पता नहीं लगा सकती है, फिर भी बेशक यह मौजूद है।

क्या आपने अपनी मुठ्ठी कभी इतनी ज़ोर से बाँधी है कि वह दर्द करने लगी हो? एक नकारात्मक रवैया बिल्कुल उसी प्रकार काम करता है - आपके शरीर में टीस उठती है जब आप एक अवधारणा को पक कर बैठ जाते है। यह आपके साथ हुए कोई कथित अन्याय का उकसाया हुआ असंतोष हो सकता है। यह

फलों, सब्जियों, हलके पकाए गए साबुत अनाजों - से सादा रखिये। टिप: खाने के बाद, एक छोटी चम्मच बिना भुना हुआ जीरा चबाइए - यह गैस, एसिडिटी, बैचैनी से बचाता है। मांस, पनीर, गोभी, सफ़ेद आटा, चिप्स, शक्कर से परहेज कीजिये या संयम से खाइए। ये पेट के लिए अच्छे नहीं होते है। ज्यादा पानी पीजिये। गाजर का रस भी अच्छा होता है - कभी-कभी हमारे शरीर की झिल्लियों द्वारा पानी से भी बेहतर अवशोषित होता है।

एक व्यायाम पेट साफ़ करने में प्रभावी ढंग से मदद करता है। एब्डोमिनल क्रंच आपके पेट की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है जिससे मांसपेशियां भोजन को अधिक ताकत से निचोती है और पोषक-तत्वों को पचाना और तो और मल निकालना आसान करती है। पोषित एवं स्वच्छ होकर आपका पुनर्जन्म होता है...सातवें आसमान पर!

दिमाग को ताज़ा कीजिये

आपके द्वारा रचित स्वस्थ जलवायु में दिमाग का भी पुनर्जन्म होता है। भावनाओं द्वारा शासित क्षेत्र चौ, युवा, लचीले रहते है, उम्र, नकारात्मकता, तिरस्कार से क्षीण हुए बिना। खूबसूरत शब्दों जैसे शान्ति, सद्भाव, स्थिरता, सौन्दर्य, अनुशासन, शांतचित्तता के माध्यम से इसे लगातार ताज़ा बनाइये। धूप में चलिए - महान सितारा सूरज आपके अंदर सुनहरी आशा भरता है। स्वयं को अकेलेपन में मत खोइए बल्कि प्यार में, सुनने में, सीखने में खोइए। आप वह व्यक्ति नहीं है जो आप हुआ करते थे क्योंकि अब आप कई अधिक है। स्वयं को शांत, पोषक क्षणों का उपहार दीजिये। एक नया अध्ययन सुझाव देता है कि पक्षियों को देखना एक उत्कृष्ट उपचारक दोपहर की गतिविधि है। जब आप पक्षियों की उान को उसकी सुन्दरता में देखें, हवा में कुशलतापूर्वक गोते लगाना, हवा में पंखों का लहराना, तो अपने अंदर से सारे तनाव को बाहर बहता हुआ देखिये...जैसा ब्रायंट मेकग्रिल कहते है, ''आप इस दुनिया में बने के लिए आते है और खोजने के लिए और जीवन के चमत्कारों एवं आश्चर्यो को छूने के लिए। जैसे धरती फूलों में हंसती है, वैसे ही आकाश पक्षियों में मुस्कुराता है।'' स्वयं को हर्ष से सराबोर होने दीजिये क्योंकि प्रकृति आपके लिए उसकी सबसे पसंदीदा कवितायेँ रचती है।

गुस्सा हो सकता है जो आपको आपके जीवन में हर सही चीज़ के प्रति अंधा कर सकता है। यह ईर्ष्या हो सकती है, एक एसिड जो दूसरों की सफलता में खुश होने की आपकी प्राकृतिक प्रवृत्ति को संक्षारित कर रहा हो। ये भयावह नकारात्मक भावनाएं बहुत गहरी होती है और मांसपेशी, हड्डी, जो, नस, पेट को जलाती है।

खाली करके पुनः भरिये

फिर से, जब आप परिचित भावना एवं तनाव को अपने अंदर बनता देख महसूस करते है तो बेबस महसूस मत कीजिये। आपके पास तनाव को निष्प्रभावित करने की शक्ति है। यह एक सरल प्रक्रिया है। आप इसे वहीं कर सकते है जहाँ आप है: अपनी आँखें धीरे से बंद कीजिये और कल्पना कीजिये कि तनाव देने वाले सभी अस्वास्थ्यकर विचार अंगूठों एवं उँगलियों के माध्यम से आपके शरीर से बाहर बह रहे है, आपको खाली एवं स्वच्छ छोते हुए।

खाली करने की प्रक्रिया के बाद एक पुनः भरपाई की प्रक्रिया कीजिये। शांतचित्तता, सम्पूर्णता, शान्ति, सुन्दरता जैसे विचारों को अपने शरीर के अंदर भरते हुए एवं अपने पूरे शरीर में उन्हें प्रसारित होते हुए की कल्पना कीजिये। यह ऐसा है जैसे शीतल, शीशे की तरह स्वच्छ पानी मांसपेशी एवं हड्डी को सान रहा हो, जोों एवं पेट को साफ़ कर रहा हो, नसों को आराम पहुँचा रहा हो एवं उनका उपचार कर रहा हो, आपको पूर्ण रूप से तनाव मुक्त एवं आश्वस्त करते हुए। जब तनाव दिमाग से बाहर निकल जाता है तो वह शरीर से बाहर निकल जाता है। आपके द्वारा रचित इस सुन्दर आतंरिक वातावरण में आपका प्रतिरक्षी तंत्र मजबूत होता है। आपको अच्छी नींद आती है और आप जीवन के प्रति आशावान महसूस करते है।

जोशीला' सेरोटोनिन। खाली एवं पुनःभरण की प्रक्रिया को पेट के अंदर भी करना चाहिए। एक डॉक्टर ने मुझे बताया की शरीर का 95 प्रतिशत सेरोटोनिन - एक हॉर्मोन जो हमारे अंदर शान्ति एवं स्थिरता भरता है - हमारे पेट में होता है। फलस्वरूप, जितना अधिक साफ़ पेट होगा, उतने ही अधिक प्रसन्न एवं अधिक चिंता-मुक्त हम होंगे क्योंकि सेरोटोनिन के पास उसका जादू दिखाने के लिए जगह होगी। रहस्य यह है कि आपके आहार को रेशों से भरपूर भोजन - छिले हुए

लेखक 'फिटनेस फॉर लाइफ' किताब के लेखक है एवं फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।

रोट्रैक्ट क्लब ऑफ़ रिवर्स - मंडल 2981

रोटरी क्लब पांडिचेरी द्वारा प्रायोजित क्लब ने 20-वर्षीय कैंसर-रोगी कोकिला को एक व्हील-चेयर दान में दिया, जिसका उपचार JIPMER, स्थानीय कैंसर सेंटर में किया जा रहा है। लगभग प्रतिदिन रोट्रैक्ट्स कोकिला के साथ अस्पताल परिसर में कुछ चक्कर लगा कर उसकी देखभाल करते है, इससे उसके चेहरे पर खुशी झलकने लगती है।

रोटरी क्लब सलेम यंग टाउन - मंडल 2982

WinS परियोजना के एक भाग के रूप में रू 50,000 की लागत से एक शौचालय ब्लॉक की स्थापना शिवधामपुरम के एक सरकारी स्कूल में की गई। मंडल गवर्नर टी शंमुगाससुंदरम ने स्कूल में नए सेनेटरी फैसिलिटी का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब विजयवाड़ा - मंडल 3020

'स्वच्छ विद्यालय - स्कूल में WASH' के अंतर्गत 10,000 से अधिक बच्चों ने सामूहिक चित्रकारी प्रतियोगियता में भाग लिया। इस कार्यक्रम ने संपूर्ण देश में स्कूल के बच्चों के लिए आयोजित सबसे विशाल राष्ट्रीय प्रतियोगियता का रिकॉर्ड बनाया और उसे इंडियन बुक ऑफ़ रिकार्ड्स में शामिल किया गया।

रोटरी क्लब कोटा - मंडल 3052

रोटरी क्लब इंदौर अपटाउन, मंडल 3040, के सहयोग से क्लब ने एक कृत्रिम हाथ-पैर फिटमेंट कैंप का आयोजन किया, जिसमें समुदाय के शारीरिक रूप से विकलांग लोगों को LN-4 प्रोस्थेटिक बाँह उपलब्ध कराया गया।

विधियाँ

रोटरी क्लब बीकानेर - मंडल 3053

क्लब ने एक नेत्र जाँच और लेंस प्रत्यारोपण कैंप का आयोजन उदरामसर और बीकानेर में किया जिसमें लगभग विभिन्न आयु-वर्ग के 200 मरीजों की जाँच की गई और उन्हें प्राथमिक उपचार के बाद मुफ्त में दवाएँ उपलब्ध कराई गई। बीस मरीजों के मोतियाबिंद की शल्यचिकित्सा आचार्य श्री नानेश रोटरी नेत्र चिकित्सालय में की गई।

रोटरी क्लब सूरत - मंडल 3060

सूरत के नजदीक पोंसरा ग्राम में एक सरकारी स्कूल में बालिकाओं के लिए हैंड्वॉश स्टेशन और एक शौचालय ब्लॉक उपलब्ध कराया गया। सेनेटरी फैसिलिटी से छात्रों के मध्य सर्वश्रेष्ठ स्वच्छता आदतों को बढ़ावा देने की अपेक्षा की गई।

रोटरी क्लब रूपनगर - मंडल 3080

लगभग 200 बच्चों ने यक्ष्मा के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए एक रैली में भाग लिया। विभिन्न स्कूलों के स्थानीय रोट्रैक्टर्स की भागीदारी से आयोजित रैली को झऊन्वि डॉ आर एस परमार और चेतन अग्रवाल द्वारा झंडा दिखाकर रवाना किया गया। प्रतिभागियों ने नारे लगाएं और टीबी से बचाव के लिए प्लाकार्ड्स को प्रदर्शित किया।

रोटरी क्लब फरीदकोट - मंडल 3090

सुरेंद्र डेंटल कॉलेज, श्री गंगानगर के सहयोग से एक दंत जाँच शिविर का आयोजन फरीदकोट में एमजीएम सीनियर सेकेंडरी स्कूल किया गया, जिसमें 113 मरीजों के मुख के स्वास्थ्य की जाँच और उपचार किया गया।

रोटरी क्लब जम्मु सिटी - मंडल 3070

जिगर पुनर्वास संगठन, गंगयाल के विकलांग सदस्यों को क्लब द्वारा व्हीलचेयर उपलब्ध कराया गया, और उन्होंने क्षेत्र में विकलांगों के पुनर्वास लोगों के लिए हर संभव सहायता उपलब्ध कराने का वादा किया।

मंडल गति

रोटरी क्लब वृंदावन - मंडल 3110

रोटेरियन ललित अरोड़ा ने अपना जन्मदिन रू51,000 कल्याणं करोति श्रीजी बाबा, मथुरा को दान देते हुए मानाया, जिसका उपयोग 51 निर्धन लोगों के मोतियाबिंद की शल्यचिकित्सा के लिए किया जाएगा। क्लब अध्यक्ष डॉ यदुराज सिंह यादव, ने साथी रोटरियनों के साथ, मरीजों के मध्य नमकीन खाद्य पदार्थों का वितरण किया।

रोटरी क्लब पुणे सहवास - मंडल 3131

रोटरी क्लब चाग्रिन वैली, USA और TRF के सहयोग से एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से 27-सीटों वाला एक वैन आधार मंडल स्कूल को बधिर और मूक छात्रों के परिवहन के लिए उपलब्ध कराया गया। इसके अतिरिक्त, क्लब बे 12 कंप्यूटर, 100 हियरिंग ऐड्स उपलब्ध कराया और स्कूल में लिंग-विशेष के लिए शौचालयों का निर्माण किया। डी जी प्रशांत देशमुख उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित थे।

रोटरी क्लब मुंबई ग्रीनसिटी - मंडल 3141

क्लब ने ओजस आई अस्पताल, बांद्रा और रोटरी आई केयर सेंटर, मलाड, के सहयोग से एक नेत्र जाँच-शिविर का आयोजन किया, जहाँ 230 लोगों की जाँच की गई। एक मधुमेह शिविर का आयोजन जुहू में SNDT वीमेन यूनिवर्सिटी के परिसर में स्थित सभी नौ कॉलेज के कर्मचारियों के लाभ के लिए किया गया।

रोटरी क्लब ठाणे अपटाउन मंडल 3142

सोनगांव विलेज, मुरबाद तालुक के जिला परिषद स्कूल में एक हैप्पी स्कूल परियोजना को कार्यान्वित किया गया। 40 बच्चों वाले स्कूल में ओवरहेड टैंक के साथ दो शौचालयों, एक बोरवेल, वॉटर प्यूरीफायर की स्थापना की गई और इंडोर तथा आउटडोर गेम्स के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई, बच्चों के लिए फूटवियर, पुस्तकालय में किताबें और आलमारी भी उपलब्ध कराया गया। इसके अतिरिक्त स्कूल के परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया।

रोटरी क्लब निज़ामाबाद - मंडल 3150

रोटरी इंटरनेशनल के संस्थापक पॉल हेरिस के जन्मदिन के उपलक्ष्य में सरकारी स्कूलों के छात्रों के मध्य नोटबुक्स और स्टेशनरी का वितरण किया गया। क्लब बच्चों को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध कराने में शामिल है।

विधियाँ

रोटरी क्लब गुलबर्गा मिडटाउन - मंडल 3160

गुलबर्गा में क्लब में आयोजित नेत्र और दंत जाँच शिविरों में लगभग 540 मरीजों की जाँच की गई। शहर में भोरुका अस्पताल में 20 मरीजों के मोतियाबिंद का उपचार किया गया।

रोटरी क्लब इरोड - मंडल 3202

WinS परियोजना के एक भाग के रूप में, 23 सरकारी स्कूलों में 23 हैंड वॉश स्टेशन स्थापित किया गया ताकि छात्रों में सर्वश्रेष्ठ स्वच्छता की आदतों को बढ़ावा दिया जा सके। मुख्य शिक्षा अधिकारी पी अय्यांनन उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य अतिथि थे और इस अवसर पर भूतपूर्व, वर्तमान और भविष्य के मंडल गवर्नर उपस्थित थे।

रोटरी क्लब सिलचर - मंडल 3240

विंस आउटरीच के एक भाग के रूप में, दो वॉश स्टेशन का निर्माण टिकरबस्ती लोअर प्राइमरी स्कूल और श्री रामकृष्ण पाठशाला में छात्रों के लाभ के लिए किया गया जिन्हें इस अवसर पर सर्वश्रेष्ठ स्वच्छता आदतों के बारे में सिखलाया गया।

रोटरी क्लब समस्तीपुर सिटी - मंडल 3250

छात्रों, स्थानीय प्रतिनिधित्वों, शिक्षकों, और एनजीओं कार्यकर्ताओं के मध्य एक संवादात्मक सत्र के माध्यम से क्लब ने विश्व टीबी दिवस मनाया, जिसके दौरान इस बीमारी के उत्पन्न होने और उसके रोकथाम से संबंधित उपायों पर चर्चा की गई। स्थानीय लोगों के मध्य जागरूकता का निर्माण करने के लिए छात्रों द्वारा एक रैली का भी आयोजन किया गया।

रोटरी क्लब कलकत्ता मिडसाउथ - मंडल 3291

क्लब ने पुरुलिया मंडल के सुदूर ग्राम में स्थित भगत बारी प्राइमरी स्कूल में 20 डेस्क और बेंच सेट उपलब्ध कराया । हैप्पी स्कूल परियोजना के एक भाग के रूप में रू 21,500 की लागत से क्लब ने इन सुविधाओं को उपलब्ध कराया।

वी मुथुकुमारण द्वारा संकलित;
एल गुनाशेकरण द्वारा रूपरेखा

Subscribe NOW!

Annual Subscription India

Rs.420

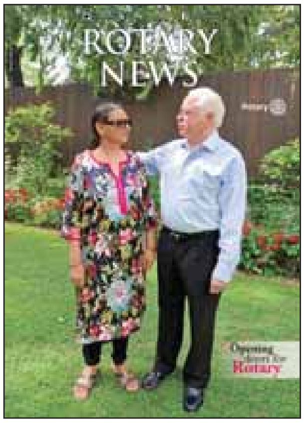

for Rotary News Print Version & e- Version

For the Rotary year 2017 – 2018

As concerned citizens of the world, those of you who are alarmed at the degradation of the environment and slaughter of trees, kindly opt for our e-Version.

Print version ☐ e- Version ☐

	No. of copies
Rotary News (English)	
Rotary Samachar (Hindi)	

For every new member the pro-rata is Rs 35 a month.

Please attach the TYPED list of individual members with their complete address and PIN Code. Intimate language preference (English / Hindi) against each member's name. Please do not send the Semi-annual Report for address list.

Rotary Club of .... RI District ....

Name of the President/Secretary ....

Address ....

....

....

City .... State .... PIN ☐☐☐☐☐☐

STD Code .... Phone: Off. .... Res. ....

Mobile ....E-mail ....

Cheque/DD No. .... Dated .... for Rs. ....

Drawn on ....

in favour of "**ROTARY NEWS TRUST**" payable at CHENNAI is enclosed.

Date: President/Secretary

Mail this form to:
Rotary News Trust, Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008.
Tamil Nadu, India. Ph: 044 4214 5666, e-mail: rotarynews@rosaonline.org

संक्षेप में

लड्डुओं का स्थान ब्राउनी ने लिया

क्या आपने कभी मंदिर में पसाद के रूप में ब्राउनी, बर्गर या सैंडविच प्राप्त करने के बारे में सोचा हैं? चेन्नई के बाहरी क्षेत्र पदाप्पाई में स्थित जया दुर्गा पीतम मंदिर में इस तरह का प्रसाद जैसे ब्राउनी, वेजिटेबल कटलेट, चेरी टोमेटो सलाद चढ़ाया जाता है, जो FSSAI द्वारा अभिप्रमाणित होता है और जिस पर एक्सपायरी डेट प्रिंट होता है। श्रद्धालु वेंडिंग में एक टोकन प्रविष्ट कर अपना 'प्रेट-ए-प्रसादम' प्राप्त कर सकते है, जिसे मंदिर के ऑटोमेटेड रसोईघर में तैयार किया जाता है। इसके अतिरिक्त वहाँ श्रद्धालुओं के लिए 'बर्थडे प्रसादम' भी उपलब्ध है।

काँच के ट्रेन में पहली यात्रा

पूर्ण रूप से काँच से निर्मित यह विलासितापूर्ण ट्रेन - शिकी-सीमा को हाल ही में जापान में लांच किया गया और यह ट्रेन अपने शानदार इंटीरियर और विशाल खिड़कियों के साथ यात्रा-प्रेमी यात्रियों को आनंदित करने के लिए तैयार है। इस ट्रेन से बाहर का नजारा बिल्कुल साफ-साफ़ देखा जा सकता है जो छुट्टियाँ मनाने वाले यात्रियों को यात्रा अद्वितीय रोमांच प्रदान करता है। प्राइवेट सुइट, ऑब्जरवेशन प्लेटफॉर्म्स, बार्स और लजीज पकवान परोसने वाले रेस्टोरेंट के साथ, जहाँ तक ट्रेन यात्रा का प्रश्न है इस ट्रेन को विलासिता का चरमोत्कर्ष कहा जाए, तो जरा भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। दो डिब्बें वाले ट्रेन में कुल 45 सीट है,जिसमें से एक डिब्बे में फ्रेंच रेस्टोरेंट स्थित है। एिक टिकट जिसमें भोजन व्यय भी शामिल है, उसकी कीमत 100 पौंड है, जबकि बिना भोजन के यात्रा के टिकट की कीमत 40 पौंड है।

सीईओ की बैठक समुद्र के नीचे आयोजित किया गया

ग्लोबल वर्मिंग और समुद्रीय प्रदूषण की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करने के लिए, 5 सीईओ ने केरल के कोवलम में ग्रोव समुद्र तट से 150 मीटर दूर एक अंडरवॉटर मीटिंग 'Ocean Love' भारत में पहेली बार, आयोजित की। वे नीचे पाँच मीटर की गहराई तक गए, और समुद्र और समुद्री जीवन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की। परंतु अंडरवॉटर जो दृश्य था, वह बहुत सुंदर और मनोरम नहीं था, उन्हें मूंगा या मछलियाँ देखने को नहीं मिला, इसके बजाय वहाँ केवल प्लास्टिक के बोतल और समुद्री कचडों का अंबार देखने को मिला।

कुत्तों के लिए एक कैफ़े

नई दिल्ली के अपम र्केट शाहपुर जाट में स्थित पप्पीचिनो कैफ़े कुत्तों और पिल्लों को समर्पित है। जन्मदिन मनाने से लेकर अपने कुत्ते के साथ भोजन साझा करने के लिए, पप्पीचिनो आदर्श स्थान है। शहर के इस प्रथम कुत्तों के कैफ़े में, स्थान को दो खंडों में विभाजित किया गया है: भोजन करने का स्थान तथा खेलने का स्थान। कुत्तों के लिए विशिष्ट व्यंजनों में मजेदार पकवान जैसे स्नूपी स्पघेटी, टूथसम पैनकेक्स और यहाँ तक कि कुत्तों के लिए बियर भी शामिल है, जिसका निर्माण चिकेन और मोल्स से किया जाता है। कुत्तों को कही भी खाने की अनुमति है, यहाँ तक कि वे अपने मालिक के साथ टेबल को साझा कर सकते है, यदि वे ऐसा करना चाहते है। इसके अतिरिक्त, आवश्यकतानुसार यह कैफ़े एक दिन रहने के लिए सुविधा बी उपलब्ध कराता है।

जींस प्राकृतिक हो गया

डेनिम जींस भारतीय ग्रीष्म ऋतु के लिए आदर्श परिधान नहीं रहा है। परंतु केले के रेशे से तैयार जींस के बारे में आपका क्या ख्याल है। सी सेकर, चेन्नई के रहने वाले एक बुनकर ने केले के रेशे से जींस और स्कर्ट का निर्माण किया है जिसका स्टाइल क्लासिक नीले रंग का परंतु जो पसीने को सूखने में भी मदद करता है। रेशों को प्राकृतिक रंगों से रंगा जाता है और इसकी सिलाई नारियल के कवच से तैयार किए गए बटन के साथ की जाती है और इस प्रकार यह डेनिम जींस में धातु के रिवेट और जिप का स्थान ग्रहण करता है। एक जोड़ी जींस की कीमत लगभग रू 5,000 है।

के. टी पी. राधिका द्वारा संकलित; एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

REGN. NO. TN/CCN/359/2015-2017 LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT NO.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2015-2017
REGISTERED WITH REGISTRAR OF NEWS PAPERS FOR INDIA TNHIN/2001/5271 ROTARY SAMACHAR PUBLISHED ON 1ST OF EVERY MONTH